समाज दर्शन

अर्थात

सामाजिक कुरीतियों का दिग्दर्शन

(स्त्री जाति के लिए एक अनुपम ग्रंथ)

सम्पादक—

रामरख सिंह सहगल

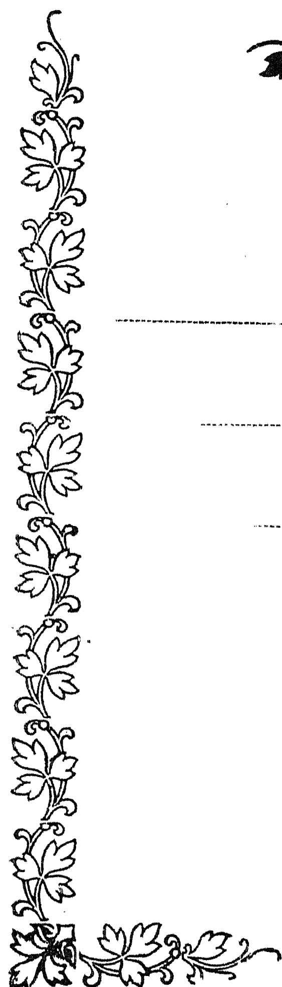
प्रकाशक—

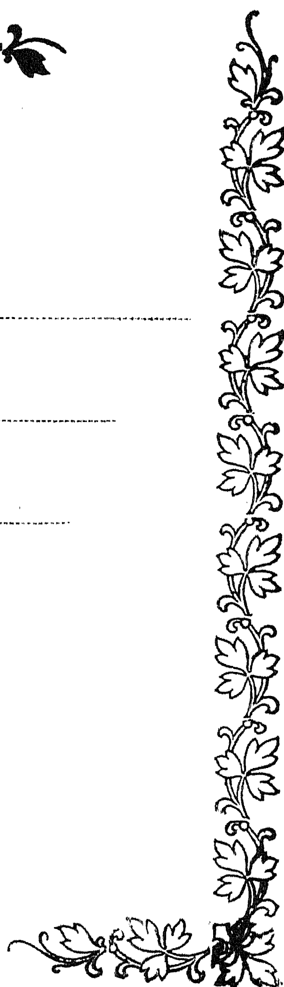
"चाँद" कार्यालय,

इलाहाबाद ।

पहिली वार] अप्रैल १९२२ [मूल्य सवा रुपया

उपहार





समर्पण

—:o:—

कन्या महाविद्यालय, जालन्धर की एक अमूल्य रत्न,

स्वर्गीय लाला गङ्गारामजी, वकील हाईकोर्ट और

म्यूनिसिपल कमिश्नर की सुयोग कन्या

श्रीमती विद्यावती सहगल

के कर कमलों में यह

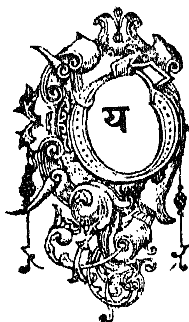
प्रेमोपहार सादर

समर्पित ।

—सम्पादक

विषय सूची

सम्पादक का वक्तव्य



ह एक मानी हुई बात है कि जब तक कोई जाति अज्ञान रहती है अथवा उसे अपने पतन का ख़्याल नहीं होता तब संसार भर की कुरीतिएं उस जाति अथवा राष्ट्र के लोप करने में अग्रसर होती हैं । और बात भी ठीक ही है ।

सभ्यता की डींग मारेन वाले और संसार को आज दिन पाठ पढ़ाने वाले इङ्गलैण्ड में भी अट्ठारहवीं शताब्दी के शुरू तक सामाजिक कुरीतिएँ इस बुरी तरह प्रचलित थीं जैसी आज भारत में हैं। वहां भी छोटी अवस्था में शादिएं हुआ करती थीं, स्त्रियों को वे भी पैर की जूती समझा करते थे, व्यभिचार की भी कमी न थी, कहने का सारांश यह कि ऐसी कोई भी कुरीतिएं न थीं जो उस समय इङ्गलैण्ड के चप्पे चप्पे भूमि पर न पाई जाती हों। पर आज वहां यह सब बातें स्वप्न तुल्य मालूम होती हैं। वही इङ्गलैण्ड सारे संसार को सभ्यता सिखा रहा है। उसके प्रताप के सूर्य्य पर आज आखें नहीं ठहरतीं। पर यह उन्नति हुइ कैसे? उत्तर स्पष्ट ही है कि "सामाजिक सुधारों" से। पहिले मनुष्य घर में दिया बाल कर तब मसजिद और मन्दिर में दिया बालता है "Charity begins at home."

घर का सुधार किए बिना कोई भी कुछ नहीं कर सकता। जिसकी घर में इज़्ज़त होती है उसकी बाहर भी। यह सामाजिक सुधारों ही का फल है कि आज इङ्गलैण्ड उन्नति के शिखर

तक पहुंच चुका है और सामाजिक कुरीतियों ही का यह फल है जो भारत को इस बुरी तरह लथेड़ रहा है।

इतिहास जानने वालों से यह बात छिपी न होगी कि भारत के पतन का "श्रीगणेश" महाभारत के युद्ध के बाद ही आरम्भ हुआ है पर आज हज़ारों वर्षों के बीत जाने पर भी भारत वासियों के कान पर जूं तक न रेंगी। वे तो क़सम खा चुके हैं कि बस वही करेंगे जो उनके पुरखे करते आए हैं। उसी लकीर को पीटेंगे जो अब तक पिटती आई है। अपनी बुद्धि और विवेक से काम लेना उनके धर्म्म ग्रन्थों में ही नहीं लिखा है।

हमारे पण्डित, परोहित और पाधा आर्य्य पवित्रता की ऐसी लम्बी चौड़ी डींगे हाकतें हैं कि सुनकर जी जल जाता है। वे शास्त्रों और मन गढ़न्त धर्म्म ग्रन्थों की दोहाई देकर संकीर्ण, भयङ्कर और गन्दे घेरे के अन्दर हमें रखना ही अपना धर्म्म समझ बैठे हैं। वे अन्ध-परम्परा के चक्कर में स्वयं भी पड़े हैं और साथ ही हमें भी डुबा रहे हैं। सारांश यह कि हम लोग अपने बुद्धि और ज्ञान के होते हुए भी उनके हाथों की कठपुतली बने हुए हैं।

धर्म्म ग्रन्थों की रचना हमारे लिए होती है न कि हमारा जन्म धर्म्म ग्रन्थों के लए ? हमारे कहने का सारांश यह कि वे धर्म्म ग्रंथ जिनकी रचना हज़ारों वर्ष पहिले हो चुकी हैं वे ही आज दिन काम में आ रहे हैं। पर जिस प्रकार संसार की कुल बातें बदलती रहती हैं ठीक उसी प्रकार धर्म्म (सामाजिक) भी समय समय पर बदला करते है। परिवर्तन और वृद्धि प्रकृति की दो बड़ी शक्तिएं हैं और संसार की समस्त हलचलें इन्हीं के द्वारा हुआ करती

है। हमारे कहने का सारांश यह कि कोई भी एक धर्म्म अनन्त काल के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। जिस प्राचीन धर्म्म के सहारे हम आज चल रहे हैं वह सम्भव है, उस काल में जब उसकी रचना हुई हो, लाभदायक सिद्ध हुआ हो पर इस समय तो, डरते डरते कहना ही पड़ता है, बहुत सी बातों में वह हानकारी सिद्ध होता है और बात भी ठीक ही है। धर्म्म ग्रंथों की रचना भी समय समय पर, आवश्यकता के लिहाज़ से होती आई है जैसा कि आगे कहा जावेगा। इन बातों का नतीजा यह निकलता है कि कोई भी एक धर्म्म अनन्त काल के लिए पर्य्याप्त नहीं हो सकता परन्तु सारे धर्म्म समाज तथा सभ्यता के उत्कर्ष और व्यक्ति की उन्नति के अनुसार परिवर्तन हुआ करते हैं। पर भारतवासी इस तर्क को नहीं मानते। उनका "धर्म्म" तो केवल पुरानी लकीरों को पीटना है। यदि उनके पिता ने शादी में २०००) रु० 'दहेज' में लिए थे तो वे उससे एक पैसा भी कम नहीं कर सकते और कन्या के पिता ने यदि पहिली लड़की के विवाह में १०००) रु० ही दहेज के स्वरूप में दिए हैं ता दूसरी लड़की के विवाह में वह एक कौड़ी भी इससे ज़्यादा देना स्वीकार न करेगा। चाहे लड़की को आयू पर्य्यन्त अविवाहित ही रहना पड़े क्योंकि उनके यहां हमेशा से एसा होता आया है। यही भारतवासियों का धर्म्म है।

प्रत्येक धर्म्म, रीति और रिवाज प्रायः अनेक कारणों के परिणाम हुआ करते हैं। प्रत्येक धर्म्म अथवा कोई भी रिवाज उस धर्म्म अथवा रिवाज के जन्मदाता के अपने सिद्धान्त मात्र होते हैं। जो संसारिक और अध्यातमिक सिद्धान्त या निश्चय महात्मा बौद्ध के थे वे ही बौद्ध धर्म्म के सिद्धान्त कहलाते हैं। मुहम्मद साहब का जो कुछ अपना "यक़ीन" था वही मुसलमानों

का ईमान है। स्वामी दयानन्द के जो अपने ज़ाती अनुभव थे और उन्हें मथकर जो सिद्धान्त उन्होंने निकाले थे, प्रत्येक आर्य समाजी के लिए वही मन्तव्य है। इन सब बातों से पाठकों को यह समझने में सुविधा हुई होगी कि प्रत्येक धर्म्म एक व्यक्ति विशेष के निजी (उसके अपने) सिद्धान्त मात्र हैं। पर वे सिद्धान्त परिवर्तन शील हैं। समय समय पर बदला करते हैं इसी को अंग्रेज़ी में (Evolution) कहते हैं। और यहीं हमारी बुद्धि चक्कर में पड़ जाती है और हम निरुपाय होकर आज भी उन्हीं सिद्धन्तों पर चलने को वाध्य किए जाते हैं जिन पर हमारे पुरखे चले आए हैं। इससे पाठक यह न समझें कि हम अपने पूर्वजों को मूर्ख समझते हैं। हमारे निगाह में उनकी उतनी ही इज़्ज़त है जितनी एक आज्ञाकारी पुत्र की अपने पिता में, हमारे हृदय में उनका उतना ही मान है जिस प्रकार जनता की निगाह में महात्मा गांधी का। हमें तो केवल सिद्ध यह करना है कि जो बात आज हितकर है समय पाकर उसी से भारी हानि की सम्भावना हो जाती है। उदाहरण के लिए आप बाल विवाह ही को ले लें!

आज दिन हम आठ वर्ष की अवोध कन्या का विवाह केवल इस दलील को ही सामने रखकर करते हैं कि हमारे बाप दादे सदा से ऐसा ही करते आए हैं। कितनी थोथी दलील है?

भाई! वह समय और था और अब समय और है, वह समय अब नहीं रहा। वह सदैव बदला करता है यह प्रकृति का अकाट्य नियम है।

जिस समय भारतवर्ष में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और अधिकार के भाव प्रबल नहीं हुए थे, जिस समय शक्ति शाली और अत्याचारी शासक या प्रभावशाली धनी की ही इच्छा सर्वोच्च

होती थी । लोग अपने मान की रक्षा स्वयं करने में असमर्थ थे अतः उस समय बालिकाओं का छोटी अवस्था में विवाह कर देना केवल बुद्धिमानी ही नहीं बल्कि उनका कर्तव्य था। जिस समय रात दिन युद्ध हुआ करते थे। कन्याओं के पिता स्वयं युद्ध में भाग लिया करते थे उस समय अपने अतिरिक्त कन्या का विवाह द्वारा एक और संरक्षक ढूढ़ देना बड़ी बुद्धिमानी थी । इसका मतलब यह था कि पिता के मरने पर वे अनाथा न हो जावें और अपनी सुसराल की शरण ले सकें। मुसलमानों के शासन काल में तो वे छोटी अवस्था में विवाह कर देने को बेतरह वाध्य इस लिए थे कि क्वांरी कन्याओं के शत्रु रात दिन उन पर आक्रकण किया करते थे और वे वलात्कार उनका सतीत्व नष्ट करते थे इस बात का साक्षी भारतवर्ष का इतिहास है । कन्याओं के पिता प्रायः लड़कियों के हाथ में अक्सर नीले गोदने* गुदवा दिया करते थे। वह इस लिए कि मुसलमानों के धर्म्म ग्रन्थों में यह "हराम" है। जिस स्त्री के शरीर में कहीं भी गुदना गुदा हो वह मुसलमानों के लिए "सूअर" के समान है।

उस समय लोगों को इन भारी मुसीबतों और कठिनाइओं का सामना करना पड़ता था इन्हीं सब बातों को सोच कर उनका विवाह संस्कार छोटी अवस्था में ही कर दिया जाता था पर चूंकि भारतवासी जब तक किसी बात को धर्म्म के बाने में नहीं देख लेते उनकी अच्छा उसपर कदापि नहीं होती और न वे उसे करना स्वीकार ही करते हैं। यही कारण था कि

---

* अब आप इसी प्रथा को ले लें। आज वह समय नहीं रहा पर गुदना गुदवाना आज कल 'फ़ैशन' समझा जाता है।

उस समय नए नए धर्म्म ग्रन्थों की रचना की गई और उन्हें दिखलाया गया कि यही धार्मिक आज्ञा है, ताकि वे छोटी कन्याओं की शादी करदें और कुल में कलंक न लगने पावे। किन्तु आज जब व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के भाव उन्नत हो चुके हैं। लोगों के मान मर्य्यादा के रक्षा का पूरा प्रबन्ध है, जब शक्तिशाली और अत्याचारी धनी की इच्छा सर्वोच्च नहीं है। यदि यही सब बातें आप किसी "कट्टर हिन्दू" के सामने कहें तो वह कहेगा कि "तुम आर्या हो गए हो बड़े बूढ़े क्या मूर्ख थे जो सदा से ऐसा करते आए हैं" बस इसी भेड़चाल को भारतवासी अपना धर्म्म समझते हैं।

आपको यह जानकर आश्चार्य्य होगा कि हमारे यहां विवाहित बालिकाओं की संख्या हौलेण्ड Holland की जन संख्या से दूनी और कैनाडा (Canada) की संख्या से चौगुनी है। बालिका विधवाओं की संख्या यूनान (Greece) की जन संख्या के बराबर है। योरप में १५ वर्ष के पहिले विवाह होता ही नहीं। वहां इस आयु के विहाहित पुरुष या स्त्री एक भी नहीं हैं ' यौरप में ४० वर्ष के भीतर की आयु की विधवा सम्पूर्ण विधवा संख्या में प्रति सैंकड़ा ७ और भारतवर्ष में प्रति सैंकड़ा २८ हैं!

भारत में इस समय लगभग तीन करोड़ हमारी विधवा बहिने कूड़े कर्कट मी तरह मारी फिर रही हैं। न तो उनके शिक्षा का ही कोई प्रबन्ध है और न उनके पुर्नविवाह का।

पाठकगण विधवा विवाह के नाम से चौंकेंगे और कहेंगे कि परम्परा में ऐसा कहीं भी नहीं हुआ था। न उनके बड़े बूढ़ों ने कभी ऐसा किया। पर अन्य कुरीतियों के साथ ही यह भी हमारा खासा दोष है कि हम बिना समझे बूझे ही ऐसी लचर

दलीलें पेश करते हैं। हम इस बात को दावे के साथ सिद्ध कर सकते हैं कि प्राचीन काल में विधवा विवाह की प्रथा थी और अवश्य थी। बहुत से आपके वह धार्मिक ग्रंथ, इस बात के प्रमाण सबूत में, हम पेश कर सकते है जिन पर आपकी अकाट्य भक्ति और श्रद्धा है।

महाराज नल के समय (बीरसेन के शासन काल में) यह प्रथा प्रचालित थी। महाऋषि बेदव्यास ने सती दमयन्ती के द्वितीय स्वयम्बर का वर्णन किया है। इस बात का साक्षी महाभारत का इतिहास है। हम इस बात को मानते हैं कि देवी दमयन्ती का विचार केवल महाराज नल को प्राप्त करना ही था परन्तु यदि यह प्रथा प्रचलित न होती तो दमयन्ती कभी भी स्वयम्बर के द्वारा पति प्राप्ति का उपाय न सोचती और अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के जाने का हेतु स्पष्ट तौर से बतलाता है कि पहिले यह प्रथा प्रचलित थी और विधवाएं भी पुर्नविववाह करने में समर्थ हो सकती थीं।

स्मृतिकारों ने भी विधवा विवाह की आज्ञा दी है। रावण का भाई विभीषण भी तो एक उच्च कुल का ब्राह्मण था। उसने विधवा मन्दोदरी से पुर्नविवाह क्यों किया? यदि उस समय यह प्रथा प्रचलित न होती तो क्या उस पवित्र युग में हाय तोबा न मच जाती?

बालि के मरने पर उसके छोटे भाई सुग्रीव ने भी तो अपने भाई की विधवा पत्नी तारा को अपनाया था। पर जाने दीजिए वह तो बन्दर था। आज कल के विद्वान् और दिग्गज पण्डितों की सी बुद्धि उसमें थोड़े ही थी नहीं तो

वह कदापि ऐसा न करता। पर हमें तो आश्चर्य इस बात पर होता है कि प्राचीन और अर्वाचीन सभी पण्डित मन्दोदरी और तारा को आज दिन भी पतिव्रता कहते हैं।

असल बात तो यह है कि हम स्त्रियों को केवल भोग विलास की सामिग्री मात्र समझते हैं और है भी ठीक ही। "स्त्री एक दासी के समान है।" हमारे बाप दादे भी तो उन्हें सदा से यही (दासी) समझते आए हैं तो भला हम उनका सम्मान करके 'कलयुग' को क्यों न्योता दें?

क्या ही मज़ेदार बात है कि पुरुष, यदि उसकी स्त्री मर जावे, तो वह चाहे जितने विवाह कर सकता है पर यदि दुर्भाग्यवश स्त्री का पति मर जावे तो उस बेचारी का तो मानो सर्वनाश ही हो गया। उसे हमारे धर्म्म ग्रंथ सलाह देते हैं कि वह सिर मुड़ा कर केवल भगवान् प्राप्ति का प्रयत्न करें। केवल तपस्या करना ही उसका 'धर्म्म' है और कुछ नहीं। हा! कैसे नीच और पक्षपात पूर्ण विचार हैं? हम कहते हैं स्त्रियें ऐसा अवश्य करें पर साथ ही पुरुषों को चाहिए कि स्त्री के मरने पर वे भी संसार से विरक्त हो जावें और अपने को गला गला कर मार डालें। पर नहीं, पपिष्टा तो स्त्रियें होती हैं पुरुष नहीं। हमारे बाप दादों का भी तो यही निश्चय रहा है। हम उन पक्षपातियों से केवल एक प्रश्न करना चाहते हैं वह यह कि जहां पानी न मिले क्या वहां प्यास भी न लगेगी?

मनुष्य प्रकृति के नियमों से युद्ध ठानते हैं। यह सभंव है कुछ लोग थोड़े समय के लिए ऐसा करने में सफल भी हो जावें और इस क्षणिक विजय से मदांध होकर प्रकृति से हर बातों में युद्ध

छेड़ने का साहस करें लेकिन जिस तरह मेघाक्रमण से सूर्य्य का उज्ज्वल प्रकाश सदा के लिए नहीं रुक सकता अथवा नदी का वेग बालू की भीत से नहीं थामा जा सकता ठीक उसी प्रकार मनुष्य अथवा किसी मानव संस्था द्वारा प्रकृति के स्वभाविक (Natural) नियमों के प्रवाह का बन्द किया जाना सर्वथा असम्भव है !

प्रकृति से हम युद्ध भले ही ठान लें पर उसका परिणाम कितना भयङ्कर होता है क्या कभी आपने यह भी सोचा है ?

इससे व्यभिचार की मात्रा भारत में इस अधिकता से बढ़ रही है जिसे देख कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह सब बातें जानते हुए भी हम विलायत वालों के व्यभिचार की बातें सुन कर क़हक़हा लगाते हैं और हमारे मनोरञ्जन का वह एक अङ्ग होता है। धिक्कार है हमारे जीवन को और हमारे अस्तित्व को ! हम अपने पूर्वजों के उस पवित्र रक्त को कलंकित कर रहे हैं जिसके प्रत्येक बूंद में एक संसार विजयी और शक्तिशाली योद्धा के उत्पन्न करने की शक्ति थी—हम अपने माता के उस कोख को कलंकित कर रहे हैं जिसमें से अमोल रत्न उत्पन्न होते थे ! जिन आर्य ललनाओं की वीरता सुनने मात्र से हमारे हृदय में जोश उमड़ आता है, जिन देवियों के पतिव्रता और त्याग ने संसार को चकित कर दिया था आज उसी से जन्मी हुई करोड़ों स्त्रियों ने वेश्या वृत्ति क्यों धारण करली है—यह कोठों पर बैठने वाली और डंके की चोट अपना सर्वनाश करने वाली वेश्यायें क्या लाला बाबुओं के घरों की बहू बेटियें नहीं हैं ? हम इस बात को दावे के साथ सिद्ध कर सकते हैं कि प्रति सैकड़ा ९० वेश्याओं को यह पेशा मजबूर होकर और सामाजिक अनादर के कारण ही

ग्रहण करना पड़ता है। उनके लिए और सब द्वारा बन्द हैं अन्य सभी बड़े बड़े देशों में ऐसी ख़ास संस्थाएं (Rescue Homes) हुआ करती हैं जो इस ओर ध्यान दें। बड़े बड़े दिग्गज विद्वान् और धनी इन सामाजिक कुरीतियों को सुधारने के लिए तन मन और धन से इसकी सेवा करते हैं। गत अप्रैल मास की "सेवा" में श्री० बेकंटेशनारायण तिवारी, एम० ए० का "जनरल बूथ" शीर्षक एक लेख छपा है। उसमें इन्हीं संस्थाओं के अभाव पर लिखते हुए लेखक ने बड़ी योग्यता से अन्य प्रदेशों की ऐसी ऐसी संस्थाओं की एक सूची भी दी है। वह इस प्रकार है :—

धार्मिक क्षेत्रों में कार्य करने वाले—

स्थान	शाखांओं क संख्या	कार्यकर्ताओं की संख्या
ग्रेट ब्रिटेन ...	१४४७	३१६१
अमेरिका ...	८७१	२६८३
दक्षिण अमेरिका और वेस्टइन्डीज़ ...	१२८	१८८
कनाडा, न्यूफ़ाउन्डलड ...	४६५	६५०
आस्ट्रेलिया, जावा ...	१२८३	१७२१
भारत, सीलोन, जापान, केरिया ...	२५८४	१६२६
दक्षिण अफ्रिका, सेंट हेलेना ...	११३	२७८
फ्रान्स, बेलजियम, इटली ...	३७४	४६६
जर्मनी, हालैंड ...	२४८	७७२
स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क ...	१०६७	१५१३
जिब्राल्टर, माल्टा ...	२	५

सामाजिक क्षेत्रों में काम करने वाले मुहकमें ।

पुरुषों के लिए	संस्थाओं की संख्या । ग्रेट ब्रिटेन	बाहर	जोड़	कितने रह सकते हैं
खाने का तथा भोजन का स्थान	३१	१५६	१८७	१८५३१
मज़दूरों को काम दिलाने वाली संस्थाएं	८	५०	५८	...
मज़दूरों के कारख़ाने	२८	११७	१४५	४६३६
छूटे हुए क़ैदियों के स्थान	१	१८	१६	४८६
खेती के स्थान	२	१५	१७	...

स्त्रियों के लिए :—	संस्थाओं की संख्या । ग्रेट ब्रिटेन	बाहर	जोड़	कितनी रह सकती हैं
Rescue Homes	३२	१०७	१३६	३४६६
भोजन तथा रहने के लिए	१०	२०	३०	१६३४
बच्चों के लिए स्थान	२	५७	५६	...
ग़रीबों के रहने के लिए	४४	१०३	१४७	...
दूसरी संस्थाएं	१७	८७	१०४	...

हम आपसे पूछते हैं कि भारत में ऐसी कितनी संस्थाएँ हैं ? और कितने लोग इस पवित्र कार्य को करने वाले हैं । अव्वल तो भारत में इन सामाजिक कुरीतियों की ओर विशेष ध्यान देने वाले व्यक्ति हैं ही नहीं और जो हैं भी वे उङ्गलियों पर गिने जा सकते हैं ।

भला जिस अभागे देश में इतनी बाल विधवाएं हों, बाल विवाह का ऐसा प्रचार हो, दहेज की कुप्रथा मार कर भी रोने न देती हो, जिस देश में स्त्री शिक्षा का ऐसा अभाव हो, जिस समाज का नियम इतना कड़ा हो, जहां आत्म हत्यारी स्त्रियों की संख्या अपार हो। जिस समाज के नियम इतने कड़े हों, जहां स्त्रियों का इतना अपमान और इतना सामाजिक अनादर होता हो भला वह देश कैसे उन्नति कर सकता है?

कौन ऐसा भारतवासी है जो यह जान कर दहल न जावे कि भारत में २० वर्ष की आयु के भीतर १ करोड़ ६० लाख पुरुषों और २ करोड़ ६० लाख स्त्रियों का विवाह हो जाता है। याने प्रति सैकंड़ा १० पुरुष और प्रति सैकड़ा २७ स्त्रियां २० वर्ष की आयु के पहिले ही विवाह के बंधन में बंध जाती हैं। १० वर्ष की विवाहिता बालकाओं की संख्या २० लाख और १५ वर्ष की विवाहित बालिकाओं की संख्या ८० लाख है।

सामाजिक कुरीतियों के विषय में हम यहां कुछ नहीं कहना चाहते हमारा मतलब केवल यह था कि जहां तक हो सके इन कुरीतियों का संग्रह कर उनके विषय, अङ्क सहित (Fact and Figures) पाठकों के सामने रख दें। हमारा उद्देश संसार को पाठ पढ़ाना नहीं है। मनुष्य स्वयं अपने बुद्धि और विवेक से अपना मार्ग स्थिर कर सकता है। केवल इसी लक्ष के सामने रख कर यह पुस्तक तय्यार की गई है। इसमें मेरा मुख्य कार्य्य केवल संग्रह मात्र है। जिस प्रकार कारीगर कई तरह के मसालों का प्रयोग करके एक सुन्दर महल निर्माण करता है अथवा यों कहिए कि जिस प्रकार माली रङ्ग बिरङ्गे फूलों को एकत्रित करके एक गुलदस्ता तय्यार करता है हमने भी ठीक वैसा ही

किया है । यह पुस्तक "देश दर्शन" के आधार पर लिखी गई है ।

आज कल आम तौर से देखा गया है कि सामाजिक विषय की गिनती रूखे (Dry) विषयों में हुआ करती है और ऐसी पुस्तकें पढ़ने की बहुधा रुचि भी नहीं होती यही कुल बातें सोच कर इस पुस्तक में प्रत्येक विषय के पहिले एक सुन्दर गप्प भी दीया गया है। वह केवल गप्प ही नहीं है। यह आय दिन होने वाली घटनाओं का नमूना है । इन गप्पों द्वारा पाठकों को समाज की वास्तविक स्थिति और होने वाले अन्यायों का पता भी चल जावेगा । शादी विवाह में जैसी छीछलेदर हमारें यहां होती है उस विषय पर कोई गप्प हमें ढूढ़ने से भी नहीं मिला। अतएव हमने श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए० एल० एल० बी० महोदय कृत "लम्बी दाढ़ी" नाम की पुस्तक में से "एक अण्डर ग्रेज्युएट की शादी" शीर्षक लेख उध्धृत करने की प्रार्थना की। लेखक ने बड़ी उदारता से हमें एसा करने की आज्ञा देकर इस रूखी परस्तक में मानों जान डाल दी है। अतएव हम उनके विशेष आभारी हैं।

जो जो टिप्पणी इस पुस्तक में दी गई है वह "स्त्रीदर्पण" "महिलादर्पण" आदि कई मासिक पत्रिकाओं में वर्षो से प्रकाशित हो रही थीं। पत्र के सम्पादकों और कई अन्य सज्जनों ने ऐसे लेखों की बहुत प्रशंसा की और हमसे उन्हे पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का आग्रह भी किया । एक एक लेख तीन तीन पत्रों ने अलग अलग उद्धृत कर अपने पत्रों में स्थान दिया और उस पर टिप्पणी भी की। इन सब बातों से उत्साहित होकर और जनता की रुचि इस ओर देखकर ही हमने इन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का स्थिर किया और

परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद है, जिसकी असीम कृपा से आज यह पुस्तक 'समाज दर्शन' के बाने में आपके सामने उपस्थित है। यदि इस पुस्तक से समाज का कुछ भी उपकार होसका तो हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे और प्रत्येक विषय पर अलग अलग एक एक पुस्तक प्रकाशित करने का प्रयत्न भी करेंगे।

इस पुस्तक में 'देश दर्शन' के इलावा कई पुस्तकों और समाचार पत्रों का सहारा हमें जगह जगह लेना पड़ा है। अतएव उन पत्र सम्पादकों, लेखकों और प्रकाशकों के भी हम विशेष कृतज्ञ हैं।

अन्त में हम सहित्य रत्न पं० श्रीधर पाठक को हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होने 'समाज दर्शन' की प्ररस्तावना लिख कर इस तुच्छ पुस्तक को इतना गौरव प्रदान किया है।

जिस समय पुस्तक तय्यार हो रही थी उसी समय पाठक जी ने इसका कुछ अंश देखा और सराहा भी था। उनकी प्रबल इच्छा थी कि वे प्रस्तवना द्वारा इन सामाजिक कुरीतियों पर अपने आन्तरिक विचार सविस्तार लिखें पर हमारे दुर्भगयवश इधर दो महीने से वे अस्वस्थ हैं। पूरे एक महीने तक वे चारपाई पर पड़े रहे हैं। कमज़ोरी इतनी अधिक है कि वे मुशकिल से थोड़ी देरे बैठ सकते हैं। इसी कारण वे कुछ विशेष न लिख सके। इतना लिखने में ही उन्हें तीन बार लेट जाना पड़ा था पर निसन्देह जो कुछ भी आपने लिखा है उसके प्रत्येक शब्द तुले हुए हैं और उनके हृदय की बात प्रगट कर रहे हैं।

"चाँद" कार्यालय,
इलाहाबाद,
१—४—२२।

विनीत—
राम रख सिंह सहगल

प्रस्तावना

सृष्टि के आरम्भ ही से मानव समाज की उन्नति मानव जीवन का मुख्य ध्येय रही है। संसार के सभी सभ्य देशों के इतिहास और साहित्य से यह बात स्पष्ट है। प्रत्येक देश का उत्थान और पतन उस देश के निवासियों की सामाजिक चेष्टा और आचार का फलरूप ही होता है। अतः प्रत्येक, उन्नत अथवा उन्नतिशील देश में समाज के उन्नायक विधि विधानों की, और उन पर समाज की सतत दृष्टि की आवश्यकता है।

हमारा भारतवर्ष उन देशों में है जहां प्रयाःप्रत्येक बात का शास्त्रों में विवेचन रहने पर भी अनेक सामाजिक विषयों में अनेक अनिवार्य कारणों से, अनेक प्रकार के शैथिल्य और दोष प्राविष्ट होगये हैं जो ऐसे दृढ़ हैं कि उनसे छुटकारा पाना अति कठिन प्रतीत होता है। उन सभों में वह अत्यन्त द्रूढ़ हैं जो हमारे स्त्री समाज से सम्बन्ध रखते हैं, और सारे देश को अत्ययन्त दुर्बल बनाए हुए हैं।

यह ग्रन्थ उन दुर्वलता जनक अनिष्टों को एक अत्यन्त उपयुक्त और रोचक रीति से प्रदर्शित करता है और हमारे स्त्री समाज सम्बन्धी अत्याचारो के लोमहर्षण दृश्य सामने लाकर उनके

प्रतिकार का पथ बतलाता है । सहगल जी की लेखनी में निस्सन्देह बड़ी संजीवनी शक्ति है। वह अङ्कों और घटनाओं के उल्लेख द्वारा अपने कथनों को प्रमाणित करते हुए पाठक के चित पर अपनी आकाट्य युक्तियों को अंकित करते हैं। इस संग्रह के अध्ययन से ऐसा कौन मानव जातीय व्यक्ति होगा जो वर्तमान सामाजिक दुर्दशा के दूरीकरण की ओर सच्चे हृदय से प्रेरित न हो ? हिन्दी साहित्य में ऐसे संकलन अभी आरमभित हो ही रहे हैं और उन में यह एक अति प्रशस्य और उपादेय ग्रंथ है। आशा है हिन्दी पढ़ने वाला समाज इससे पूर्ण लाभ उठावेगा ।

श्री पद्मकोट
३०-३-२२

श्रीधर पाठक ।



समाज दर्शन

मलिना

—:०:—



वैशाख का महीना है। प्रायः पाँच बजने को हैं, बादलों की अवस्था देख कर मालूम होता है कि शीघ्र ही झड़ी लगेगी। ठीक ऐसे ही समय में एक युवक तेज़ी के साथ माधवपुर के रास्ते से जा रहा है। युवक चेष्टा कर रहा है कि जल बरसने के पहिले सकुशल घर पहुंच जाय। युवक के माधवपुर के पास पहुंचते पहुंचते रास्ते ही में बड़े बड़े वृक्षों को कपा देने वाली प्रबल वायु का चलना आरम्भ हो गया, साथ ही बड़ी बड़ी बुँदें भी पड़ने लगीं। ऐसा उत्पात देख उस समय युवक अपने चिरकाँक्षित एक मकान के पास जा पहुँचा। आकाश की अवस्था देखकर एक बार उसे मकान में ठहर कर विश्राम कर लेने की इच्छा हुई। फिर उसी

समय न मालूम किस मर्म भेदी यातना की तीव्र ताड़ना से वहां क्षण मात्र भी खड़े रहने की इच्छा नहीं हुई । किन्तु करता क्या, वृष्टि का प्रकोप बहुत बढ़ गया था और शीघ्र ही बन्द होने की कोई आशा भी नहीं थी ऐसी हालत में निराश हो कर युवक ने मकान में प्रवेश किया । उसे देखकर मकान की मालकिन बोली "अरे विनय, हमारा तो सर्वनाश हो गया, हाय" यों कहकर वह चिल्ला उठी । उसकी बात सुन कर विनय एकदम अवाक हो गया और इसका कुछ भी अर्थ न समझ सका । विनय का नाम सुनकर एक सुन्दर रमणी अन्दर से बाहर आई, और विनय को भीगे कपड़ों से काँपता हुआ देख कर एक लड़की को फ़ौरन ही अन्दर से नये कपड़े लाने के लिये भेजा । वस्त्र आने पर विनय ने कपड़े बदले, इसके बाद वह रमणी उसे भीतर ले गई बातें होने लगीं । कहाँ से आये, किस लिये कहां गए थे, इत्यादि पूछने के बाद उसने अपनी विपत की बातें कहीं ।

मलिना के भाग्य की बात सुनकर विनय काँप उठा । मलिना विवाह के दस महीने बाद ही विधवा होगई है । प्रायः दो महीने हुये जब कि बीमारी से उसके स्वामी का देहान्त हो गया है । विनय रोने लगा । धीरे धीरे सन्ध्या का अन्धकार घना हो गया । आकाश में काले बादलों ने घोर रूप धारण कर लिया । विनय मलिना की माँ के पास बैठे रहने पर भी उसे नहीं देख सकता था । विनय को

चुप देखकर वह बोली-भैया देखो हमारी बिपद कि मलिना को सास ने उसे 'डाकिनी' कह कर घर से निकाल दिया है और अब कभी सुसराल में उसे ठहरने की भी मुझे कोई आशा नहीं है। दादा ने मलिना के विवाह के समय अच्छी आत्मीयता दिखा कर हमारे यहाँ हर एक कामों की देख भाल की थी। किन्तु अब इस विपद् के समय तो खबर लेना दूर रहा, कभी इधर आते तक नहीं हैं। और हमारे भाग्य के दोष से तुम भी पराये हो गये कभी कभी आकर हमारी खबर तो ले लिया करो देखो मलिना को कुछ सान्त्वना दो उसे हिम्मत बँधाओ ? विनय चुपचाप होकर थोड़ी देर सोचता रहा कि मुझे क्या कहना चाहिये। फिर हटात् घबराहट भरे कंठ से बोल उठा- "मौसी मैं यहाँ नहीं था इसी से आपके दुःख की बात मैंने नहीं सुनी, अब घर पर दो एक दिन रहूंगा, और बीच बीच में आपके यहाँ अवश्य आया करूंगा। मेरे द्वारा आपका जो उपकार हो सकेगा उसके करने में तनिक भी कसर न करूंगा। मलिना की माँ ने मलिना को पुकार कर विनय के पास बैठने के लिये कहा और आप विनय के वास्ते भोजन बनाने को चली गई। विनय ने कहा कि मैं वृष्टि बन्द होने पर घर ही जाकर खाऊंगा। किन्तु उसकी बात किसी ने न सुनी।

मजबूर हो कर विनय को दो घंटे तक वहीं ठहरना पड़ा। मलिना आकर सोचने लगी कि मैं विनय से क्या बात चीत

करूं किन्तु कोई बात स्थिर न कर सकी दोनों ही एक दूसरे की तरफ़ देखते हुए चुपचाप बैठे रहे, उनके हृदय और अन्तःकरण की मर्म व्यवस्थाएं आंखों और मुख के द्वारा खुलने लगीं । मलिना की आँखें आँसुओं से भर आईं और विनय का वक्षस्थल स्पन्दित होने लगा आखिर विनय ने निस्तब्धता भंग करके पूछा–"मलिना, कैसी हो ?" मलिना–"अच्छी हूं" कह कर चुप हो गई । विनय अब दूसरा प्रश्न ढूंढ़ने लगा उसी अवसर में मलिना उससे उसका (विनय का) शारीरिक कुशल पूंछने लगी। क्रमशः शोक और मर्मव्यथाकी तीव्रता प्रशमित होने पर दोनो भाग्य के विषय में कुछ वाद विवाद करने लगे, उसी प्रसंग में बहुत सी बातें भी होने लगीं । मलिना के विवाह के पहले जैसे वे दोनों मिल कर आपस की बातें पूरी न कर पाते थे—और उस वक्त कितने ही प्रश्न आ उपस्थित होते थे, वैसे भाव आज नहीं हैं। आज तो यह दोनों कितनी ही चेष्टा करने पर भी प्रश्न करने पर हिचकते हैं जिस समय उनकी ऐसी अवस्था हो रही थी, उसी समय मलिना की माँ ने विनय को भोजन करने के लिये पुकारा। भोजन कर लेने के उपरांत मौसी को प्रणाम कर और मलिना से विदा ले कर विनय घर की तरफ चला ।

* * *

उस वक्त भी कुछ कुछ वृष्टि हो रही थी, चारों तरफ़ अन्धकार छा रहा था, बीच बीच में बिजली चमकती जाती

थी। किन्तु यह प्राकृतिक सौन्दर्य विनय के चित्त को बिलकुल सामान्य मालूम होता था। घर पहुंच कर विनय ने अपनी बुआ से मलिना के घर की सब बातें कहीं, और बुआ की कुशल आदि पूंछ कर तथा ब्यालू का निषेध कर के अपने कमरे में चला गया। बहुत सी चिन्ता और हृदय की उत्तेजनाओं से सारी रात विनय को अच्छी नींद नहीं आई आखिर पिछली रात को कुछ झपकी लगने पर विनय ने स्वप्न देखा मानो उसकी चिर वांछित मलिना उसके गले में जूही के खिले हुये फूलों की माला पहनाती हुई कह रही है—"मैं बहुत दिनों से आप ही की हूं" जागने पर इस बात को सोच कर विनय बहुत ही व्याकुल होने लगा।

* * *

अब हमें अपने पाठकों को विनय और मलिना के पूर्व परिचय का कुछ हाल सुना देना ठीक होगा। विनय और मलिना के पिता दोनों डिपुटी मजिस्ट्रेट थे। देश में एक ही जगह मकान होने के सिवाय वे दोनों एक ही ज़िले में चार वर्ष तक साथ रह कर मुलाज़िमत कर चुके थे। इसी से दोनों परिवारों में अच्छी घनिष्ठता हो गई थी। मलिना विनय की मां को मौसी कह कर पुकारती थी। स्कूल से आकर मलिना को पढ़ाना विनय का प्रधान काम था। उस वक़्त विनय तेरह वर्ष का और मलिना आठ वर्ष की थी। इसी प्रकार धीरे धीरे बालक बालिका का निर्मल और निःस्वार्थ प्रेम प्रणय में

परिणत हुआ । मलिना, प्रातः चार बजे ही उठ कर न मालूम किस की आशा में स्कूल के रास्ते की तरफ़ देखती रहती थी और विनय छुट्टी होने पर एक गुप्त चीज़ से खिंचा हुआ घर की तरफ़ चल पड़ता था । चाय पीने के बाद तुरन्त मलिना के घर आकर पहिले सारे दिन की कार्य्यवाही देखता था, फिर मलिना को कठिन दण्ड देना आरम्भ करता था क्यों कि मलिना अपना पाठ अच्छी तरह से याद नहीं करती थी। और कुछ विशेष बड़ी हो जाने के कारण वह विनय की छात्री होने में भी लज्जा करती थी किन्तु विनय क्षमा करने वाला नहीं था । पाठ अच्छी तरह न सुनने पर भी वह मलिना का बुरी तरह तिरस्कार करताथा । इस तिरस्कार और अभिमान की ज्वाला से मलिना घबरा उठती थी । आख़िर बिचारी हज़ार अनिच्छा रहने पर भी विनय को खुश करने के लिये अति कष्ट से दोपहर के समय में पाठ याद करती थी । दोनों के माता पिता दोनों को एक दृष्टि से देखते थे और मन ही मन उन्होंने दोनों को चिर बन्धन में बाँध देने को भी एक तरह से निश्चय कर लिया था । पर उनमें से किसी ने एक दूसरे पर अपने मनका भाव प्रगट नहीं किया था । दैवयोग से उस समय उस ज़िलेमें हैज़ेका भयँकर प्रकोप हुआ जिससे अपने माता पिता के मर जाने पर विनय अपनी बुआ के साथ देश चला गया ।

मलिना के पिता ने विनय के एफ़० ए० पास कर लेने पर उसके साथ मलिना का विवाह कर देना निश्चय करके विनय

को एफ़० ए० में पढ़ाने का कलकत्ते में अच्छा बन्दोबस्त कर दिया था। उस समय मलिना की उमर १२ और विनय की उमर १७ साल की थी। विनय सेकन्ड इयर में पढ़ रहा था। इसी समय हैज़े के रोग से आक्रांत हो कर मलिना के पिता मलिना और मलिना की माता को घोर शोक सागर में धकेल कर स्वर्ग को चले गये। उनकी श्राद्ध आदि क्रिया समाप्त कर के दोनों माँ बेटियां जब देश को लौटीं तो उस समय भी विनय कलकत्ते में ही पढ़ता था।

उसने मलिना को एक हृदय-विदारक सहानुभूति सूचक पत्र लिखा। मलिना ने भी उसका यथार्थ उत्तर दिया इन दोनों का यह पहिला ही पत्र-व्यवहार हुआ। देश को लौटने पर मलिना के मामा ने देखा कि बहिन के पास कुछ रुपये पैसे नहीं हैं और मलिना विवाह के योग्य हो गई है। सुन्दरी कन्या है ऐसा विचार कर उसने मन ही मन वहां के जमींदार महाशय के साथ मलिना का विवाह कर देना स्थिर किया। जमींदार महाशय की उमर प्रायः ४० साल की थी। वे मलिना के रूप और गुण का वर्णन सुन कर उसके साथ विवाह करने को व्याकुल हो रहे थे।

मलिना के मामा बड़े ही लोभी थे। उन्होंने इस सुयोग में ज़मींदार महाशय से कुछ पाने की सुविधा देखी और जमींदार को जामाता कर लेने पर जीवन भर के लिए गांव में अच्छी क्षमता और बड़प्पन फैल जायगा। ऐसा सोच समझ

कर बहिन को इस विषय में राज़ी करने की कोशिश करने लगे। विवाह का प्रस्ताव उपस्थित होने पर मलिना की मां ने कहा कि बाबूजी की और मेरी इच्छा थी कि मलिना का विवाह विनय के साथ हो, क्योंकि उन दोनों में बड़ा प्रेम है। इसलिए अब भी विनय के मन्ज़ूर कर लेने पर मलिना का विवाह उसी से करूंगी।

यह सुनकर उसके भाई साहब इस विवाह में घोर आपत्ति उपस्थित करते हुए बोले—

"विजय मामूली आदमी है उसका पिता थोड़ा रुपया छोड़ गया है वह भी उसके कलकत्ते की पढ़ाई में खर्च हो जायगा फिर मुशकिल से बीतेगी और नौकरी से क्या हो सकता है यह तो निरी पराधीनता है। उसके सिवा अब मलिना को कुवांरी रखना ठीक नहीं है। जमींदार के साथ ब्याह करने में अधिक रुपये भी खर्च न होंगे थोड़े से खर्च में ही मलिना का विवाह हो जायगा। और तुम्हारा भी बड़प्पन फैल जायगा। मलिना रानी की तरह सुख में रहेगी विशेषतः जमींदार महाशय ने मलिना को बहुत ही पसन्द किया है।" यह सुन कर मलिना की मां का भी हृदय पिघला। वह थी तो स्त्री ही न। कन्या सुखसे रहेगी, जामाता भी बड़े आदमी हैं समयानुसार मेरे भी कितने ही काम करेंगे इत्यादि बातें सोच कर उसने विवाह की सम्मति दे दी। चुप चाप विवाह का दिन स्थिर हो गया। विवाह के दो दिन पहले मलिना को अपने

भाग्य की बात मालूम हुई किन्तु वह स्वयम् लज्जावश मां से अपने हृदय की व्यथा और गूढ़ बात न कह सकी। उसने किसी प्रकार एक सखी के द्वारा अपनी माँ के कान तक बात पहुंचा भी दी, किन्तु फल कुछ भी न हुआ। निरुपाय होकर मलिना चुपचाप मौत की राह देखने लगी। विवाह हो गया। सात आठ दिनके बाद बुआ के पत्र से विनय ने यह खबर पाई। उसकी कितने ही दिनों की संचित अशा एक बार ही तितर बितर हो गई। उस समय विनय की परीक्षा के दो मास बाक़ी थे, किन्तु उसके सारे उत्तम, उत्साह एक बार ही निराशा से टूट गये। हज़ार चेष्टा करने पर भी वह अपने पाठ को याद न कर सका। बालकपन की यह सारी बातें चित्र की तरह रात दिन उसकी आँखोंके सामने आने लगीं। विनय परीक्षा में फेल हुआ। यह सम्वाद पाकर मलिना ससुराल में रोने लगी, और मन ही मन कहने लगी कि विनय के परीक्षा में फेल हो जाने का कारण मैं ही हूं, मेरे लिये ही उसे निष्फलता प्राप्त हुई। खैर अब उसका उपाय कुछ नहीं है। बस इसी दुख से मलिना छटपटाने लगी।

विनय ने अपनी बुआ को लिख दिया था कि मैं एफ़० ए० पास किये बिना देश को नहीं लौटूंगा किन्तु उसे यह नहीं मालूम था कि मुझे किसी काम के लिये माधवपुर जाना होगा और वहां मैं अपनी चाही हुई वस्तु को देख सकूंगा। परीक्षा के दो मास पहिले देश की जमींदारी में एक

झगड़ा उठ खड़ा हुआ इसलिए विनय को कुछ दिनों के वास्ते देश आना पड़ा। आते समय पानी बरसने के कारण आज उसे मलिना के घर देखते हैं। यहां का हाल सुन विनय एकदम विस्मित हो गया। क्योंकि इसके पहले उसकी बुआ ने अशुभ-संवाद लिखना बुरा समझ कर मलिना के विधवा होने की खबर उसे नहीं दी थी। आज पहिले पहल उसने यह बात सुनी और सुन कर बहुत ही दुखित हुआ।

* * * *

एक रोज़ विनय मुख प्रक्षालन के बाद किसी कामके लिये घर से निकला किन्तु बाहर उसका जी नहीं लगा मन में कितनी ही तरंगें उठने लगीं। तुरन्त लौट कर भोजन किया। उसके बाद कागज़ क़लम ले कर मलिना को पत्र लिखने के लिए बैठा।

बैठे बैठे उसके मनमें कितनेही विचार होनेलगे। आखिर पत्र लिखना स्थिर किया और बहुत सा कागज़ रंग डाला। दूसरे दिन प्रातःकालही घूमते घूमते मलिनाके घर जाकर अकेले में वह कागज़ मलिना को दे दिया। और कातर स्वर से कह आया कि कृपा करके तुम इसका उत्तर लिख रखना। मैं कल प्रातःकाल ही इसका उत्तर लेने के लिये आऊंगा। यह कह कर लौट आया। विनय के चले जाने पर मलिना अपने कमरे में जाकर विनय का पत्र पढ़ने लगी। पत्र में लिखा था--

" मलिना "

आज मैं यह पत्र तुम्हें लिखता हूं। इसके लिये मुझे क्षमा करना तम्हारे विवाह के बाद मैंने तुमको पत्र नहीं लिखा। मलिना! बुआ के पत्र से जिस दिन तुम्हारे विवाह की ख़बर मुझे कलकत्ते में मिली, उस दिन मेरी बड़ीही विचित्र अवस्था हो गई थी, जिसका कि मैं कुछ बयान नहीं कर सकता हूं! बिना बादल के बिजली गिरने से जिस भाँति मनुष्य स्तम्भित और बुद्धिहीन होजाता है मैं भी वैसा ही हो गया था। यह सम्वाद मुझे सपने की तरह और चिन्ता-कारक मालूम हुआ। मैं हृदय से दुराशा पोषण करने के लिये तुम्हारे उपयुक्त होने की कलकत्ते में रहकर प्राणपण से चेष्टा कर रहा था। वह सब चेष्टायें मेरी एक दम टूट गईं हज़ार चेष्टा करने पर भी पाठ याद न होने के कारण मैं परीक्षा में फ़ेल हुआ। आख़िर फिर मन को स्थिर करके परीक्षा में सफल होने की चेष्टा की किन्तु क्या सफल होना सहज ही है? अब हटात् घर आकर यह क्या देखता हूं? हाय! हाय!! मलिना तुम मेरी नहीं हुईं। मुझे भूल गई हो क्या!

तुम्हारे बालकपन और किशोरावस्था की वह सब बातें आज भी मेरी छाती में उमड़ रही हैं, क्या वह सच्चा प्रेम अब नहीं रहा? याद है कि तुम मुझे कितना प्यार करती थीं। हमें पहलेवाली तुम्हारी बात ख़ूब याद है, तुम्हारा मेरे ऊपर अनन्य प्रेम था और मैंने भी अपना सारा जीवन तुम्हारे

ऊपर ही न्योछावर कर दिया था। बुरे समय में माता पिता मर कर मुझे अनाथ कर गये और मेरे दुर्भाग्य से मौसा जी महाशय भी जीवित न रहे, नहीं तो तुम मेरी होतीं।

किन्तु हाय, यह निराशा का पर्वत अबतक छाती में अधिकार जमाये हुये है, मलिना! मैं जानता नहीं कि तुम विवाह से सुखी हुई या नहीं किन्तु इतना अवश्यहै कि तम्हारा भाग्य विवाहित जोवन न भोग सका। तिस पर भी तुम्हारी सास का अत्याचार सुनकर मेरी छाती फटी जाती है मेरी कल्याणमयी मलिना, डाकिनी कह कह पुकारी जाय! हाय! वह राक्षसी किस तरह मोक्ष पायेगी? लक्षण युक्ता किसी दूसरी कन्या का पाणिग्रहण करने पर भी तुम्हारे स्वामी की मृत्यु तो उस दिन अवश्यम्भावी थी। यह बात शायद तुम्हारी सास नहीं जानती खैर जो कुछ हुआ सो हुआ, यह समझ कर मैं अपने मनको अनेक प्रकार से प्रबोध देता हुआ शान्त हो गया था किन्तु यहाँ आकर फिर मेरे मन को भयानक अशान्ति ने आ घेरा।

मौसी साहबा स्वयं बुद्धिमान् हैं उन्होंने उच्च शिक्षा पाई है और शास्त्रानुसार कलकत्ता, इन्दौर, झालरापाटन आदि शहरों में कई प्रतिष्ठित हिन्दू परिवारों की बाल-विधवाओं के पुनर्विवाह हो गये हैं। इसलिए यदि तुम्हारे लिये भी मौसी साहिबा राय दे दें तो बुआ को राज़ी कर के तुम्हें पत्नी रूप में ग्रहण करने को मैं तैयार हूं।

'कहो मलिना ! क्या तुम मेरी होने के लिये तैयार हो ? क्यों मलिना मेरे बालकपन से लगा कर अब तक का सुख स्वप्न सफल होगा ? प्यारी मलिना, मुझे निराश मत करना एक बार मेरे हृदय की ओर देखो। तुम मेरी ही हो जाओ तो मैं अपने जीवन को नूतन भाव में परिवर्तित कर सकूं और सब प्रकार से तुम्हारे उपयुक्त होने की चेष्टा करूं ज़रा कहो तो तुम मेरी होगी ?

मलिना इस पत्र की बातें यदि तुमको अनुचित मालूम हों तो तुम्हारे बालकपन और इतने दिनों के स्नेही विनय को क्षमा करना तुम्हारे पत्रोत्तर पर मेरा भविष्य का जीवन निर्भर है, इसलिये उत्तर शीघ्र दो।

तुम्हारा हतभाग्य—

—विनय।"

पत्र पढ़ते पढ़ते मलिनाकी आँखोंमें आँसू भरआये उसकी इच्छा हुई कि पत्र फिर पढ़ूं लेकिन न मालूम किस आशंका से उसने अपनी इच्छा को रोका। पत्र को एक बार हृदय से और एक बार मस्तक से लगाकर मन ही मन कहने लगी—"विनय तुम देवता हो, तुम्हारा चित्त इतना चंचल क्यों ? इस अभागिनी के लिये तुम अपने निष्कलंक वंश को कलंकित क्यों करना चाहते हो ? ज्यों त्यों करके रात ही में मलिना ने पत्र का उत्तर लिखा। लिखने के बाद सारी रात उसे नींद न आई। न मालूम किस मर्म यातना से बिछौने पर पड़ी हुई

छटपटाती रही।

दूसरे दिन निर्धारित समय पर विनय मलिना के घर आया उसका हृदय संदेह से काँप रहा था और मन इस उधेड़बुन में था कि क्या मलिना मेरी बात को स्वीकार करेगी ? मासी साहिबा क्या इसमें राय दे देंगी ? मलिना क्या पत्र का उत्तर देगी ? इत्यादि। इन्हीं बातों की चिन्ता में वह निमग्न था। विनय को आया हुआ देख मलिना ने चुपके से पत्र का उत्तर विनय के हाथ में दे दिया। विनय ने बहुत ही मुख्तसर रास्ते से जाते हुए एक निर्जन स्थान में मलिना के उस उत्तर को पढ़ा। पढ़ कर निराशा से उसकी छाती फटने लगी किन्तु फिर मलिना के पत्र को हृदय से लगा कर आनन्द से उसका समस्त शरीर रोमांचित हो उठा। मलिना की एक नई भक्ति से उसका हृदय भर गया। घर जा कर उसने पत्र को सौ बार पढ़ा किन्तु तब भी जी न भरा। विनय पत्र को जितनी बार पढ़ता था उसकी भक्ति उतनी ही मलिना की तरफ बढ़ती जाती थी।

मलिना ने पत्र में लिखा था—

"भाई विनय !

आपका पत्र पढ़कर मैं बहुतही मर्माहत हुई आप पुरुष हैं साधारणतः धैर्य्यवान् और कष्ट का सामना करने वाले हैं और विशेषतः आप शिक्षित हैं। आपका धैर्य्य छुटा हुआ देख कर मन को इतना कष्ट हुआ कि उसे यह (मैं) सामान्य रमणी

किसी तरह नहीं सह सकती। भाई विनय! ईश्वर की जो करतूत है उसके लिये हमारे और तुम्हारे चेष्टा करने से क्या होगा यदि आपके साथ मेरा पाणिग्रहण होना होता तो मौसा महाशय और पिता की अकाल मृत्यु ही क्यों होती? भाई! अब यह बात स्वप्न की तरह जान लो, जिस पति को मैं ग्रहण कर चुकी थी वे ही मेरे स्वामी और देवता हैं हृदय के एक मात्र आराध देव वे ही हैं।

यद्यपि मैं अभागिनी उनकी बहुत दिनों तक सेवा न कर सकी तो भी उनकी स्मृति में अपने दुर्बल मन को बलवान करके उन्हीं के ध्यान में जीवन के शेष दिनों को बिताऊंगी मेरे भाई विनय! क्या तुम इस पूजा और ध्यान में बाधा डालोगे? कभी नहीं, मुझे यह दृढ़ विश्वास है। मैं इस विवाह से सुखी हुई थी कि नहीं यह बात कहने का दिन आज नहीं है। और मालूम होता है कि तुमको यह बात पूछना युक्ति-संगत नहीं है। तुम मेरे शिक्षा गुरु हो, जो कुछ मुझे सिखाया था क्या अब उसे भूल गये। स्वामी स्त्री का एकमात्र देवता है वह चाहे धनी हो या निर्धन, रूपवान हो चाहे कुत्सित, विद्वान हो चाहे मूर्ख, किन्तु रमणी की दृष्टि में वह चिर पूज्य है। मेरे स्वामी अधिक उमर होने पर भी मेरे हृदय के देवता थे और हैं। सास ने मुझे डाकिनी ठीक ही कहा क्योंकि इस अभागिनी के वास्ते ही उनकी अकाल मृत्यु हुई इसके लिये आपको चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

छिः विनय ! विधवा विवाह की बात मां से करने के लिये लिखते हो । तुम्हारे पास शिक्षा पाई हुई मलिना क्या अब इतनी पतित हो गई है, क्या यह बातें आप ने निश्चय जान लीं, नहीं नहीं भाई इस सामान्य सुख के लिये स्वर्गीय स्वामी के उच्च वंश और पिता के निष्कलंक नाम को कलंकित करने के लिये और आप के उच्चकांक्षा पूर्ण भावी जीवन के बिताने के लिये मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी । मलिना अब भी इतनी नीच नहीं हुई है, आपने अपने हृदय के भाव अपनी प्यारी मलिना को जताये हैं इसमें कोई दोष की बात नहीं है मैं गुस्सा भी नहीं करती ।

तुम मेरे भाई हो, भाई को पत्र लिखने में दोष न होने के कारण ही आज आप को यह पत्र लिखती हूं और आशा करती हूं कि आप अपनी प्यारी मलिना के मनोभाव समझ कर किसी और दोष की बात के लिये उसे क्षमा करेंगे। शेष भिक्षा ।

यदि आप अपने वालकपन की स्नेहमयी मलिना से अब भी सच्चा प्रेम रखते हैं तो जिसमें वह सुखी हो, जिसमें उस का चिर जीवन आनन्द पाये, भाई वही काम करो । मेरा अनुरोध है कि आप इस बार द्विगुण तप से कोशिश कर के परीक्षा में पास होने की चेष्टा करेंगे ।

और पास होने पर एक किसी कुलीन सुन्दरी कन्या से विवाह करके सांसारिक सुख भोगें मलिना हमेशा आपके स्नेह

की भगिनी रहेगी, भाई विनय, मेरी यह प्रार्थना पूरी न करोगे?

भैया, मैं रमणी हूं, तुम भाई हो कुपथ गामिनी होने पर भी तुम मेरी रक्षा करोगे, सुपथ दिखाओगे, ऐसी मुझे दृढ़ आशा है। अधिक और क्या लिखूं? भाई! मन में कुछ सोच विचार मत करना, रुष्ट मत होना। जैसा स्नेह आपका अब है वैसा ही बनाये रखना इससे मुझे कभी वंचित न करना।

तुम्हारी प्यारी बहिन--

"मलिना"

विनयने देखा कि पत्र आंसुओं से भीजा है। बीच बीच के अक्षर कुछ मिट से गये हैं। मालूम होता है, कि लेखिका के आंखोंसे, पत्र लिखते समय आँसू बहरहे थे। विनय ने पत्र को प्रलोभन का अक्षय कवच समझ कर बड़े ही यत्न के साथ बक्स में रख दिया।

* * * *

इस घटना को पाँच वर्ष बीत गये हैं। विनय सन्मान के साथ बी० ए० की परीक्षा में पास हो गया है।

उसके माता पिता की आकस्मिक मृत्यु से, वह पहले ही अनाथ हो चुका था और पिता का जो कुछ संचित धन था वह उसकी पढ़ाई में खर्च हो गया था। इसलिये निराश और निरुपाय होकर विनय ने गवर्नमेंट को आवेदन पत्र भेजा। उसी साल विनय ने देश के सरकारी वकील की

सुशीला और सुन्दरी कन्या सरजू का पाणिग्रहण किया। विनय अब बड़ा सुखी है। उच्च राज्यपद मिल जाने के कारण उसका सम्मान भी खूब ही बढ़ गया है इसके सिवाय पत्नी भी विदुषी और सुशीला मिली है।

अब विनय के दिन आनन्द से कटते हैं किन्तु इन सारे सुखों के लिये वह मलिना का चिर ऋणी है यह बात वह कभी नहीं भूल सका। विवाह के दो साल बाद सरजू ने स्वयं प्यार के बदले एक सर्वांग सुन्दर पुत्र प्रसव किया। इसी के बच्चे के प्रथम प्राशन विधि के करने के लिए विनय ३ मास की छुट्टी लेकर घर आया है। प्राशन बड़ी धूम धाम से हुआ। देश के सब कुटुम्बी आए और मलिना भी दो दिन पहिले आकर काम काज करने लगी। काम से अवकाश पाने पर वह बच्चे को दूध पिलाती और उसके बदन को साफ़ करके नई पोशाक और गहने पहना देती थी इसके बाद बच्चे को खिलाने और चुम्बन करने ही में रह जाती थी। उसका यह भाव देखकर बीच बीचमें सरयू उससे कहती कि बहिन बच्चे को तुम्हीं अपने साथ ले जाना और वहीं रखना, नहीं तो यहाँ मेरे इतना आदर न कर सकने पर लोग मुझे क्या कहेंगे ? प्यारी बहिन ? वे तुम्हारी बात रात दिन कहा करते हैं, मैंने उनसे कहा था कि देश में जाकर तुम्हारी मलिना को देखूंगी अब सचमुच बहिन तुमको देखकर तुम्हारे पास दो दिन रहकर, तुम्हें छोड़ने की

इच्छा नहीं होती है। सरजू का सच्चा स्नेह देख और उसकी सरलता-पूर्ण बातें सुनकर मलिना मोहित हो गई, किन्तु सरयू के मुखसे विनय का नाम सुनकर और विनय, उस को अब भी रात दिन बात करता रहता है, यह जानकर मलिना का हृदय एक गहरी व्यथा में निमग्न हो गया, और उसे उसी वक्त बहुत दिनों की बीती हुई सब कथाएं याद आकर व्याकुल करने लगीं। उसने सरजू से कहा--"बहू तुम्हारे स्वामी अच्छे स्वभाव के हैं, इसी से वह सब की प्रशंसा करते हैं। विनय दादा से पूंछलेना यदि वे राज़ी हों तो मैं बच्चेको ले जाने में सहमत हूं। किन्तु तुम्हीं ने तो कहा था कि, वह बच्चे को एक घड़ी भी अकेला नहीं छोड़ते, फिर वह बच्चे के बिना किस प्रकार रह सकेंगे? अच्छा खैर जाने दो। जब तक तुम लोग यहाँ हो, तब तक मैं बीच बीच में आया करूंगी, और बच्चे को प्यार कर जाया करूंगी। आज मैं उपवासी हूं, इस लिये भूख ज्यादा लगने के कारण यदि कोई अनुचित बात मेरे मुख से निकल गई हो तो उसे क्षमा करना और मेरे व्यवहार से नाराज़ मत होना सरजू ने सोचा कि स्वामी जो बातें कहते थे वह सब सच्ची हैं। यह रमणी देवी के समान है, नहीं तो दूसरे के लड़के का इतना जल्दी ऐसा प्यार और आदर क्यों करती। यह बात सोच कर मलिना की भक्ति से उसका मन भर आया और वह मलिना को बड़े ही प्यार की दृष्टि से देखने लगी।

विनय जब किसी काम के वास्ते घर के अन्दर आता तब मलिना को बच्चे को लिये हुए देखता, और बीच बीच में उसके चुम्बन की तरफ़ लक्ष्य करता। यह व्यवहार देख कर उसने अनेक बार मलिना से कहा कि "घर में और बहुत से आदमी हैं तुम क्यों बच्चे को इधर उधर फिरानेमें तकलीफ़ करती हो और किसी को दे दो ?" किन्तु यह बात सुन कर उदास मलिना अपने प्रशांत नेत्रों को उठाकर सिर्फ विनय की तरफ़ देख लेती और फिर उन्हीं पलक विहीन सुनित्य सजल नेत्रों को नीचा करके अपने जीवन की बीती हुई मर्म-कहानी कहने लग जाती।

इतने सुख के बीच भी विनय कुछ अनमना सा रहता है मानो किसी अव्यक्त व्यथा में यह बड़ा ही कातर हो। अन्न प्राशन के दिन तीसरे पहर जब सब लोग भोजन कर चुके तब उनकी विदाई के लिये पैसे लेने को विनय अपने शयन-ग्रह में गया। वहां जाकर देखा कि, मलिना बच्चे को गोद में लिये हुए उसे बार बार चूम रही है और दीवार में लटकी हुई विनय की तसवीर दिखला रही है। विनय के पहुंचते ही मलिना न मालुम किस तरह की हो गई।

विनय ने मलिना की आंखों की तरफ़ देखकर जाना कि उसकी आंखें अश्रुपूर्ण हैं। विनय ने पूछा "मलिना यह क्या ?" मलिना ने उत्तर दिया "कुछ नहीं, यह बच्चा रोने लग गया था इस लिये बहलाने के वास्ते इसे यहांसे ले आई

हूं, यहां तुम्हारी तसवीर भी इसे दिखाई।" यह कह कर मलिना फौरन ही घर से बाहर निकल गई। विनय मलिना के कलेजे के दुख को समझ गया। अन्न-प्राशन के दूसरे दिन ही मलिना घर को लौट गई। सरजू ने और दो दिन ठहरने के लिए उससे हज़ार अनुरोध किया लेकिन मलिना ने एक भी न मानी और विनय ने न मालूम क्यों अनुरोध करने का साहस नहीं किया।

इसके दस दिन बाद विनय ने सुना कि मलिना चार रोज़ से बीमार है, रात दिन ज्वर बना रहता है और बुरी तरह से चिल्लाया करती है। यह खबर पाकर विनय माधवपुर गया। वहां रोगिणी मलिना की अवस्था देखकर आवाक् हो गया। उस वक़्त मलिना का पूर्णज्वर से ऐसा चेहरा हो जाना विनय की समझ में न आ सका। देश के जो बड़े डाक्टर थे वह प्रायः दो कोस की दूरी पर रहते थे विनय ने उसी समय उनको बुलाने के लिये एक आदमी भेजा और मौसी को साध्य भोजन करने के लिये भेज कर आप उसके पास बैठ गया।

दो घंटे के बाद मलिना को कुछ होश हुआ वह चक्षु-उन्मीलन करती हुई विनय को सामने बैठा देखकर बोल उठी "विनय तुम्हारा आना मैं स्वप्न में देख रही हूं। पर तुम आये तो सही, लेकिन बच्चे को लाओ ताकि मरने के पहिले उसको एकबार और चूम लूँ, फिर तुम सबसे बिदा होऊँगी।

विनय सुनते हो कि नहीं जल्दी से बच्चे को लाओ, उसे एक बार ज़रूर लाओ विनय" तब विनय ने एक आदमी को तुरन्त भेजा। ठीक ऐसे समय पर डाक्टर साहब भी आकर उप-स्थित हुए। मलिना की मां भी घर में आई। डाक्टर साहब ने परीक्षा करके कहा कि रोगिणी के ज्वरके पहिले अत्याधिक मानसिक चिन्ता और मानसिक कष्ट से मस्तिष्क और हृदय दुर्बल हो गये हैं। जिसपर यह प्रबल ज्वर हो आने के कारण अब मस्तिष्क बहुत ही विकृत हो गया है, और फेफड़े की क्रिया भी ठीक नहीं है। इन बातों के सिवा डाक्टर ने चुपके से विनय के कान में कहा कि रोगिणी के जीवन की आशा बहुत ही कम है। यह रात कुशल से कट जाने में भी सन्देह है। डाक्टर की फ़ीस का रुपया देकर मलिना की मां वहां से चली गई। उस वक़्त विनय से मलिना ने बातें करने को निशेध कर दिया और कहा—"विनय मौत के थोड़े देर पहले तुम मेरी आत्मा को कष्ट मत दो। जो सब मैंने बिसार दिया है उनकी फिर आलोचना करने से क्या मतलब मुझे क्षमा करो। कहो बच्चा आया कि नहीं?

इतने ही में सरजू मय बच्चे के आपहुंची सरजू के पास बच्चा देख कर मलिना का हृदय चंचल हो उठा इसके बाद वह दुर्बल शरीर से ज़बरदस्ती उठकर बच्चे को खिलाने लगी और उसे गोद में लेकर चूमने लगी। उस वक़्त उसका एक प्रकार का अद्भुत भाव होगया था। सरजू बच्चे को

मलिनाकी गोदमें देकर पंखेसे मलिनाको हवा करने लगी। इसी बीचमें उसने देखा कि मलिना के चेहरे पर मृत्यु की छाया छा गई है यह देखकर वह चिल्ला उठी। उसका चिल्लाना सुनकर मलिना की मां ने आकर देखा कि मलिना के प्राण-पखेरू उसके देह पिंजर को शून्य करके चले गये हैं। मानो बच्चे को चुम्बन करने के लिये ही मलिना अपने को अब तक रक्खे हुए थी।

समाज और संसार तू धन्य है।



विधवा विवाह।



इसके पहिले कि हम इस विषय पर अपने स्वतन्त्र विचार प्रगट करें हम साफ़ तौर से पाठकों को विश्वास दिला देना चाहते हैं कि भारत की विधवा बहिनोंके चरित्र को दूषित ठहराना हमारा उद्देश नहीं है पर साथ ही हम इस दुख भरे विषय पर प्रमाण सहित, बहुत ही निष्पक्ष होकर और स्वतन्त्रता पूर्वक अपने विचार प्रगट करेंगे।

इस समय भारत में क़रीब तीन करोड़ हमारी विधवा बहिनें कूड़े कर्कट की तरह मारी मारी फिर रही हैं, और जो प्रायः घृणा की दृष्टि से देखी जाती हैं, उन्हें शादी विवाह और अन्य शुभ अवसरों पर इतनी आज्ञाभी नहीं मिलती कि वे स्वतन्त्रता पूर्वक घर के काम काज भी कर सकें! ऐसे अवसरों पर उनसे स्पर्श करना सोहागिन स्त्रियाँ घृणित समझती हैं।

कुसमय उन्हें वैधव्य-दुख के देने वाले हम और आप ही हैं। यह बात माननी ही पड़ेगी कि बाल-विवाह और वृद्ध-विवाह अथवा ठीक जोड़ न मिलने के कारण ही विधवाओं की संख्या भारत में दिन पर दिन बढ़ती जा रही है।

"नवजीवन" में विधावओं के विषय में मि० खाण्डेलवाल ने एक लेख लिखा है उसमें उन्होंने समस्त भारत को मनुष्य

संख्या से निम्न लिखित अङ्क दिये हैं। मुसलमान और हिन्दुओंमें विधवाओं की संख्या साथ व अलग अलग, नीचे दी जाती हैं :—

उम्र	विवहित बालिकायें	विधवायें
१ महीने से १२ महीने तक	१३,२१२	१७,०१४
१ वर्ष से २ वर्ष तक	१७,७५३	८५६
२ ,, ३ ,,	४९,७८७	१,८०७
३ ,, ४ ,,	१,३४,१०५	९,२७३
४ ,, ५ ,,	३,०२,४२५	१७,७०३
५ ,, १० ,,	२२,१९,७७८	९४,२४०
१० ,, १५ ,,	१,००,८७,०२४	२,२३,०३२

उम्र	हिंदू विधवायें	मुसलमान विधवायें
१ महीने से १२ महीने तक	८६६	१०९
१ वर्ष से २ वर्ष तक	७५५	६४
२ ,, ३ ,,	१,५६४	१६६
३ ,, ४ ,,	३,९८७	५,८०६
४ ,, ५ ,,	७,६०३	१,२८१
केवल ५ वर्ष की	१४,७७५	२,१३३
५ से १० ,,	७७,९८५	२४,२७६
१० ,, १५ ,,	१,८१,५०७	३६,२६४

भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें विधवाओं की संख्या इस प्रकार है :—

बंगाल	१७,५८३
बिहार	३६,२७५
बम्बई	६,७२६
मद्रास	५,०३८
यू० पी०	१७,२०९
बरोदा	७८३
हैदराबाद	६,७८२

इन संख्याओं पर महात्मा गाँधी ने यह टिप्पणी की है:— "जो इन अङ्कों को पढ़ेगा वह अवश्य रोवेगा, अन्धेर सुधारक यह कहेंगे कि विधवा विवाह इस रोग की सबसे अच्छी औषधि है। किन्तु मैं यह नहीं कह सकता। मैं बाल बच्चों वाला आदमी हूं। मेरे कुटुम्ब में भी विधवायें हैं। किन्तु मैं उनसे यह कहने का साहस नहीं कर सकता कि तुम पुनर्विवाह कर लो, पुनर्विवाह करने का खयाल तक उनके दिल में न आवेगा। इसका मतलब यह कि पुरुष यह प्रतिज्ञा कर लें कि हम पुनर्विवाह न करेंगे। किन्तु इसके अलावा और भी उपाय हैं जिनको हम काम में नहीं लाते, नहीं उन्हें हम काम में लाना ही नहीं चाहते, और वे यह हैं :—

(१) बालविवाह एकदम रोक दिया जावे।

(२) जब तक पति और पत्नी इस अवस्था तक नहीं पहुंचें

कि एक दूसरे के साथ रह सकें तब तक उनका विवाह न होना चाहिये ।

(३) जो बालिकायें अपने पति के साथ नहीं रही हैं, उन्हें केवल विवाह करने की आज्ञा ही नहीं किन्तु पुनर्विवाह करने के लिये उत्साहित भी करना चाहिये। ऐसी लड़कियों को विधवा ख़्याल ही न करना चाहिये।

(४) वे विधवायें जिनकी अवस्था १५ साल से कम है या जो अभी जवान हैं उन्हें पुनर्विवाह करने की इजाज़त देनी चाहिये। और

(५) विधवा को लोग अशुभ समझते हैं किन्तु इसके विपरीत उसे पवित्र समझना चाहिये और उनका सन्मान करना चाहिये । और

(६) विधवाओंकी शिक्षाके लिये उचित प्रबन्ध होना चाहिए

महात्मा गांधी ने इस विषय पर कितनी उत्तमता से अपने विचार प्रगट किये हैं। यह बात आप स्वयं समझ सकते हैं

विधवाओं की संख्या प्रतिदिन बढ़ने से देशको क्या क्या हानियां पहुंच रही हैं ? भारत में व्यभिचार की मात्रा कितनी अधिकता से बढ़ रही है इसपर कुछ कहना अनुचित न होगा। सब से पहिले हम पाठकों का ध्यान वेश्याओं की ओर आकर्षित करना चाहते हैं ।

पहिले हम भारत में सबसे बड़े और भूमण्डल के प्रधान बारहवें या यों कहिये, कि बृटिश राज्य के, जहां कि चौबीसों

घंटे सूर्य अस्त नहीं होता, दूसरे नम्बर के शहर का दृश्य दिखायेंगे।

सन् १८५२ ई० में कलकत्ते में कुल १२४१९ ही वेश्यायें थीं और उनमें केवल हिन्दुओं की तादाद थी १०४६१

सन १८७० ई० में इस शहर में ७९३८ हिन्दू, ११६२ मुसलमान, ५६ यूरेशियन, ५ यूरोपियन और ३५ यहूदिन आदि वेश्यायें थी।

सन् १९११की मर्दुमशुमारीकी रिपोर्ट से पता चलता है कि कलकत्ते शहर में १४,२७१ वेश्यायें कलकत्ते की कुल स्त्रियों में से जिनकी बीस वर्ष से ४० वर्ष तक की उम्र है, थीं याने प्रत्येक १२ स्त्रियों में एक वेश्या है। १२ से २० तक की आयु की स्त्रीयों में प्रति सैकड़ा ६ वेश्यायें हैं और १०९६ वेश्या लड़कियों की आयु १० वर्ष से भी कम है! ९० फ़ी सदी वेश्या हिन्दू हैं।

यह दृश्य केवल कलकत्ते शहर ही का है, इस खुले व्यभिचार की सामग्री भारत के कोने कोने में पाई जाती है। बम्बई की White Street (सफेदगली) लाहौर की अनार-कली, दिल्ली का चावड़ी बाज़ार, लखनऊ और इलाहाबाद के खास चौक, पाप मोचन काशी नगरी की दालमण्डी और अमृतसर का सराफ़ा आदि तो इनका केन्द्र ही कहा जाता है। खास जगन्नाथपुरी के मन्दिर के भीतर वेश्यायें अपनी धुन में घूमा करती हैं, यह लेखक के आंख की देखी बात है।

बड़े बड़े तीर्थस्थानों पर तो इनके खास अड्डे भी हुआ करते हैं।

भारतके कुल शहरों की वेश्याओं की संख्या जो मर्दुमशुमारी के समय अपना यही पेशा बतलाती हैं ४,७२,९९६ है।

पाठकों को यह भी खास तौर से समझ लेना चाहिए कि यह संख्या केवल उन वेश्याओं की है जो मर्दुमशुमारी के समय अपने मुँह से अपना यह पेशा तसलीम करती हैं। लाखों डर से अथवा लाज से अपना पेशा कुछ और बताती हैं इसलिये उनकी ठीक ठीक तादाद बताना केवल कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

पञ्जाब की हिन्दू सभा लिखती है कि:-

"इस प्रान्त में प्रत्येक मुख्य शहर में व्यभिचार के लिए लड़कियों की खरीद और फरोख्त बढ़ रही है। सन् १९११ में प्रान्तीय लाट महोदय ने इस बात को तसलीम किया है"

नैनीताल, भीमताल और तल्लीताल आदि अनेक स्थानों पर व्यभिचार खुले तौर से पाया जाता है। भारत के प्रायः सभी पहाड़ों पर, प्रत्येक कन्दरा में, पहाड़ियों की चोटी पर, नहर के पीछे, तालाब के बगल में जहां कहीं भी आप जावें आपको खुले व्यभिचार का यह दृश्य बड़ी सुगमता से देख पड़ेगा। क्या यह केवल सामाजिक कुरीतियों ही का फसाद नहीं है? क्या विधवाओं का पुनर्विवाह न होना बहुत दर्जे तक कुरीइनतियों को स्थिर करना नहीं कहा जा

सकता? इस अभागे देश में समाज का ऐसा कड़ा नियम है और इसके लिये सज़ायें भी इतनी कड़ी रक्खी गई हैं कि ऐसे व्यभिचार का दिनोंदिन बढ़ना कुछ आश्चर्य्य नहीं।

हम ऊपर केवल खुले व्यभिचार का ही व्योरा पाठकों को भेंट कर सके हैं अब रहा गुप्त व्यभिचार सो उसके बारे में कुछ विशेष न कहकर केवल "देश दर्शन" की कुछ पंक्तियां ज्यों की त्यों हम आपके सामने रक्खे देते हैं:-

सब से ऊपर भारत में २ करोड़ ६४ लाख से अधिक विधवायें हैं। मैं इनके आचरण पर आक्षेप नहीं करता, पर विचार करने की बात है कि इनमें से प्रायः सभी मूर्खा हैं। वेद, शास्त्र, धर्म और ज्ञान से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। केवल यह जानती हैं कि उनके कुल में विधवा विवाह नहीं होता उन्हीं का हृदय यह प्रश्न करता है कि क्यों नहीं होता? इसका वे कुछ उत्तर नहीं दे सकतीं केवल भाग्य में लिखा है। करम फूट गया है' कहकर मन की तरङ्गों को शान्ति करती हैं। पर इन स्त्रियों की शैतान पण्डों पुरोहितों या ऐसे ही अन्य पाखण्डियों से भेंट हो जानेपर और मौक़ा मिलने पर, भाग्य के बल से यह कबतक कामदेव से लड़ सकती हैं? आख़िर तो मूर्खा स्त्री ही ठहरी न। उनकी कमज़ोरी उन्हें यह समझा कर सन्तोष कर लेने के लिए लाचार कर देती है कि यह दुराचार भी विधाता ने उनके भाग्य में लिख रक्खा होगा।" वे स्वयं धर्म्मच्युत नहीं हो रही हैं बल्कि यह उनके दुर्भाग्य

का परिणाम है। जिस दुर्भाग्य ने उन्हें जर्जरपति की पत्नी बनाया और उसे भी न रहने दिया, वही भाग्य पिशाच उन्हें आज गढ़े में फेंक रहा है। चलो यह भी सही "विधि का लिखा को मेटन हारा" बस ख़तम। हां, यह बात अवश्य है कि कहीं बात खुल न जाये नहीं तो जन्म जन्मान्तर, पुश्त दर पुश्त के लिये ख़ान्दान भर को जातिच्युत होना पड़ेगा। सो इसके लिए जबतक तीर्थ यात्रा के लिए द्रव्य, पापों के धोने के लिए बड़ी बड़ी नदियां, घर में पुरानी चाल की सन्डासें या अन्धे कुएँ मौजूद हैं, इसका भी भय नहीं"। लेखक ने आगे कुछ उदाहरण भी दिये हैं:-

"विश्वबन्धु के मकान के पास ही एक कुलीन ब्राह्मण महाशय का घर था। उनके यहां एक परम रूपवती विधवा थी। उनके यहां परदे का बड़ा नियम था तो भी विश्वबन्धु उनके यहां बे रोक टोक जाया करते थे, कुछ दिनों के बाद जब न जाने क्यों ब्राह्मण महाशय ने मकान छोड़ देने का निश्चय किया तब विश्वबन्धु ने अपनी मां से कह सुन कर उस मकान को ख़रीद लिया, ब्राह्मण महाशय सपरिवार अपने देश (कन्नौज) चले गये और उस मकान की मरम्मत शुरू हुई। एक कोठरी जिसे पण्डिताइन, "ठाकुर जी की कोठरी" कहा करती थीं और जो साल में केवल कुलदेव की पूजा के समय खोली जाती थी, (बड़ी सड़ी नम और बदबूदार थी) उसे पक्की करा देना निश्चय

किया, जब मिट्टी को मज़दूर खोदने लगे सुना जाता है कि उसमें से एक ही उम्र के कई बच्चों के पन्जर निकले, एक तो हाल ही का दफ़नाया जान पड़ता था। लेखक का फिर कहना है:—

"सिविल सर्जन साहब जेल और अस्पताल आदि से लौट कर लगभग एक बजे बंगले पर आये मेज़ पर तार मिला जिसका आशय यह था 'रोगी सख़्त बीमार है जल्दी आने की कृपा कीजिये–देवदत्त।" साहब बड़े दयालु थे। उसी समय घोड़े पर सवार हो कर रवाना हो गये। उन्होंने देवदत्त के घर जाकर पूंछा कि रोगी कहां है? देवदत्त हांफते हांफते आये और बोले हुज़ूर बड़ी ग़लती हुई माफ़ कीजिये। साहब ने डपट कर पूंछा कि रोगी कहा हैं? देवदत्त गिड़गिड़ाते हुए साहब के हाथ में फ़ीस रख कर पैरों पर लोट गये और गर्भपात (Abortion) की दवा पूंछने लगे। साहब लाल हो गये। ज़मीन पर ज़ोरसे पैर पटक कर छिः कहकर लौट गये बंगलेपर पहुंचकर उन्होंने इस बातकी सूचना पुलिस कप्तान के पास भेज दी।

उसी दिन रात को देवदत्त की चचेरी बहिन अकस्मात मर गई और रातोंरात चिता पर भस्म कर दी गई। यह विधवा थी। कई दिनों के बाद देवदत्त की तलबी कोतवाली में हुई। सुना जाता है कि वहां के देवता ने अपनी पूजा पाई और रिपोर्ट में लिख

दिया कि देवदत्त प्रतिष्ठित रईस हैं। उस दिन उनकी बहिन को हैज़ा हो गया था इसी लिए साहब को बुलवाया था। वे Abortion नहीं बल्कि बन्धेज की दवा पूंछना चाहते थे और यह कानूनन् कोई जुर्म नहीं है।

यह दोहरे खून का नमूना है। यहां तो समाज में जब तक बात छिपी है तब तक सब ठीक है और यदि खुलने की नौबत आई तो बस 'विष' या 'त्याग'—लेजा कर कहीं दूर के शहर में या तीर्थस्थान में छोड़ आये। कुछ दिनों तक मोहब्बत के मारे कुछ खर्च भेजा और फिर बन्द कर दिया। ऐसी अनाथा स्त्रियों की क्या दशा होती होगी उसे पाठक स्वयं विचार सकते हैं। कुछ विधवाओं के बयान नीचे दिये जाते हैं:—

(१) रामकली, विंध्याचल—"मैं क्षत्रानी हूं। मेरे भाई दर्शन कराने के बहाने से मुझे छोड़ गए। उनके इस तरह त्याग का कारण मैं समझ गई। इस लिये मैंने कभी पत्र नहीं भेजा और न लौटने की चेष्टा की। अब भीख मांग कर अपनी गुज़र करती हूं मैं सर्वथा असहाय हूं और कोई ज़रिया पेट पालने का नहीं है। उमर २०–२२ वर्ष की है। यहां मुझसी अभागिनी ८–९ स्त्रियां और हैं। उनका चरित्र ठीक नहीं है।"

(२) लक्ष्मी, वृन्दावन—"मैं ब्राह्मणी हूं। मेरी सास आदि कई स्त्रियां मुझे यहां छोड़ कर चल दीं। पत्र भेजने

पर उत्तर मिला कि अपना कर्तव्य स्मरण करो यहां लौट कर क्या मुंह दिखाओगी, वहां जमुना में डूब मरो। मेरी मां नहीं है। पिता ने मेरे पत्र का कभी उत्तर नहीं दिया।"

(३) श्यामा, हरिद्वार–मेरे पिता मुझे यहां छोड़ गये हैं...

(४) राजदुलारी, गया—"मेरे ससुराल के लोग बड़े धनी हैं। यहां मुझे पुरोहित जी छोड़ गये हैं। कुछ दिनों तक पांच रुपया मासिक आता रहा। पर अब कोई खबर नहीं लेता, पत्रोत्तर भी नहीं आता"।

(५) नलिनी और सरोजनी, काशी—"हम दोनों अभागिनें बंगाल की रहने वाली हैं। हम दोनों का एक ही घर में विवाह हुआ था। नलिनी विधवा होगई। मेरे पति मुझे एक लड़की होने पर वैराग लेकर चल दिये। मेरे ससुर जो १०) मासिक पेनशन पाते थे काशी–वास करने यहां आये और हम दोनों को साथ लेते आये। तीन महीने बाद वह मर गये। एक परिचित बंगाली महाशय सहायता देने के बहाने से मिले और एक दिन हम दोनों का जेवर चुरा ले गये। फिर इसी से लगी हुई पुलिस की एक घटना से बलपूर्वक हम अनाथों का सर्वनाश किया गया और इस दीन हीन दशा को पहुंचाई गई। एक सौ और बीस रुपया कर्ज़ हो गया है। इस पुत्री के सयाने होने पर इसी को बेच कर अथवा वैश्या बनाकर क़र्ज़ अदा करूंगी"।

समाज तू धन्य है! बिरादरी के ज़ोम में भरे हुए अन्धो

से हम पूंछते हैं कि आख़िर इन दशाओं का, इन व्यभिचारों का और देश को रसातल पहुंचाने वाली इन सामाजिक कुरीतियों का ज़िम्मेदार कौन है?

जिन वैश्याओं और जिन बहिनों के बारे में ऊपर इतना कुछ कहा जा चुका है यह वेश्यायें कौन हैं? यह लाला बाबुओं और सेठ साहूकारों के घरों की विधवायें हमारी ही बहिनों और बेटियों के सिवा और कौन हैं? हमारी नीचता हमारी कठोरता और हमारी असावधानी ही इन सब पापों की ज़िम्मेदार है। हमारे 'नाक कट जाने' के भय की दोहाई देने वाले और विधवा विवाह के विरोधियों से हम साफ़ तौर से पूंछना चाहते हैं कि आख़िर इन मन्दिरों के भीतर, तीर्थस्थानों पर, धर्मशालाओं में, पाप नाशिनी गंगा के तट पर, पुराने मकानों के खंडहर में, रानी महारानियों की कोठियों में और इस भारत की भूमि के चप्पे चप्पे पर जो यह घोर व्यभिचार, आत्म हत्यायें और भ्रूण हत्यायें आदि देखने में आ रही हैं और दिन दिन अपना विकराल रूप धारण कर रही हैं क्या धर्म्मानुकूल विधवाओं का पुनर्विवाह इससे भी बुरा है?

अभी हाल की बात है एक रानी साहब ने अपनी एक बंगाली मित्र (स्त्री) को इस आशय का एक पत्र लिखा था:—

"बहिन..............तुमने कई बार मुझसे ऐसे प्रश्न किये हैं जिनसे मैं अत्यन्त लज्जित हूं पर आज मैं तुम्हें अपनी

कहानी जी खोल कर सुनाऊंगी.......................................

......मैं १२ वर्ष की अवस्था ही में विधवा हो गई अपने पति की मैं तीसरी स्त्री थी ! वे जीवन पर्यन्त वेश्याओं के हाथों की कठपुतली बने रहे। उनमें और भी कई दुर्व्यसन की शिकायतें थीं। पर थे तो मेरे धैर्य्य धरने को यही बहुत था। उनके देहांत के बाद जब मैंने १६ वर्ष में पदार्पण किया तो मुझे जिन कष्टों का सामना करना पड़ा मैं ही जानती हूँ। मैंने अपनी सास से एक दिन बातों बातों में विधवा विवाह की सराहना की, मेरा मतलब यह था कि शायद वह मेरा मतलब समझ सकेंगी। पर वह तो उलटी आग बबूला हो गई और न जाने क्या क्या बकने लगी। मेरे जी में आया कि बुढ़िया का गला घोंट दूं पर जी मसोस कर रह गई क्योंकि वह जानती थी कि जब से मेरा विवाह हुआ मने एक दिन भी पति का मुंह नहीं देखा था। परदे का मेरे यहां बड़ा कड़ा प्रबन्ध था। सन्तरी वरदी तलवार लिये पहरे पर खड़ा रहता था। केवल नौकर चाकर या मेरे सम्बन्धी ही कोठी के भीतर आ सकते थे। मैंने मनही मन अपनी काम वासना को शान्ति करने की बात स्थिर कर ली। पर सोचने लगी कि इन इने गिने लोगों में से किस को अपने प्रेम का पात्र चुनूं ? एक नौकर (बारी) पर एक दिन मेरा दिल आगया। मैंने अपना सर्वस्व उसी को सौंप दिया और यहां से मेरी पाप वासना का 'श्री गणेश'' आरम्भ हुआ। कुछ दिनों के बाद लोग कुछ कुछ

भांप गये। मैंने उसको (बारी को) निकलवा दिया पर मुझे चैन नहीं पड़ा। फिर पति के एक नज़दीकी रिश्तेदार पर मैं मुग्ध हो गई। पर उनसे भी पटी नहीं। फिर रामलाल ख़िद्मतगार से मेरा सम्बन्ध हो गया। कहने का सारांश यह कि केवल बीस साल के भीतर ही क़रीब तीस व्यक्तियों का आश्रय मैंने लिया। पर किसी से भी मैं सन्तुष्ट नहीं हुई। अन्त में एक दिन मैंने मन ही मन बड़ा पश्चात्ताप किया। अपने को धिक्कारा भी बहुत पर मैंने अपने को अन्त में दोषी नहीं पाया इन कुल व्यभिचारों का दोष मैंने समाज के सर छोड़ा; मैं पहिले ही पुनर्विवाह करना चाहती थी, वह क्यों नहीं किया गया? क्या जहाँ पानी नहीं होता वहाँ प्यास भी नहीं लगती? उस दिन बजाए इसके कि मैं अपने किये पर पश्चात्ताप करूं, मैं नित्य नया आनन्द लूटने लगी, पर मेरी पापात्मा को शान्ति कभी भी प्राप्त नहीं हुई। कहते लाज आती है कि चौदह बार मुझे गर्भ रह चुका पर बनारस आदि से दाइयें बुलवा कर मुझे खासी भ्रूण हत्यायें करनी पड़ीं। पर मेरा स्वास्थ का भी अन्त नहीं हुआ। जिस प्रकार विधवाओं को शास्त्रानुकूल रहना चाहिए मैं ठीक उसके विपरीत रहती भी थी। मैं नित्य कामोत्पादक वस्तुएं रोज़ खाती। मेरा आहारादि भी, कहने की ज़रूरत नहीं, रानियों ही की तरह होना चाहिए। शास्त्र में लिखा है कि विधवाओं को एक बार भोजन करना चाहिए वह भी रींधा हुआ चावल, लपसी

और केवल एक साग। सोना चाहिए तख़्त पर अथवा ज़मीन पर सोना चाहिये, कम्बल ओढ़ना चाहिये और कफ़नी पहिननी चाहिए। पान इत्र आदि से परहेज़ करना चाहिये इत्यादि। अब मैं अपना क्या कहूं प्रातःकाल ४१ बादाम और आध सेर दूध बंसलोचन और इलायची आदि डालकर पीती हूं फिर हलुआ या ऐसी ही कोई पुष्ट चीज़ ९ बजे खाती हूं। दोपहर को रसोई और खीर वगैरह, फिर सो रहती हूं। मेरा पलंग कलकत्ते के Whiteway Laidlaw के यहां से ५८०) रुपये में आया है। उस पर से तो उठने का जी नहीं चाहता। फिर शाम को शर्बत आदि पीती हूं। मेरे कहने का मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि भला यह खूराक आदि खा कर कौन ऐसा पुरुष अथवा स्त्री है जो अपने को वैधव्य में सम्हाल सके? हां एक बात तो कहना मैं भूल ही गई। मैं कम से कम पांच छः सौ पान प्रति दिन खाती हूं, यहां तक कि मेरे दांत घिस गये हैं। मेरी अवस्था इस समय ५० वर्ष के ऊपर है पर मैं अब भी उन युवतियों के कान काटती हूं जिनको १५ या १६ वर्ष की नवयुवती होने का घमण्ड है। ...... तुमसे कोई बात छिपी तो है नहीं? आज कल मेरा सम्बन्ध एक......से है पर नहीं कह सकती कि यह प्रेम कब तक क़ायम रहेगा। मैंने भी प्रतिज्ञा कर ली है कि अब मैं बदनाम तो काफ़ी से ज्यादा हो चुकी हूं। मेरे बहुतेरे सम्बन्धियों ने भी मुझे छोड़ दिया है और जो आते जाते हैं उनको मुझ से 'पैदा' की आशा है।

धन मेरे पास काफ़ी है और ऐसा है कि अभी हजारों वर्ष इस दौलत पर चैन कर सकती हूं। बहिन! क्या करूं मेरे हृदय में अग्नि दहक रही है। मैं भीतर से तो समझती हूं कि घोर नरक की यातना है पर बिना लिखी पढ़ी हूं। कथा पुराण मैंने बहुत सुने हैं। पूजा भी वर्षों की है पर आत्मा को शान्ति नहीं। फिर सोचती हूं कि मनुष्य का चोला बार बार थोड़े ही मिलता है। पर साथ ही बहिन मैं साफ़ ही कहे देती हूं कि यदि मेरा विवाह दुबारा हो गया होता तो आज मैं ऐसी व्यभिचारिणी कदापि न होती। पर यह मैंने इतना उपद्रव किया है, जान बूझकर इस लिये कि हमारे बिरादरी वाले देखें और मुझ से सबक़ लें। नवयुवतियों का, जो विधवा हैं और जिन को पति की आवश्यकता है, उनका पुनर्विवाह करें और इस पापमय जीवन से उनकी रक्षा करें। मुझे आशा है कि मेरी कहानी से लोग ज़रूर सबक़ सीखेंगे और यदि वास्तव में ऐसा हुआ तो मेरी आत्मा बहुत कुछ शांति लाभ कर सकेगी और तभी मैं अपने दुष्कर्मों का प्रायश्चित करूंगी। पर बात गुप्त रखना, नहीं तो लोग मुझसे नफ़रत करेंगे। बहिन! यदि लोग मुझे प्रेम से वश किये होते तो क्या ही अच्छा होता? तुम्हारी........ता: ५-१९१७ रानी......"

इस पत्र का उत्तर बङ्गालिन स्त्री ने यह दिया था:—

"रानी बहिन नमस्ते,

तुम्हारा पत्र मिला! जितनी बार पढ़ती हूं उतना ही

आनन्द और दुःख दोनों ही होते हैं। मैं आपके प्रेम की पात्र हो सकी यह जानकर मुझे बड़ा ही हर्ष हुआ। आप जानती हैं कि मैं भी इस वेदना का बहुत नहीं तो कुछ अंशों में अवश्य अनुभव कर चुकी हूं और करती भी हूं। मेरा विवाह कब हुआ और मेरे पति देवता कब चल बसे इसका मुझे ज्ञान भी नहीं है। मेरी अवस्था केवल सात वर्ष की थी, जब ही मेरा सब कुछ हो चुका था। पर पिता जी ने मेरी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। मैंने १० वर्ष तक संस्कृत अध्ययन करने से बहुत कुछ सीखा और देखा भी। मेरे पिता पुनर्विवाह के पक्ष में थे और मैंने स्वयं ऐसा करना उचित तो समझा पर किया नहीं। मैंने मन ही मन इस बात की प्रतिज्ञा अवश्य की कि आजीवन मैं अपना तन मन इस आन्दोलन में लगाऊंगी कि मेरी अन्य बहिनों का कष्ट नाश हो सके। मैं परमात्मा का स्मरण करती थी। घण्टों प्रार्थना करती थी कि मुझ में इतना बल दे कि मैं अपने कठिन व्रत को कुछ अंशों में पूरा कर सकूं। आपको यह जान कर हर्ष होगा कि मैं बहुत कुछ करने में सफल हो सकी। इस समय मेरी अवस्था ४२ साल की है। मैं अन्य बहिनों से विशेष संतुष्ट हूं। समय समय पर मुझे अपार आनन्द प्राप्त होता है।

पुरुष को अपनी बुद्धि के अनुसार परमात्मा का ज्ञान होता है, ज्यों ज्यों परमात्मा की कृपालता, दयालता और

प्रेम को अपने चित्त में स्थापन करके उसे अनुभव करता है त्यों त्यों वह सर्वशक्तिमान परमात्मा के समीप होता जाता है।

मैं भी आज दिल खोल कर अपना हाल कहूंगी, पर आपके चरणों की शपथ खाकर कहती हूं वास्तव में मैं प्राणीमात्र को देवता समझती हूं और उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य।

मैंने आपका पत्र पढ़ा, और कई बार पढ़ा। आपके चित्त की स्पष्टता और सच्चाई देख कर मैं गद्गद् हो गई हूं। आपने सच्चे दिल से अपने हार्दिक भावों को मुझ पर बड़े ही मार्मिक शब्दों में प्रगट किया है। मैं आपको सादर एक सलाह दूंगी या यों कहिये कि आप का सर्वनाश करूंगी।

आप जानती हैं कि संसार भर के भाग्य का निपटारा होने ही वाला है। भारत की जानों की भी बाजी लगी हुई है, विजयलक्ष्मी भारत माता की गोदमें कब आवेगी यह कोई नहीं कह सकता, पर उद्योग करना भारतीय मात्र का, चाहे वह स्त्री हो वा पुरुष, लक्ष्य होना चाहिये। समय बड़ा उत्तम है। मैं जानती हूं कि आपके पास जंघम सम्पत्ति अपार है और गो आप उसे बेंच नहीं सकतीं पर साथ ही मैं यह भी जानती हूं कि नक़दी भी अपार है। मेरी राय में, यदि आप उचित समझें, तो यह कुल धन राष्ट्रीय कोष में मेरा पत्र पहुंचते ही दान दे दें। स्वयं स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करें। अपने नौकर चाकर और अन्य सम्बन्धियों को भी यही सलाह दें।

अपना रहन सहन बड़ा ही सीधा और सरल कर लें। हर साल आप को एक लाख के ऊपर धन मिलेगा उसे आप किसानों की उन्नति में व्यय करें। यही सब कार्य ऐसे हैं जिनसे इस पाप का वास्तविक प्रायश्चित हो सकेगा और आपकी आत्मा शांति लाभ कर सकेगी।

परमात्मा को शाक्षी देकर आप को सच्चे दिल से अपने इन कामों के लिये पछताना होगा तभी आप में धैर्य्य और आत्म शक्ति का संचार होगा। अपने चित्त को सदैव शुद्ध और एकाग्र रखना नितान्त आवश्यक है।

मैं आपको शिक्षा नहीं देती, नहीं दे ही नहीं सकती। आप स्वयं बड़ी हैं बुद्धिमान हैं और यदि ज़रा भी ध्यान दें तो बड़ी सरलता से समझ भी सकती हैं। आपके पत्र द्वारा मैं स्पष्ट रूप से समझ सकी हूं कि आप अवश्य ही इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगी।

सदैव आपकी—

....

ज़रा सोचिये तो सही केवल 'नाक कट जाने' के भय से अथवा 'भाग्य में लिखा है' इसकी दोहाई देकर आप करोड़ों विधवाओं का जीवन नष्ट कर रहे हैं। आप प्रतिदिन खून करते हैं। भ्रूण हत्या के रक्त से आप के हाथ रंगे ह। आप प्रति दिन खून करते हैं पर उनको तो आप छिपाते हैं और 'डायर' और 'ओडायर' के अमानुषिक व्यवहारों को गीत

आप जगह जगह गाते फिरते हैं । क्या इन बातों को सामने रखते हुये आप 'डायर' के चचा नहीं हैं ?

भला भाग्य बेचारे का इसमें क्या दोष है ? दोष इसमें सरासर आपका है । जान बूझकर और इन दूषित परिणामों को देखते हुए भी हम "विधवा विवाह" के नाम से ऐसे डरते हैं जैसे 'हौवे' के नाम से बच्चा । यह अन्धेर देखते हुए भी हम कानों में तेल दिये बैठे हैं और इसमें दोष देते हैं "भाग्य" का ।

मान लीजिये आप कठिन रोगसे पीड़ित हैं । यदि आप के नातेदार अथवा इष्टमित्र आपकी सेवा चिकित्सा आदि न करके केवल यह कहकर छोड़ दें कि "भाग्य का दोष है" तो भला आपका दिल क्या कहेगा? आप तो रोवेंगे चीखें मारेंगे डाटेंगे डपटेंगे, ज़मीन आस्मान एक कर डालेंगे, और जो कुछ आप अपने लिये कर सकते हैं करेंगे । पर उसके विपरीत हमारी विधवा बहिनों का यह कष्ट "गूंगा" होता है । वे लज्जावश ज़बान तक नहीं हिला सकतीं ।

अपने दुःखों को मन ही मन पीती हैं । उन के दिल में जो जो तरंगे उठती हैं यह बात वे ही भली भांति जान सकती हैं । हम और आप नहीं ।

भारत इस समय उन्नति का मार्ग ढूंढ रहा है । स्वतंत्रता का नवीन युग प्रत्येक बालक तक के हृदय में असावधानी पैदा कर रहा है । पुराने रीति रिवाजों को छोड़ कर

वर्तमान समय के अनुकूल ही अपने भाग्य के निपटारे में लग रहे हैं। नये नये आविष्कारों का आगमन प्रतिदिन हमें प्रसन्न कर रहा है। नई बातों की खोज और दूषित प्रथाओं का अन्त हो रहा है। नवीन युग का आगमन है। भारतमाता अपने पैरों पर आप खड़ी हो रही हैं। ऐसे उन्नति और विकास के समय भी यदि इन सामाजिक कुरीतियों का अन्त न हुआ तो इसका परिणाम बड़ा ही भयंकर और नाशकारी सिद्ध होगा। यह बात किसी से छिपी नहीं है। विद्वानों का कथन है:—

"Progress is made more economically by rational than by natural selection, and the time has arrived for man to control his own evolutions instead of leaving it to the blind forces of nature."

अर्थात्—"संसार में प्रकृति के नियमों की अपेक्षा विवेक से काम लेने से शीघ्र और सरलता से उन्नति हो सकती हैं। मनुष्यों के लिये अब ऐसा समय उपस्थित हुआ है कि "दैवेच्छा बलीयसी" के भरोसे न रहें बल्कि अपने विवेक से प्रकृति के नियमों को ढूंढ़ निकालें।"



अबला।



जेठ का महीना है, प्रातः काल का समय है किन्तु अभीसे अखण्ड मार्तण्ड अपनी प्रचण्ड किरणों द्वारा सारी पृथ्वी को तपाने की चेष्टा कर रहे हैं। पक्षी तथा पशुगण वृक्षों को सुखद छाया में बैठने के लिए स्थान तलाश कर रहे हैं।

इसी समय एक बालक चौपाल में बैठा हुआ एक बालिका को पढ़ा रहा है। बालक अपने कार्य में बड़ा ही परिश्रम कर रहा है तथा बालिका भी अपने पाठ को बड़े ही ध्यान से सुन रही है। दोनों ही अपने अपने कार्य में निमग्न हैं।

उक्त बालक का नाम रूपकिशोर है। इस की अवस्था लगभग सोलह साल की होगी। देखने में भी यह स्वरूपवान है। बालिका इस से चार साल छोटी है इस का नाम जयदेवी है। यह बड़ी ही शान्ति तथा शीलवान् है। इसका मुख गुलाब के पुष्प सदृश सुन्दर है।

जयदेवी शिवनाथ शर्म्मा की एकमात्र कन्या है। शिवनाथ की स्त्री की उम्र जिस समय पैंतीस साल की थी उस समय उन्होंने यह कन्यारत्न प्रसव किया था। इसके बाद कई वर्ष व्यतीत हो गये कोई सन्तान नहीं हुई। अतएव इसी लिए जयदेवी शिवनाथ की जीवन सर्वस्व है।

शिवनाथ शर्म्मा पुराने ढंग के आदमी हैं। यह बड़े ही कुलीन तथा निष्टावान हैं। इसी लिये पाश्चात्य सभ्यता का विकास अभी तक इनके हृदयमें नहीं हुआ है अंग्रेज़ी वर्णमाला के टेढ़े मेढ़े हरूफों को देख कर यह बड़े ही भयभीत होते हैं। यह सब कुछ होते हुये भी समाज में इनके सम्मान की कमी नहीं है। स्त्री-स्वाधीनता, स्त्री शिक्षा, तथा विधवा-विवाह इत्यादि के यह कट्टर द्रोही हैं। किन्तु समाज की गति देखते हुये यह अपनी कन्या को शिक्षित बनाने के लिये बाध्य हैं। आज कल विवाह शादियों में अन्य बातों के पूछने के साथ ही साथ लोग यह भी प्रश्न करते हैं कि कन्या पढ़ी लिखी है या नहीं इन्हीं कारणों से इच्छा न रहते हुये भी यह उसे शिक्षा दे रहे हैं। पर सनक हो तो ऐसी, अंग्रेज़ी सभ्यता की हवा लग जाने के भय से, गांव में कन्या विद्यालय होते हुये भी शर्म्मा जी जयदेवी को वहां नहीं भेजते। एक दरिद्र तथा असहाय बालक को रखकर घर पर ही पढ़ाने का प्रबन्ध कर दिया है। यही दरिद्र बालक रूपकिशोर है।

रूपकिशोर के माता पिता उसे छोटी अवस्था में ही छोड़कर इस संसार से चल बसे। उस समय रूपकिशोर की अवस्था बड़ी ही शोचनीय थी। उसका कोई भी सहायक न था। पड़ोसी के अनाथ बालक को देखकर शिवनाथ का हृदय द्रवित हुआ। वे उसे अपने यहां लिवा लाये और पुत्रवत उसका पालन करने लगे। शिवनाथ की स्त्री उसे

बड़े आदर से रखती थी। इसका कारण यह था कि तब तक उनके कोई भी सन्तान नहीं हुई थी। उसका लाड़ प्यार देखकर पड़ोसी यह कहते थे कि, 'शर्म्मा जी ने इसे गोद ले लिया है, अर्थात् इनके मर जाने पर यही इनकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होगा।' पर ईश्वर को यह बात मंजूर न थी। इस घटना के एक साल बाद शर्म्मा जी के एक कन्या हुई। उसके होते ही रूपकिशोर के प्रति शिवनाथ तथा उनकी स्त्री का स्नेह उत्तरोत्तर कम होने लगा।

रूपकिशोर कृतज्ञता के पास से आबद्ध हो, किम्वा अन्य किसी कारण वश हो जयदेवी को बड़े ही यत्न से पढ़ाते हैं। बालिका भी इन्हें बड़ी ही श्रद्धा की दृष्टि से देखती है। इन दोनों में परस्पर बड़ा ही प्रेम है।

पाठ शेष हो जाने पर बालक रूपकिशोर सतृष्ण नेत्रों से एकबार बालिका के कोमल मुख की ओर ताकने लगा। बालिका ने भी सरल दृष्टि से उसकी ओर देखा और मुसकरा दिया। इसकी सरल हंसी को देख कर बालक का चित्त बड़ा ही प्रसन्न हुआ उसने गम्भीरता से कहा—देवी, आज का पाठ शीघ्र याद करना, शाम को सुनाना होगा।

बलिका इसके उत्तर में कुछ कहना ही चाहती थी कि इतने में भीतर से एक दासी ने आकर कहा—जयदेवी शीघ्र आओ, तुम्हारे विवाह के लिये कुछ लोग तुम्हें देखने आये हैं।

दासी की बात सुन कर बालक का हृदय धड़कने

लगा। उसके मुख पर सन्नाटा छा गया। ऐसा क्यों हुआ, यह स्वयम् उसकी समझ में कुछ भी न आया। वह अवाक हो बालिका के मुंह की ओर ताकने लगा। बालिका ने भी सरल दृष्टि से उसकी ओर देखा और हंसती हुई दासी के साथ चली गई।

पूर्व वर्णित घटना के बाद एक मास व्यतीत होगया। आज आषाढ़ मास की चौथ तथा बुधवार है। आज ही जयदेवी का विवाह है। एक व्यक्ति को छोड़ आज शिवनाथ शर्मा के परिवार के सभी लोग आनन्दित हो रहे हैं। ऐसे शुभ अवसर में हर्षित न होने वाला व्यक्ति शिवनाथ का प्रतिपालित दरिद्र बालक रूपकिशोर है। रूपकिशोर अपने चित्त को प्रसन्न रखने के लिये बहुत कुछ चेष्टा करता है, पर सफल नहीं होता। न मालूम इसके अन्तःकर्ण में कौन सी ठेस लगी है।

क्रमशः जैसे ही जैसे दिन का अवसान होने लगा, वैसे ही शर्म्मा जी के परिवार में हर्ष तथा कोलाहल की वृद्धि होने लगी। धीरे धीरे सायंकाल का समय आया, दिन डूबते डूबते बारात आ पहुंची। निश्चित समय पर जयदेवी का विवाह हो गया।

विवाह के तीसरे दिन ससुराल जाते समय जयदेवी रूपकिशोर से मिलने आई। उनके शुष्क मुख की ओर देख कर बालिका ने सरलता से कहा—भइया, तुम्हें हमारे साथ

चलना होगा, यदि तुम न जाओगे तो हम भी न जायंगी ।

रूपकिशोर ने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया । बालिका के अन्तःकर्ण से निकले हुए सरल शब्दों को सुन कर उनका हृदय भर आया, साथ ही नेत्रों में भी आँसू छलछला आये । उन्हें रोते देखकर बालिका का कोमल हृदय काँप उठा, उसने शीघ्रता से कहा—भइया, क्या आपकी तबीयत ख़राब है ? आप रोते क्यों हैं ?

रूपकिशोर ने अपने हृदय के भावों को छिपा कर कहा—देवी हमारी तबीयत अच्छी है तुम चिन्तित न हो इसके बाद मन ही मन कहने लगे--देवी हमारे दुःख का कभी अन्त न होगा हम समस्त जीवन रोयेंगे तुम्हारे लिए नहीं, प्रत्युत तुम्हारे उस भोले प्रेम के लिए कि जिसने सदा के लिए हमारे हृदय में अपना घर बना लिया है ।

इन्हें मौन देखकर जयदेवी ने कहा—यदि तुम्हारी तबीयत अच्छी है तो तुमको हमारे साथ चलना होगा । बगैर तुम्हारे हम वहाँ एक क्षण भी नहीं ··· ··· ।

जयदेवी की बात अभी पूरी न हो पाई थी कि उसी समय एक दासी ने आकर इसका हाथ पकड़ा और बड़बड़ाती हुई उसे अन्दर ले गई ।

कुछ ही क्षण के बाद पालकी में बैठ कर बालिका माता पिता तथा अपने भइया रूपकिशोर के लिए अश्रु बहाती हुई चली गई ।

देखते ही देखते समय पक्षी ने जयदेवो के बाल्य जीवन के सुखकर दिन अपनी पीठ पर लाद कर दूर फेंक दिए। अब जयदेवी निरी बालिका नहीं। वह अपने सुख दुख को भली प्रकार समझने लगी है। विवाह के बाद जयदेवी दो दिन के लिये ससुराल गई थी, बस यही उसका अन्तिम जाना था। इस अल्प समय में ही विवाह की कुल बातें वह भूल सी गई। जिसके साथ उसका विवाह हुआ था भावरों के समय को छोड़कर आज पर्यन्त उसने अच्छी तरह से उसका मुख भी नहीं देखा। ऐसी दशा में क्या उसका स्मरण उसे हो सकता है ?

एक दिन सायंकाल के समय शिवनाथ शर्म्मा अपनी चौपाल में बैठे हुये पड़ोसियों से कुछ बात चीत कर रहे थे, इसी समय एक चिट्ठीरसां आया और एक पत्र जिसका कोना कटा हुआ था शर्म्मा जी के हाथ में देकर चला गया। अशुभ सूचक चिन्ह देखकर शर्म्मा जी का कलेजा कांप उठा। उन्होंने शीघ्रता से उसे पढ़ा। पत्र में बड़ा ही हृदयविदारक समाचार था—चेचक से उनके जामाता की मृत्यु हो गई। यह पढ़कर उन्हें बड़ा ही दुःख हुआ, पड़ोसियों ने भी शोक प्रकट किया। पर क्या किया जाय अभागी जयदेवी के भाग्य में यही बदा था।

जब यह शोक संवाद अन्तःपुर में पहुंचा तो उसे सुनकर जयदेवी की मां एकदम पागल सी हो गई।

उसके रोने की आवाज़ सुन कर धीरे धीरे पड़ोस की स्त्रियां जमा होने लगीं। जयदेवी पड़ोस में ही एक समवयस्क बालिका के साथ खेल रही थी, माता के रोने की आवाज़ को सुन कर वह भी घर आई। इसे देख कर माता और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। जयदेवी माता तथा अन्य स्त्रियों के रोने का कारण कुछ भी समझ न सकी, किन्तु वह भी चुपचाप एक कोने में बैठ कर रोने लगी। इसे रोते देख कर पड़ोस की एक वृद्धा ने समझा कर कहा—चुप रहो बेटी, चुप रहो। तुम्हारे फूटे कपाल में यही बदा था। कहां तक रोओगी? तुम्हारा सारा जीवन रो रो कर ही कटेगा।

"तुम्हारे फूटे कपाल में यही बदा था" यह शब्द बालिका के हृदय में वज्र की तरह जाकर खटके। न जाने क्या सोच कर उसने कई बार अपना कपाल स्पर्श किया। पर वृद्धा के कहे हुये शब्दों का अर्थ यह कुछ भी न समझ सकी।

पड़ोस की आई हुई स्त्रियों के चले जाने के बाद बालिका जयदेवी तथा उसकी माता घर में अकेली रह गईं। कुछ देर शान्ति रहने के बाद जयदेवी अपनी माता को रोती हुई छोड़, अपने प्रिय भाई रूपकिशोर से मिलने के लिये चली गई। वहां जाकर देखा कि, रूपकिशोर करुणा की मूर्ति बने हुए एक कोने में बैठे चुपचाप रो रहे हैं। इन्हें रोते हुये देख कर बालिका ने सोचा कि, निश्चय ही मेरा कपाल फूट गया। यदि ऐसा न होता तो यह क्यों रोते। बालिका

ने अधीर होकर पूछा—आप मेरे लिये क्यों रो रहे हैं? क्या आप भी मुझे हतभागिनी समझते हैं?

जयदेवी का स्वर बड़ा ही करुणोत्पादक तथा मर्मस्पर्शी था। उसे सुन कर रूपकिशोर अपने हृदय के आवेग को रोक न सके, बालक की तरह फूट फूट कर रोने लगे। जयदेवी की बात का कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

इनकी दशा देख कर जयदेवी की अधीरता और भी ज़्यादह बढ़ गई। वह भी इनके पास बैठ कर रोने लगी। उसकी विकलता देख कर रूपकिशोर ने अपने प्राणों को धैर्य दिया, और उसे सान्त्वना देकर बोले—देवी, तुम इतनी अधीर क्यों होती हो, तुम्हें कौन हतभागिनी कहता है? हम तुम्हें विश्वास दिलाते हैं और साथ ही प्रतिज्ञा भी करते हैं कि तुम्हारे दुःखों के दूर करने का उपाय हम शीघ्र ही सोचेंगे।

रूपकिशोर के सान्त्वनामय वाक्य जयदेवी के कानों तक पहुंचे, हृदय शान्त हुआ। बालिका उठ कर खड़ी हो गई और अश्रु भरे नेत्रों से इनकी ओर देख कर बोली—लो मैं अब न रोऊंगी, और आप भी न रोइए। यह कहते समय जयदेवी के मुरझाए हुए मुख पर एक बार कुछ क्षण के लिये मुसकराहट आ गई और साथ ही नेत्रों में रुके हुए अश्रु बिन्दु भी बाहर निकल पड़े।

जयदेवी के चले जाने के बाद रूपकिशोर को उसके

भावी जीवन की भावनाओं ने आ घेरा। हिन्दू विधवाओं के ऊपर सामाजिक अत्याचारों की बात याद आते ही उनका हृदय कांप उठा। वह पुनः विचार में निमग्न हो गये।

समय किसी के सुख दुःख की परवाह नहीं करता। यह नदी के श्रोत की तरह हमेशा प्रवाहित हुआ करता है। इसी तरह जयदेवी के जीवन के पांच वर्ष व्यतीत हो गये। इन गत बर्षों में उसका चित्त बहुत कुछ शांत हो गया है, उसका शान्त मुख हमेसा प्रफुल्लित रहता है। किन्तु माता को रोते हुए देख कर कभी कभी उसके चन्द्र मुख पर मलिनता छा जाती है, वह भी कुछ क्षण के लिए। वह अपनी प्रकृति अवस्था के विषय में कुछ भी नहीं जानती, जानने की चेष्टा भी नहीं करती बाल्यावस्था होने के कारण वैधव्य यंत्र-णाओं से वह बहुत कुछ मुक्त है। जैदेवी की इस अज्ञानावस्था को देखकर रूपकिशोर का चित्त बहुत कुछ शान्त है।

पिता की इच्छा न रहते हुए भी माता ने जयदेवी के अङ्ग से सौभाग्य चिन्हों को दूर नहीं किया। वह हमेशा की तरह अलंकार पहनती, विधवाओं की तरह एकादशी का निरजल ब्रत नहीं रहती, न दिन में एक बार भोजन ही करती है। उसके रहन सहन को देख कर पड़ोस की कुछ स्त्रियां आपस में काना फूंसी किया करती हैं। न जाने क्यों उनका चित्त डाह से जला जाता है। एक दिन प्रातःकाल के समय गांव की कई एक स्त्रियां तालाब में स्नान करती हुई जयदेवी की

आलोचना कर रही थीं। एक युवती ने दुखिया जयदेवी के ऊपर सहानुभूति प्रकट करके कहा—ईश्वर भी बड़ा निर्दई है, वह किसी के बनने बिगड़ने की तनिक भी परवा नहीं करता। देखो बेचारी जयदेवी के ऊपर निरदई को तनिक भी तरस नहीं आया।

इसके उत्तर में एक वृद्धा ने झुंझलाकर कहा—बहू, यह अपने कर्मों का फल है। उसे क्यों दोष देती हो? वह किसी का अशुभ नहीं चाहता। जो जैसा करता है वैसा भरता है।

पहिली ने कहा—यह सही है, पर नहीं, कभी कभी उसे अपने ईश्वरत्व पर बहुत बड़ा घमंड हो जाता है, इसी लिए वह बग़ैर सोचे विचारे ही कुछ का कुछ कर डालता है जयदेवी के साथ उसने जो कुछ अनर्थ किया है यदि मेरा बस चलता तो इसका फल उसे हाथों हाथ चखाती। बेचारी का दुःख देखकर हृदय कांप उठता है।

वृद्धा ने हंस कर कहा—बहू तुम्हारा हृदय बहुत कमज़ोर है, ज़रा ज़रा सी बातों में हिल उठता है। जिसके लिए तुम्हारा हृदय इतना कांपता है, उसे कुछ भी दुःख नहीं है। वह हट्टी कट्टी सी इधर उधर घूमा करती है। उसकी मां ने उसे और भी हिम्मत दिला रक्खी है। तुम ने देखा होगा कि उसके अङ्ग में एक भी विधवाओं के चिन्ह नहीं मालूम होते हैं। ठाट बाट में कुछ भी कमी नहीं है।

जयदेवी उसी समय तालाब की ओर आरही थी।

अपने विषय की बात चीत सुन कर वह एक पेड़ की आड़ में चुप चाप खड़ी हो गई, और उसने कुल बातें सुनीं। गांव की स्त्रियों का भाव हमारी ओर कैसा है यह जान कर वह धीरे धीरे अपने घर की ओर लौट गई । घर जाकर उसने अपनी देह के समस्त अलंकारों को उतार डाला और एक सफ़ेद धोती पहन कर मां के पास जा चुपचाप खड़ी हो गई उसके वेष को देख कर माता के नेत्रों में अश्रु भर आये । वह अपने हृदय के आवेग को रोक न सकी। फूट कर रो दी और जयदेवी को हृदय से लगाकर बोली—देवी तुम्हारे इस वेष को देख कर हमारा हृदय फटता है। तुम ने किसके कहने से अपने आभूषण उतार डाले, क्या तुम्हें कोई कुछ कहता है?

जयदेवी ने गम्भीरता से कहा—मां, कोई कुछ कहे या न कहे, हम विधवा हैं। हमें भूषणों की कोई ज़रूरत नहीं है।

"हम विधवा हैं" यह शब्द दुःखिनी माता के हृदय को पार कर गये । इसके हृदय में धधकती हुई आग एकदम भभक उठी। उसने रोकर कहा—तुम अभी बालिका हो। विधवा होते हुए भी सधवाओं के रूप में रहना तुम्हारे लिये मना नहीं है।

जयदेवी ने कहा—मां सांसारिक नियम सब के लिये बराबर हैं, किसी के लिये कम ज्यादा नहीं। आज से हमने सांसारिक सुखों को त्याग दिया। हमारा विचार एकादशी का निरजल व्रत करने का है और दिन में एक वार भोजन।

जीवन के बचे हुए दिन हम इसी प्रकार व्यतीत करना चाहती हैं। मां, इसके लिये तुम ईश्वर से प्रार्थना करो कि वह हमारे हृदय में बल और शरीर में सहन-शक्ति दे।

माता ने सान्त्वना देकर कहा—देवी, तुम अभी बालिका हो, वैधव्य अवस्था के कठिन नियमों को पालन न कर सकोगी।

जयदेवी ने धैर्य से कहा—मां, अब हम निरानिर बालिका नहीं हैं। हमने अपने चित्त में जो कुछ निश्चय कर लिया है उसे अन्त तक निबाहने की चेष्टा करेंगी। हमारा जन्म संसार में कष्ट सहने ही के लिये हुआ है। इसके लिये चिन्ता करना वृथा है।

शिवनाथ शर्म्मा पूजन की कोठरी में बैठे हुए यह कुल बातें सुन रहे थे। पूजन से फ़ारिग़ हो कर उन्होंने जयदेवी की मां को बुलाकर कहा—देखो जयदेवी इस साल चौदहवें वर्ष में है। उम्र बढ़ने के साथ ही साथ उसकी बुद्धि भी प्रखर हो चली है; इस लिये उसके धार्मिक कामों में तुम किसी प्रकार की बाधा न दो। उसे अगले जन्म के लिये भी कुछ करने दो। उसके शुभ अनुष्ठान में विघ्न डालने से हम लोगों को अधर्म होगा।

स्त्री को समझा कर शिवनाथ शर्म्मा बाहर निकले। जयदेवी बरामदे में खड़ी हुई कुछ सोच रही थी। इनकी दृष्टि एक बार उसके ऊपर जा पड़ी। उसे देख कर इन के नेत्रों में

जल भर आया । यह मन ही मन कहने लगे—ईश्वर तू ने इसे कष्ट देने के पहिले मृत्यु क्यों न दी । क्या यह अबोध बालिका गुरुतर कष्टों के सहन करने योग्य है ? हा ! समाज तेरा बन्धन बड़ा ही सुदृढ़ है !

हा, स्नेहमय पिता, प्राण तुल्य जीवन-सर्वस्व एकमात्र अपनी कन्या के लिये ईश्वर से उस के मृत्यु की प्रार्थना कर रहा है !

* * * * *

वैशाख का महीना है, दोपहर व्यतीत हो चुकी है; चार बजने वाले हैं । एक छोटे से मकान में चौदह बर्ष की एक बालिका शय्या पर पड़ी हुई छटपटा रही है । पास ही एक वृद्धा हाथ में पङ्खा लिए हुए आहिस्ते आहिस्ते उसके मुंह पर हवा करती हुई अपने अश्रुविन्दुओं से अपने वक्षस्थल को भिगो रही है । पड़ोस की और भी एकाध स्त्रियां शय्या के पास बैठी हैं । कुछ दूर पर एक पुरुष अस्थिर भाव से टहल रहा है । यह बालिका हतभागिनी बालविधवा जयदेवी ही है । जयदेवी को कोई प्राण घातक रोग नहीं है—आज इस के व्रत का दिन है यह महीने में दो बेर एकादशी का निर्जल व्रत रहती है । समाज के उत्कट नियमों ने इसके शरीर को बहुत ही कमज़ोर बना दिया है । कुछ देर के बाद जयदेवी ने करवट बदली और धीरे से पूछा—माँ, सूर्य अस्त होने में अभी कितनी देर है ?

माता ने प्यार से उस के सर पर हाथ फेर कर कहा अधिक देर नहीं है; सूर्य अस्त होने ही वाला है।

जयदेवी ने कहा—तुम बैठी क्यों हो, जाकर भोजन क्यों नहीं करतीं ?

माता ने कहा—देवी, तुम ने अभी तक जल भी नहीं पिया और हम से भोजन करने के लिये कहती हो यह कैसे हो सकता है ?

जयदेवी के बार बार अनुरोध करने तथा अन्य स्त्रियों के बहुत कुछ कहने सुनने पर जयदेवी की माता ने भोजन करना स्वीकार किया, पर ग्रास मुंह में देते ही उन के नेत्रों के सामने जयदेवी की कारुणिक अवस्था का चित्र खिंच गया। यह बग़ैर भोजन किये ही उठ खड़ी हुईं। ऐसी अवस्था में किस माता का हृदय इतना कठोर होगा कि अपने प्यारे बच्चे को मृत्युशय्या पर छोड़ भोजन के लिये चिन्तित हो ?

क्रमशः सन्ध्या होने लगी, साथ ही साथ जयदेवी की अवस्था भी शोचनीय हो चली। प्यास के कारण उसके गले में कांटे से पड़ गये हैं। यह बोल नहीं सकती। क्षुधा के कारण नेत्रों की ज्योति भी मन्द हो गई है। बड़े ही कष्ट से उसने माता से कहा—मां, अब सहन नहीं होता, प्यास के कारण पेट जला जा रहा है; कंठ सूख रहा है, थोड़ा सा जल दो।

जल कौन दे ! आज एकादशी है, विधवाओं के मुंह में जल डाल कर पाप का भागी कौन हो ! किसी ने जल नहीं

दिया। जयदेवी के मार्मिक शब्दों को सुन कर सब के नेत्रों से अश्रुप्रवाहित होने लगे। इसी समय रूपकिशोर ने आकर शिवनाथ शर्म्मा से नम्रतापूर्वक कहा—पिता, जयदेवी की कारुणिक मूर्ति अब देखी नहीं जाती। कृपा कर जल पिलाने के लिये आप मुझे आज्ञा दीजिये।

शिवनाथ ने आश्चर्य से रूपकिशोर की ओर देख कर कहा--ऐसी अवस्था में आज्ञा देना भी महा पाप है। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि आज एकादशी है! तुम उसे जल पिला कर अपना तथा उसका परलोक क्यों बिगाड़ना चाहते हो?

रूपकिशोर ने गम्भीरता से कहा--परलोक का मुझे तनिक भी भय नहीं है। आप चिन्तित न हों, इसके लिए मैं तैयार हूँ।

शिवनाथ ने क्रोधित होकर कहा—क्या तुम्हें नर्क का भय नहीं है?

रूपकिशोर ने उत्तेजित होकर उत्तर दिया--इस पाप की शान्ति के लिए नर्क का कीट बन कर अनन्त काल तक यदि मुझे वहां रहना पड़े तो इसके लिए मैं सहर्ष तैयार हू। किन्तु हृदय-विदारक दृश्य इन आँखों से देखा नहीं जाता। अत्याचार की हद हो ली। आप इन अनाचारों का प्रायश्चित्त शीघ्र ही कीजिये।

शिवनाथ ने कहा—रूपकिशोर, तुम हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों को नहीं जानते। उनके ऊपर तुम्हारा विश्वास भी

नहीं है। हम जीते जी कभी अपनी कन्या का व्रत नष्ट न होने देंगे।

रूपकिशोर ने कहा—पहले आप इसके जीव की रक्षा कीजिए पीछे धर्माधर्म का विचार होगा।

शिवनाथ ने कहा—धर्म के लिए हमें इसकी मृत्यु सहर्ष स्वीकार है, किन्तु एकादशी के दिन जल देना स्वीकार नहीं।

इसके उत्तर में रूपकिशोर ने कुछ भी न कहा, शर्म्माजी को दृढ़प्रतिज्ञा देख कर सर नीचा किए हुए चुप चाप अपने कमरे की ओर चले गये।

* * * * *

जयदेवी के दुःखमय जीवन के कई वर्ष व्यतीत हो गये। दवात् एक दिन रूपकिशोर को अपनी प्रतिज्ञा जो इन्होंने जयदेवी से की थी याद आ गई। उसे इस कठिन वेदनाओं से बचा कर किस प्रकार सुखी करना होगा। उक्त चिन्ता ने इनके हृदय में एकदम आघात पहुँचाया। बहुत कुछ सोचने विचारने के बाद इन्होंने यह निश्चय किया कि, कुछ भी हो एक बार हम इस बात की चेष्टा करेंगे कि जयदेवी का पुनर्विवाह हो जाय। किन्तु पुनर्विवाह हो जाने से क्या इसके दुःख दूर हो जाँयगे। साथ ही हमारी आत्मा को भी क्या शान्ति मिलेगी ? हमारी आत्मा को शान्ति मिले या न मिले, अपने स्वार्थ के लिए हम उसके मार्ग को कण्टकित न बनायेंगे।

एक दिन सायंकाल के समय रूपकिशोर जयदेवी की

माँ के पास बैठे हुए कुछ सांसारिक बातों पर विचार कर रहे थे। बातों ही बातों में इन्होंने जयदेवी का ज़िक्र छेड़ा। बड़ी ही नम्रता के साथ इन्होंने कहा—मां, हमारी एक प्रार्थना है क्या तुम उसे स्वीकार करोगी?

माता ने मुसकरा कर कहा—पुत्र की प्रार्थना और माता स्वीकार न करे, यह कैसी बात?

रूपकिशोर ने गम्भीरता से कहा—मां, मेरी इच्छा है कि, जयदेवी का पुनर्विवाह ··· ··· ।

माता ने अत्यन्त विस्मित होकर कहा—किशोर तुम अज्ञान हो। विधवाओं का कहीं पुनर्विवाह होता है?

रूपकिशोर ने कहा—विधवा विवाह शास्त्र विरुद्ध नहीं है, बड़े बड़े पण्डितों ने इसे स्वीकार किया है। बड़े बड़े शहरों में इसका खूब प्रचार हो रहा है।

माता ने कहा—शहरों की बात दूसरी है, वहाँ जो कुछ न हो जाय थोड़ा है। यह बातें वहीं के निवासियों को शोभा देती हैं, एक ग्रामीण दरिद्र परिवार के लिये नहीं।

इसी समय शिवनाथ आ उपस्थित हुए। विवाह की बात सुनकर उन्होंने पूछा—किसके विवाह का ज़िक्र हो रहा है, रूपकिशोर?

शर्म्मा जी की आकृति देखते ही इनके देवता कूँच कर गये। सिटपिटा कर इन्होंने कहा—अभागिनी जयदेवी...... ।

जयदेवी का नाम सुनते ही शिवनाथ ने क्रोधित करहो

कहा—हमारी विधवा कन्या के लिये जो विवाह की चर्चा करेगा वह हमारा परम शत्रु है; हम उस अधर्मी का मुख देखना नहीं चाहते।

रूपकिशोर ने गम्भीरता से कहा—मैं अपराधी हू और उसके लिये दण्ड भोगने को तैयार हूँ। किन्तु मेरी यह प्रार्थना है कि, स्नेह, माया तथा ममता इत्यादि को आप भले ही विसर्जन कर दें किन्तु अभागिनी जयदेवी को चिर दुःखिनी न बनायें।

शिवनाथ ने उत्तेजित होकर कहा—धर्म के लिए हम सब कुछ विसर्जन कर सकते हैं, यदि आवश्यकता हो तो अपने प्राणों से भी अधिक प्यारी कन्या को भी धर्म के नाम पर बलि देने के लिए हम सहर्ष तैयार हैं। किन्तु धर्म को तिलांजलि देकर विधवा विवाह के लिए नहीं।

रूपकिशोर—आप धर्मात्मा हैं, ज्ञानी हैं। आप के साथ तर्क करने की क्षमता मुझ में नहीं है। किन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि, यदि आप ही जयदेवी के सुख दुःख की परवाह न करेंगे तो फिर कौन करेगा?

शिवनाथ—मालूम है कि तुम उसके पुनर्विवाह की चेष्टा बहुत दिनों से कर रहे हो। किन्तु आज तक इस मामले में हमने तुम से कुछ भी नहीं कहा। किन्तु आज तुम्हें सचेत करते हैं कि, ऐसे गन्दे विचारों को तुम अपने हृदय से त्याग दो, यदि ऐसा न करोगे तो तुम्हें शीघ्र ही

हमेशा के लिए इस घर से विदा लेनी होगी।

रूपकिशोर—इस के लिए हम तैयार हैं। इस नर्कगृह में वास करने की अपेक्षा इसका त्याग देना ही हमारे लिए हितकर होगा।

शिवनाथ ने क्रोधित होकर कहा—दूर हो नराधम, तू शीघ्र ही हमारे नेत्रों के सामने से दूर हो।

शर्मा जी क्रोध के आवेग में थरथर काँपने लगे। रूपकिशोर ने नम्रता से कहा—मुझे अपने माता पिता का स्मरण नहीं है, मैं आपको ही अपना पिता समझता हूँ। आपने मेरा पालन पोषण किया है इसलिए आपके सामने मुझे अपने विचारों को प्रकट करने का साहस हुआ। यदि स्वप्न में भी मुझे यह बात मालूम होती कि मेरी प्रार्थना आपको दुःखदाई होगी तो मैं कदापि आपसे निवेदन न करता। यह मेरा दुर्भाग्य है कि आप मुझे अपनी सेवा के योग्य नहीं समझते, पर नहीं मैं वह कार्य कदापि न करूँगा कि जिस से आप की आत्मा को कष्ट हो। आप की आज्ञा पालन करना मेरा धर्म है। मैं जहाँ कहीं रहूँगा आप का होकर ही रहूँगा।

रूपकिशोर, माता तथा पिता को अन्तिम प्रणाम कर आँसुओं को पोंछते हुए मकान के बाहर निकल गये। जाते समय इन्हें जयदेवी का स्मरण हुआ किन्तु यह उससे मिलने नहीं गये। इन्हें देख कर जयदेवी ने पीछे से आकर कहा—भइया, क्या आप मुझ से नहीं मिलोगे? क्या आप मुझ से

स्नेह नहीं करते ?

जयदेवी के शब्दों ने इन के पांवों में बेड़ियां डाल दीं। यह घूम कर खड़े हो गये और उस की ओर देख कर बोले—देवी हम तुम से स्नेह करते हैं या नहीं इसके जानने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं है। हम इसे प्रकट करना भी नहीं चाहते। पर तुम्हें यह स्मरण रहना चाहिए कि, जब तक हम जीवित रहेंगे तब तक हमारे शरीर की प्रत्येक शिरायों में प्रत्येक रक्तबिन्दु के साथ तुम्हारे प्रेम का श्रोत प्रवाहित रहेगा। बस इस समय इतना कह देना ही यथेष्ठ होगा।

जयदेवी ने रूपकिशोर की बातों को बड़े ही धीर भाव से सुना और बोली—इन बातों के कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। पर यह बतलाओ कि इस समय आप जा कहाँ रहे हैं?

रूपकिशोर ने उदास भाव से कहा—कहाँ जांयगे देवी? इस पृथ्वी पर हमारा कौन है। इधर उधर घूम फिर कर ही अपना समय बितायेंगे। प्रत्येक गाँव तथा प्रत्येक नगर में घूम फिर कर विधवाओं का दुःख संगीत गायेंगे। इन कठोर अत्याचारों को देख सुन कर भी जिनके हृदय द्रवित नहीं होते इन महानुभावों के चरणों पर अपना सर रख कर उन्हें समझायेंगे। रोयेंगे और उनसे कहेंगे—भाई, देश की विधवाओं की ओर देखो, उनके दुःख दूर करने की चेष्टा करो। इतना करने पर भी यदि उन महानुभावों का हृदय द्रवित न होगा तो अन्त में अपना जीवन विसर्जन कर देंगे। जिन

स्वदेशवासियों का हृदय इतना कठोर, और इतना निर्दय है उनको अपना मुख न दिखायेंगे और न उनका मुख देखेंगे।

यह कह कर रूपकिशोर जयदेवी के सामने से चले गये।



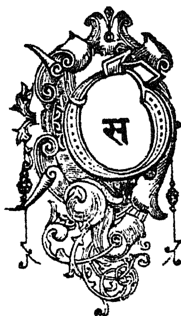
बाल विवाह और सामाजिक पतन ।

"Man sees with scrupulous character and Padigree of his horse, cattle and dogs, before he matches them but when he comes to his own marriage, he rarely, or never takes such care."

—DARWIN.

अर्थात्—मनुष्य अपने गाय, बैलों, घोड़ों और कुत्तों का जोड़ा लगाने के पहिले, उनके क़द, नस्ल, और बल आदि अनेक गुणों पर बड़े सावधानी से विचार करते हैं, और जांच कर जोड़ा स्थिर करते हैं। किन्तु जब अपने और अपनी सन्तान के विबाह का समय उपस्थित होता है तब वे इन सब उत्तम विचारों को भूल जाते हैं।"

—डारविन।



स

मस्त भूमण्डल के हर जाति में और प्रत्येक समाज में विवाह का प्रश्न बड़ा ही जटिल और महत्व का है। प्राणी मात्र के सुख अथवा दुख का "श्रीगणेश" यहीं से आरम्भ होता है, पर खेद के साथ कहना पड़ता है कि भारत में यही एक ऐसा प्रश्न है जिसकी ओर उचित ध्यान देने वाले व्यक्ति 'नहीं' के बराबर हैं। हमारे देश में विवाह केवल लौकिक आमोद प्रमोद की दृष्टि से ही देखा जाता है। पर यदि

आप बारीक नज़र से देखेंगे, तो आप को मालूम होगा कि हमारे सामाजिक कुरीतियों का यही केन्द्र है। यदि इस प्रश्न पर विशेष ध्यान दिया जावे तो कहने की ज़रूरत नहीं, कि हमारा जीवन भी स्वर्गीय जीवन हो सकता है और हम भी अपना जीवन आलौकिक और सुखमय व्यतीत कर सकते हैं।

भारत में कभी वह भी दिन थे कि हमारी सभ्यता, हमारी विद्या, हमारे आत्माभिमान और हमारे सामाजिक आदर्शों की धाँक बँधी थी। अन्य लोग हमारी नक़ल किया करते थे। संसार भर को हमी ने पाठ पढ़ाया पर दुर्भाग्यवश आज हम ही मार्ग के भिखारी हो रहे हैं। श्रीमती वेसेन्ट का कथन है कि—

"Nowhere in the whole world, nowhere in any religion, a nobler a more perfect ideal of marriage that you can find in the early writing of the Hindus."

अर्थात्—"भूमण्डल के किसी देश में, संसार की किसी जाति में और किसी धर्म में विवाह संस्कार का महत्व ऐसा गम्भीर, ऐसा पवित्र नहीं है जैसा कि प्राचीन काल के आर्य्य ग्रन्थों में पाया जाता है।"

स्त्री पुरुष का अर्द्धाङ्गिनी है, यह शास्त्रों, बड़े बड़े नीतिज्ञों और महान पुरुषों का मत है। स्त्री पुरुष का सम्बन्ध ठीक वैसा ही है जैसे एक चेहरे की दो आँखें, एक डाल के दो पुष्प, एक शक्ति के दो कार्य्य, एक वस्तु के दो नाम, या यह कहिये कि एक गाड़ी के दो पहिये। जिस प्रकार गाड़ी का एक पहिया ठीक न होने के कारण, गाड़ी नहीं चल सकती, ठीक उसी प्रकार दम्पत्ति

प्रेम के बिना, हमारे जीवन की गाड़ी ठेला अथवा 'छकड़ा' हो रही है। घर घर में क्लेश का होना, रात दिन लड़ाई झगड़ों की भरमार इस बात का काफ़ी प्रमाण है कि हमारा जोड़ा ठीक नहीं मिलाया जाता। इस समय यदि आप निष्पक्षता के चश्मे को आँखों पर चढ़ा कर देखें, तो आप को साफ़ तौर से मालूम हो जायगा कि आज दिन हमारे समाज में, हमारे घरों में १०० में से ६५ घर ऐसे मिलेंगे जिन में या तो स्त्री पुरुष से बेज़ार है या पुरुष स्त्री से। इसका कारण क्या? मानना ही पड़ेगा कि प्रेम का अभाव ही इस का प्रधान कारण है और दम्पत्ति प्रेम के न्यूनता के कारण सन्तानोत्पत्ति पर इस का कैसा प्रभाव पड़ता है, इसके दो एक नमूने भी दे देना हमारी समझ में ठीक ही होगा। दम्पत्ति-प्रेम के अभाव के कारण बच्चे पर कैसा करारा असर पड़ता है सो सुनिये—

सुप्रसिद्ध डाक्टर फ़ाउलर का कहना है कि—एक साधारणतः सुन्दर और निरोग स्त्री, अपने १४ वर्ष के दुबले, पतले, क्षीण और शक्तिहीन पुत्र को लेकर मेरे पास आई पुत्र का पिता भी साथ था। यह भी अच्छा खासा जवान था, तीनों की परीक्षा कर मैंने स्थिर किया कि दम्पत्ति में प्रेम का अभाव था। इस शक्ति के विकास न पाने की वजह से सन्तान में अपूर्णता रही और ऐसा निकम्मा बच्चा पैदा हुआ।

(२) एक स्त्री अपनी १६ वर्ष की पुत्री डा० फ़ाउलर के पास लाई और कहने लगी कि यह लड़की अकसर रोया करती है और धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त, अन्य किसी मनोरञ्जक या हास्यप्रद पुस्तक को कभी नहीं पढ़ती। डाक्टर ने उसकी परीक्षा की तो पता चला कि उसके स्वभाव में प्रेम

और प्रसन्नता की शक्तियों ने विकास नहीं पाया था। उसकी माता से पूछने पर मालूम हुआ, कि उसने एक दुष्ट के बनावटी प्रेम के फंदे में फंस कर उस से विवाह कर लिया था। किन्तु थोड़े ही दिनों बाद उसका असली स्वभाव प्रगट होने से वह पति से विमुख रहती, उस के नाम पर रोया करती, और बाइबिल पढ़ कर अपने मन को मारे रहा करती थी। ऐसी ही अवस्था में उसे वह पुत्री पैदा हुई थी।

(३) एक स्त्री का कहना है कि—मेरे तीन बच्चे मेरी गर्भावस्था की तीन जुदी जुदी स्थितियों की याद दिलाते हैं। पहिले पुत्र के गर्भ के समय मेरी मानसिक दशा अच्छी थी, मैं सदैव प्रसन्न चित्त और प्रफुल्लित रहती थी, इस से मेरा पहिला लड़का निरोग सर्वाङ्ग सुन्दर और बुद्धिमान पैदा हुआ। दूसरे बच्चे के गर्भ में आने के समय मेरा पति शराबी बन गया था। मुझे उसका यह व्यसन नापसन्द था, और उस की ओर से मुझे घृणा सी उत्पन्न हो गई थी। इस से मैं अप्रसन्न तथा उदास रहती थी। इस अवस्था में मेरे दूसरे बच्चे ने वृद्धि पाई और जन्म लिया। उसकी दशा सर्वथा, मेरे उस अवस्था के अनुकूल है। तीसरे बच्चे की उत्पत्ति के समय मेरे पति का दुर्व्यसन बहुत बढ़ गया था। उस के असभ्य और कुटिल व्यवहारों से मुझे अत्यन्त कष्ट भोगना पड़ता था। आर्थिक दशा भी बड़ी शोचनीय हो गई थी। मेरा विनोद प्रिय और प्रसन्न स्वभाव निराशा और शोक में बदल गया था। और मैं चिन्ता-रूपी चिता पर दिन रात जला करती थी। अतएव मेरा तीसरा पुत्र, रोगी, निर्बल, निराशा तथा शोक का अवतार ही उत्पन्न हुआ।"

(४) डाक्टर लव का कथन है कि—एक अङ्गरेज़ को एक

अफ़्रीका निवासी काली रंग की स्त्री पर बहुत प्रेम था। वह उसके साथ विवाह करके कई वर्ष तक हर्ष पूर्वक साथ रहा। उस स्त्री के देहान्त हो जाने के कारण उसने फिर एक गोरी मेम के साथ विवाह किया। पर जो पुत्र इस दूसरी गोरी मेम से उत्पन्न हुआ वह रंग और रूप में उस की पहली स्त्री ही जैसा था। कारण बताने की ज़रूरत नहीं। अंग्रेज़ अपनी पहिली स्त्री को भूल न सका था। गर्भाधान के समय उस स्त्री की शकल उसके आँखों के सामने नाच रही थी, इस से उसी का प्रतिविम्ब सन्तान में भी आया। इसके विपरीत देखिये:—

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के प्रेम की कथा हिन्दू मात्र से छिपी नहीं है। हम ऊपर कह चुके हैं कि दम्पत्ति में यदि प्रेम की न्यूनता हुई तो सन्तान भी उसी तरह की होगी और यदि परस्पर प्रेम घनिष्ट हुआ, तो सन्तान पर उसका कैसा असर पड़ता है यही बात हम कह रहे हैं। अस्तु!

कृष्ण और प्रद्युम्न (बड़ा पुत्र) को देख कर लोगों को स्वयं कृष्ण का भ्रम होता था। वे कृष्ण से इतने मिलते जुलते थे कि स्वयं कृष्ण को सन्देह हो गयो था कि उन्हीं की सूरत का यह दूसरा पुरुष कौन है। कृष्ण का केवल रूप ही नहीं गुण भी उसमें विराजमान थे।

इन बातों से पाठकों को यह बात समझने में सुगमता हुई होगी कि पति और पत्नी का परस्पर प्रेम, सुखमय जीवन के लिहाज़ से नितान्त आवश्यक है। पर भारत में ठीक इसके विपरीत देखने में आता है, जैसा कि हम आगे कहेंगे। हमारे समाज में इन बातों को देखने वाले हैं ही नहीं। "इनहीं बातों का है रोना, और रोना क्या है।"

हमारे भाग्य विधाता तो हैं केवल पुरोहित जी और "नाऊ ठाकुर"। वे जहां चाहें हमारे जीवन की किश्ती को बाँध दें। हम और आप नाई, पंडों और पुरोहितों को ही यह भार सौंपते हैं कि वह हमारी प्राणप्यारी कन्याओं को चाहे जिस गढ़े में ढकेल दें। प्रायः कन्याओं के भावी जीवन की बागडोर इन्हीं कमीशन एजेण्टों के हाथ में सौंपी जाती है।

इसके पहिले कि हम अपने मतलब की ओर झुकें हमें इस बात पर काफ़ी तौर से विचार करना होगा कि आज कल स्त्रियों का जीवन किन किन बातों की न्यूनता के कारण संकट और दुःखमय हो रहा है और यह दशा कब से चली आती है? प्राचीन और अर्वाचीन काल के विवाह पद्धति में क्या क्या गुण और दोष आ घुसे हैं, जो हमारे जीवन की खेती में भयङ्कर कीड़ों का काम कर रहे हैं।

सब से पहिला कारण जो हमारे सुखमय जीवन को खदेर कर मूर्खता के गहरे गढ़े मैं ढकेलता है वह है "बाल विवाह"। यही हमारे सामाजिक जीवन को नष्ट भ्रष्ट कर डालता है। इसी के कारण बाल विधवाओं की संख्या भारत में दिनदूनी और रात चौगुनी बढ़ रही है। भारत में घोर व्यभिचार का जीवन दान इसी ने दिया है। स्त्रियों में आत्म-हत्या का मंत्र यही फूँकता है। आज कल सामाजिक दृष्टि से हमारी आँखें नीची कराने का यही एक प्रधान कारण है। केवल इतना ही नहीं बल्कि देश और समाज को रसातल पहुंचाने का भी यही एक मात्र प्रधान कारण है। इन कुल विषयों पर अलग अलग हम अपने विचार अन्यत्र सिलसिलेवार प्रगट कर रहे हैं पर चूँकि जो जो दोष ऊपर कहे गये हैं, प्रत्येक घटनाओं से 'बाल विवाह' का सम्बन्ध

"चोली और दामन" का है, अतएव इस गम्भीर और महत्वपूर्ण विषय पर हमें काफ़ी प्रकाश डालना चाहिये। अस्तु—

प्रचीन काल में हमारे विवाह संस्कार स्वयंम्बर द्वारा सम्पादित होते थे। सन् ११८२ ई० तक जिसको केवल ७३८ वर्ष हुए हैं राजकुमारी संयोगिता का विवाह पृथ्वीराज के साथ स्वयम्बर ही के मर्य्यादानुसार हुआ था। हमारे कहने का सारांश केवल इतना ही है, कि कन्यायें उस समय इस अवस्था को पहुंच जाती थीं कि वे अपने मन के लायक़ पति चुन सकें। शायद यह कहने की ज़रूरत नहीं कि ८ वर्ष की कन्या को यह ज्ञान हो ही नहीं सकता कि वह अपने जीवन के साथी को चुन सके। स्वयम्वर तभी रचाया जा सकता है, जब कन्या की मानसिक तथा शारीरिक उन्नति हो चुकी हो और उस में विवेक शक्ति का भली प्रकार आविष्कार (Development) हो गया हो और वह अपने गुण, कर्म, तथा स्वभाव के अनुसार जीवन यात्रा के लिये पति को बरने के योग्य बन गई हो। पर हमारे यहां जिस अन्धी प्रणाली का प्रचार है उसी के बारे में हम पहिले कुछ कहेंगे। पाराशरी और शीघ्रबोध आदि ग्रन्थों में एक बड़ा ही विलक्षण श्लोक है:—

"अष्ट वर्षा भवेत् गौरी नव वर्षा च रोहिणी।
दश वर्षा भवेत् कन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला॥ १॥
माता चैव, पिता चैव, ज्येष्ठ भ्राता तथैव च)
त्र्यैस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम्॥ २॥

अर्थात्—कन्या की आठवें वर्ष गौरी, नवें वर्ष रोहिणी, दशवें वर्ष कन्या और उसके आगे रजस्वला संज्ञा होती है।

दशवें वर्ष तक विवाह न करके रजस्वला कन्या को देख, उसके माता पिता और बड़ा भाई यह तीनों नर्क में गिरते हैं।

यही श्लोक हमारे सामाजिक शरीर में कोढ़ का काम करता है, अतएव इसका प्रमाण सहित खण्डन करना नितान्त आवश्यक है। पर इसके पहिले हम इसी तरह बे सिर पैर के दो एक और श्लोक पाठकों के सामने रखना चाहते हैं। यमस्मृति में कहा हैः—

"प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे य कन्या न प्रयच्छति।
मासि मासि रजस्तस्या पिता पीवति शोणितम्॥"

अर्थात्—"यदि १२ वर्ष की कुमारी कन्या घर में बैठी रहे, तो उसका पिता उस कन्या का रज पीता है"।

दक्ष स्मृति (कल्लू भट्ट कृत) में लिखा है "उद्वहेदष्टवर्षामेव धर्माणि हीयते·········॥" अ० ६॥

अर्थात्—"आठ वर्ष की कन्या का विवाह कर दे। इस में कुछ भी क्षति नहीं होती।" भट्ट जी ने १० और १२ वर्ष को घटा कर आठ ही कर दिया है। और हमारे समाज में यह विवाह बड़ा ही उत्तम गिना जाता है। पर सारी विद्वता भट्ट जी से ही ख़तम नहीं होती और विद्वानों के कथन भी हम ने एकत्रित किये हैं।

"विवाह प्रशास्त काल माह सप्तति·····················"

अर्थात्—विवाह का उत्तम समय ७ वर्ष ही है, यह समय गर्भ की तिथि से ही गिनना चाहिये"। इस हिसाब से जन्म की

तिथि से ६ वर्ष और ३ मास की आयु ही विवाह का ठीक समय है। यह तो फिर भी ग़नीमत है, आगे का श्लोक बड़े ही मज़े का है। ब्रह्मपुराण का वाक्य है:—

ब्रह्मोवाच।

एक क्षणा भवेत् गौरी द्वितरो यन्तु रोहिणी।
त्रिक्षाणा सा भवेत्कन्या तत्त उर्ध्वं रजस्वला॥ १॥
माता पिता तथा भ्राता मातुलो भगिनि स्वका।
सर्वे ते नरकं यान्ति दृष्ट्वां कन्यां रजस्वलाम्॥ २॥

अर्थात्—जितने समय में परमाणु एक पलटा खावे, उतने समय को क्षण कहते हैं। जब कन्या जन्मे, तो एक क्षण में गौरी, दूसरे में रोहिणी, तीसरे में कन्या, और चौथे में रजस्वला हो जाती है। उस रजस्वाला को देखने से उसके माता, पिता, भाई, मामा और बहिन सब नर्क में जाते हैं।

हमारी बहिनें इस बात को पढ़कर अवश्य हसेंगी और इसे बनावटी समझेंगी पर वास्तव में बात हंसने की नहीं है बात है रोने की, क्योंकि इस मत को मानने वाले भी आज दिन भारत में सात करोड़ के लगभग हैं। (कहना न होगा कि भारत की आबादी में १०० में ८५ किसान हैं)।

देहातों में अकसर देखा जाता है कि ३ वर्ष की कन्या का विवाह, चार या पांच वर्ष के लड़के से होता है। यह एक आम बात है, और यहां तक पाठक धैर्य्य रखकर पढ़ सकेंगे पर आपको यह जान कर और भी अचम्भा होगा कि, अहीर

कहारों में जब बच्चा पेट ही में रहता है, तब ही विवाह पक्का हो जाता है। और पैदा होते ही विवाह !! यह एक बहुत आम रसम है और आप भारत के चप्पे चप्पे में पांवेगे। बहुत से ऐसे सम्बन्ध तो हमारे आखों के देखे हैं।

मेरे यहां एक नौकरानी थी। वह कहारिन थी। जब वह काम करने आती तो उसके साथ ३ वर्ष की एक लड़की भी आती थी। एक दिन प्रातःकाल मैं सोया था। एकाएक लड़की के रोने से मेरी आंख खुलगई। मैंने उठकर चमेली से उसके रोने का कारण पूछा उसने तुतलाते हुए अपनी मां की ओर इशारा करके कहा "माई हमका मालिन हैं" मैंने महरी को डांट कर कहा, कि लड़की को क्यों बृथा मारा करती है? महरी बोली—भैय्या ! व्याही लड़की हो मांग मां सिन्दूर नाहीं लगावत ! ढेर बेरी कह चुकेन जब नाहीं सुनेस तो आज मारिन हैं।

मैं अवाक सा रहगया। मुझे स्वप्न में भी आशा न थी, कि चमेली व्याही कन्या है और होता कहां से मैं उसे प्रायः नंगी देखा करता था। मैंने महरी से कौतूहल वश पूछा क्या इसका विवाह होगया है।"

महरी बोली—जब चमेली अढ़ाई बरस की रही तब ही ओकर विवाह भवा रहा।

मैंने कहा—इतनी जल्दी।

महरी बोली—भैय्या एमां ताज्जुब केर कऊन बात हौ। चमेली के बियाह तो देरी मां भवा। बिरादरी वालन तो हमार पंचन केर 'हुक्कापानी' बन्द कर दीन रहा। डंड दिहे पड़ा ६ रुपया केर तो खाली दारू (शराब) मंगवावा रहा और

भात अलग । हमरे हियां तो महतारी के पेट मां लगाई हो जाला अउर जनमते बियाह ।

हम अन्यत्र विस्तार पुर्व्वक इस विषय पर लिख ही रहे हैं पर पाठकों की सुगमता के लिये बहुत थोड़ी अवस्था की विवाहित हिन्दू कन्याओं की सूची यहां देना उचित होगा । वह इस प्रकार है:—

१ महीने से बारह महीने तक की विवाहित कन्यायें हैं १३,२१२

१—वर्ष	से	२	वर्ष	तक	——१७,७५३
२—वर्ष	से	३	"	"	——४६,१८१
३— "	से	४	"	"	——१,३४,१०५
४— "	से	५	"	"	——३,०२४२५
५— "	से	१०	"	"	—२२,१६,७७८

हम लिखे पढ़ों में और उन जाहिलों में अन्तर केवल इतना ही है कि हम आठवें या दशवें वर्ष कन्या का विवाह कर देते हैं और वे लोग इस से भी कम अवस्था में । क्योंकि धार्मिक कार्य्यों में गांव वालों की श्रद्धा स्वाभाविक रीति से, शहर वालों की अपेक्षा, अधिक होती है । आप देखते ही हैं कि किसी तिमुहानी या चौमुहानी (चौरस्ते) पर एक पत्थर रख कर ज़रा सा अक्षत और फूल छिड़क दें बस फिर उसी की पूजा होने लगती है और कुछ ही दिनों में प्रायः वहां एक अच्छा ख़ासा मेला लगने लगता है ।

छोटी जाति में, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, यदि पैदा होते ही विवाह न कर दिये जावें तो बिरादरी के मतवाले "हुक्कापानी" बन्द कर देते हैं । उनको (लड़की के माता पिता

को) जाति च्युत की सज़ा दी जाती है, अथवा समाज से उनका बहिष्कार (बायकाट) कर दिया जाता है। पर इस कुरीति से व्यभिचार कितना बढ़ता है यह शायद उन अ.क्ल के अन्धों को नहीं सूझता पर हमें तो सुझाना ही होगा।

यदि घर के मज़दूरनियों के अन्दरूनी जीवन पर आप ज़रा दृष्टि डालें तो आप भी हमारे साथ यही कहेंगे, कि उन में १०० में ८० स्त्रियों के चरित्र हद दर्जे के ख़राब होते हैं। इन मज़दूरिनों के चरित्र के बारे में सेनसस के सुपरिन्टेन्डेएट ने लिखा है कि मज़दूरिनों में से बहुत सी तो सचमुच वेश्यायें हैं"। *

दूकानों पर बैठने वाली, तरकारी बेचने वाली और पान आदि बेचने वालियों के बारे में अभी हम कुछ नहीं कह सके हैं जोकि डङ्के की चोट अपना सर्वनाश करती हैं। जिनकी औसत के बारे में विशेष न कहकर इतना ही समझना काफ़ी होगा, कि शायद हज़ार में दो ही चार सदाचारी मिलेंगी, पर वे भी केवल बूढ़ी, जवान नहीं। यह भी बाल विवाह के फल का दिग्दर्शन है। अब यहां हमें देखना यह है कि, यह बाल-विवाह की प्रणाली कैसे, कहां से, और कब से निकली है ?

इस बिनाशकारी और अधम रीति के ३ प्रधान कारण हैं:—

१—महाभारत का युद्ध और देश में हर तरफ़ लड़ाई झगड़ों का होना।

२—विदेशियों का लगातार आक्रमण करना, और प्रायः विजयी होना।

---

* See All India Census Report.

३—स्त्रियों का आदर्श गिरना, उनके मानसिक और आत्मिक अधिकारों का छिन जाना ।*

जिस समय देश में लड़ाई झगड़ों की भरमार होने लगी, परस्पर छोटे छोटे झगड़ों का रात दिन खटका लगा रहने लगा, यहां तक कि एक परिवार दूसरे परिवार के नाश करने पर तुल गये । अन्धकार का साम्राज्य स्थापित हो गया। इज़्ज़त आबरू के लाले पड़ गये । कन्याओं के सतीत्व हरण करने वाले डाकू दल बल सहित आक्रमण करने लगे । तब भारत में यह बात ज़रूरी जान पड़ी कि बालिकाओं का विवाह छोटी अवस्था में करके पिता के अतिरिक्त उन के लिये एक नया संरक्षक, विवाह द्वारा बना दिया जावे। इसका मतलब यह था, कि बालिकाओं के पिता समर भूमि में यदि मारे जावें, तो वे अनाथा न हो जावें । अपने ससुराल की शरण ले सकें। पर भारत निवासी जब तक किसी कार्य्य को धर्म के बाने में नहीं देखते उनकी श्रद्धा उस पर कदापि नहीं होती और वे उसे स्वीकार भी नहीं करते हैं। वे अधर्म करने के बदले मर जाना ही उचित समझते हैं। पर वास्तव में धर्म्म क्या है? यह बात सभी नहीं जानते । यही कारण था कि नये नये धर्म्म ग्रन्थों की रचना की गई, और उन्हें दिखाया गया, कि बाल्यावस्था में ही विवाह संस्कार कर देना धार्मिक आज्ञा है, बस फिर देरी क्या थी ? लगे धड़ा धड़ गिरने । "देश दर्शन" की सम्मति में स्त्री जाति के अधोगति के पांच प्रधान कारण हैं:—

(१) स्त्रियों का अविवाहित रहना निषिद्ध कर दिये जाने से ।†

---

* See "Wake up India" by Annie Besant.

†कहना न होगा, कि पूर्व काल में स्त्रियां विवाह करने के लिये मजबूर नहीं की जाती थीं । मानसिक और धार्मिक

(२) अनेक शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अधिकारों के छिन जाने से।

(३) धर्म ग्रन्थों या उपदेशों के द्वारा माता पिताओं को यह समझाया जाने से, कि वे बाल्यावस्था से पूर्व ही अपनी पुत्रियों को विवाह दें, और ऐसा न करने से नर्कादि का भय दिखाया जाने से।

(४) स्वार्थ सिद्धि के लिये स्थान स्थान पर नवीन श्लोक बना कर मिला दिये जाने से। और

(५) निन्दा सूचक शूद्रादि शब्द स्त्रियों के लिये प्रयोग किये जाने से।

मनुस्मृति एक ऐसा ग्रन्थ है, जिस पर हिन्दुओं की सब से अधिक श्रद्धा है, और इसी को (Hindu Law) कहते हैं। अदालतों तक में इसकी दुहाई दी जाती है, पर अन्धी श्रद्धा वश करोड़ों भारतीय आत्मायें अनपढ़, धूर्त, स्वार्थसेवी और जाहिल ब्राह्मणों, पण्डों और पुरोहितों के झूठे मनगढ़ंत

आज्ञानुसार वे बाल ब्रह्मचारिणी रह सकती थीं, और मोक्ष की प्राप्ति के लिये सन्यास लेकर ब्रह्मज्ञान प्राप्ति करती थीं।

बाल ब्रह्मचारिणी सुलभा ने ब्रह्मविद्या पर सम्बाद करते हुए राजर्षि जनक से यों कहा था:—

"मैं क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुई हूं। मुझे अपने गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार योग्य पति नहीं मिला इसी लिये विनीत भाव से मैंने मोक्ष प्राप्ति के लिये सन्यास ले लिया है।"

गार्गी और अनेक ब्रह्मचारिणियों ने आजन्म विवाह नहीं किया।

—सम्पादक

श्लोकों की दुहाई देते हुये अपना सर्वनाश करते हैं। और उन लम्पटों के हाथ की कठपुतली बने हुये हैं। जिन्हें केवल १०, २० काम चलाऊ श्लोक याद हैं, वही भोली स्त्रियों और थोथे पुरुषों को जिधर चाहते है, नचाते हैं। और वे मूर्ख सहर्ष नाचते भी हैं। यदि कैसी भी बुरी और हानिकारक बातें हों, पर यदि वह श्लोक के रूप में, ब्राह्मणों द्वारा कही जांवे तो अन्धी श्रद्धा वाले जाहिल पुरुष उसी को धार्मिक प्रमाण समझ बैठते हैं। जिस (Hindu Law) मनुस्मृति के बारे में ऊपर कहा जा चुका है उसी से, पाठकों की जानकारी के लिये हम कुछ श्लोक यहां उद्धृत करते हैं:—

त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतु मति सती।
चर्ध्वन्तु कालादेतस्माद्विंदेत सदृशं पतिम्॥

अर्थात्—कन्या रजस्वला हुये पीछे तीन वर्ष पर्यन्त पति की खोज करके पति को प्राप्त होवे।"

हम पूछते हैं, कि वे 'अष्ट वर्षा भवेत गौरी' की दुहाई देने वाले इस का क्या जवाब देंगे? स्त्री पुरुष के पारस्परिक सम्बन्ध के बारे में महाराज मनु का कथन है:—

"चाहे लड़का लड़की मरण पर्य्यन्त कुंवारे रहें, परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध, गुण स्वभाव वाले का विवाह कदापि न होना चाहिये। इस से सिद्ध हुआ कि समय से प्रथम वा असदृश का विवाह होना योग्य नहीं।"

इससे यह भी सिद्ध होता है कि विवाह करने और जीवन का साथी आदि चुनने का भार लड़के लड़कियों की प्रसन्नता पर ही छोड़ देना चाहिये। जो माता पिता विवाह करना कभी विचारें

या स्वयं कहीं ठीक करें तो भी बर कन्या की प्रसन्नता से विवाह होने में विरोध कम होता है, और सन्तान भी उत्तम होती है। इस विषय में इस परिच्छेद के आरम्भ में ही काफ़ी कह चुके हैं।

अप्रसन्नता के विवाह में नित्य क्लेश ही रहता है, और उन के जीवन में, सुखों के लिहाज़ से यह गेहुं में घुन का काम करता है। विवाह में मुख्य प्रयोजन वर और कन्या का है, माता पिता का नहीं। क्योंकि जो उन में परस्पर प्रसन्नता रही तो उन्हीं को सुख, अन्यथा विरोध में उन्हीं को दुःख होता है। महाराज मनु का कथन है:—

सन्तुष्टो भार्य्या भर्त्ता, भर्त्ता भार्य्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्यांण तत्र वै ध्रुवम्॥

अर्थात्—जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है। और जहां विरोध तथा नित्य कलह होता है वहां दुःख और दारिद्रता का निवास होता है।

इसी लिये जैसी स्वयम्बर की रीति आर्य्यावर्त्त में परम्परा से चली आती है वही उत्तम है। जब स्त्री पुरुष विवाह करना चाहें तब विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, वल, कुल, और शरीर का मेल भली भांति विचार लेना ज़रूरी है। जब तक इनका मेल नहीं होता, तब तक विवाह में कुछ भी सुख नहीं है। बाल विवाह करना ठीक वैसा ही है जैसे वैधव्य के "लेटर वक्स" में कन्या को छोड़ देना, अथवा जान बूझ कर उन्हें अन्धेरे कुयें में ढकेल देना जैसा कि अन्यत्र कहा गया है।

केवल मनुस्मृति ही में नहीं, वल्कि वेद के उन मन्त्रों को यदि आप देखें, जिन के मुताविक़ हमारा पाणिग्रहण होता है, तो

प्रत्येक श्लोक से बाल विवाह का ख़ासा खण्डन होता है, पर फिर भी हम उसी लकीर को पीटते हैं। श्लोकों के अर्थ न तो स्वयं हमें मालूम हैं, और न हमारे पुरोहितों को। चलो छुट्टी हुई "खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दिवाने दो" रोना तो इसी का है। और इसी को "भेड़ चाल" कहते हैं।

स्थानाभाव के कारण, कागज़, स्याही, और छपाई की बेतरह मंहगी की वजह से कुल तो नहीं पर कुछ श्लोक हम पाठकों की जानकारी के लिये यहाँ दे रहे हैं। जिन से आप को इस विषय पर स्वयं विचार करने में सुगमता होगी। उस मन्त्र का अर्थ यह है :—

(ऋ० मं—१ श्रा० ७ सू० ८५ मं ६७।)

अर्थात्—हे सृष्टि के देवता हम दोनों पति पत्नी के हृदय सदा के लिये एक में मिला दो। मातेश्वरी बाग देवी हमें मिला कर एक कर दो। इत्यादि।

पुनः सातवीं भांवर के समय पति पत्नी को सम्बोधन करके जो मंत्र कहता है उस का अर्थ है कि "हम लोगों ने सात भांवर फेर लिया है अब हम एक दूसरे के परम सखा हो गये। न हमारा तुम से कभी वियोग हो और न तुम्हारा हम से। हम दोनों एक हों। हम लोग प्रसन्न हृदय और परस्पर प्रेम के साथ एक दूसरे की सलाह लें। अब हम दोनों का मन, कर्त्तव्य और इच्छा एक है। तुम ऋक हो हम साम हैं, हम ओ३म् हैं तुम पृथ्वी हो। हम रेत हैं तुम रेत को धारण करने वाली हो। हम मन हैं तुम बाणी हो। हमारी अनुगामिनी होओ। जिस में पुत्र और धन की प्राप्ति हो। मिष्टभाषिणी आओ।"………इत्यादि।

हम पूछते हैं कि क्या अष्ट वर्षा, गौरी अथवा उन दुध

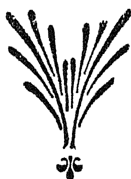
पीते बच्चों का यह कहना हो सकता है? पुनः देखिये सब संस्कारों के अन्त में कन्या का पिता नीचे लिखी प्रार्थना से यज्ञ समाप्त करता है:—

(अ० म० १० अ० ७ सूत्र ८५ मं० २२।)

अर्थात्—हे विश्वावसु! विवाह के देवता! इस स्थान से उठो। हम तुम्हें दण्डवत कर के तुम्हारी पूजा करते हैं अब दूसरी कुमारी के पास जाओ। जिसका अङ्ग प्रौढ़ता को प्राप्त हो, उसे एक पति से मिला कर पत्नी बनाओ।

हम ने इन कुल बातों से पाठकों की जानकारी केवल इस लिये कराई है, कि वे लचर दलीलों और मूर्ख विपक्षियों का मुंह तोड़ उत्तर दे सकें और अपनी जिम्मेदारियों की ओर विशेष ध्यान दें।

बाल बिबाह के सम्बन्ध में बहुतों का कहना है, कि भारत की जल वायु गर्म्म है, अतएव यहां कन्यायें जल्द स्यानी हो जाती हैं······इत्यादि। इस सम्बन्ध में हम आगे कह रहे हैं।



बाल विवाह के सम्बंधमें
कुछ
लचर दलीलें।

हमारे दिलों पर इन कपोल कल्पित और मन गढ़त श्लोकों और मूर्ख अचार्यों के शिक्षा का ऐसा बुरी असर पड़ा है, और यह बातें हमारे दिमाग में इस बुरी तरह गड़ गई हैं कि इनको निकाल देना कुछ हंसी खेल नहीं है। पर यह बातें तो हुई उन लोगों की जिनमें शिक्षा का आभाव है और जो अपनी समझ से काम नहीं करते पर अश्चर्य तो हमें उनकी बुद्धि पर आता है जिनके नामों मे आगे लम्बी लम्बी डिगरिऐं भी जुड़ी हैं। वे भी सम्भवतः स्त्रियों के भड़काने में आकर अथवा परोहित जी का मान रखने के लिए ठीक उसी लकीर को पीटते आ रहे हैं जिनके शिकार मूर्ख होते हैं। हमें केवल उनकी बुद्धि पर तरस आता है और इसी नाते से हम यहां उनके अंधकार के परदे को, जोकि उनके आखों पर पड़ रहा है हटाने का प्रयत्न करेंगे और इस बात की चेष्टा करेंगे कि कम से कम वे तो इन कुरीतियों के फंदें में न फसें।

हमारे बहुत से शिक्षित भाई लोग यह मान बैठे हैं की भारत-वर्ष की जलवायू (आवेहवा) में यह तासीर है कि यहां लड़किये जल्दी सयानी हो जाती हैं और इसी कारण उनका विवाह शीघ्र

ही कर देना बुद्धिमानी है। हम कहते हैं कि ऐसा समझने वाले भूल करते हैं। अव्वल तो यह विचार ही ग़ल्त है पर यदि, थोड़ी देर के लिये इस दलील को भी मान लें तो भी हमारा कहना है कि योवन अवस्था के चिन्हों से यह नहीं कहा जा सकता कि अब वे विषय भोग के लायक़ हो गए। बच्चों के दूध का दांत निकल आने पर आप नहीं कह सकते कि वह चना चबा लेगा अथवा गन्ना (ईख) चूस लेगा या चूस सकता है, इसी विषय में लोग बहुत सी लचर दलीलें पेश करते हैं। वे कहते हैं कि भारत ऐसा गरम देश है कि यहां कन्यायें बहुत जल्द रजस्वला हो जाती हैं और ११—१२ वर्ष की बाल-मातायें इसके सबूत में पेश की जाती हैं "देश दर्शन" का कहना है कि "बाबू अमीचन्द और बाबू घनश्यामदास कालेज के सहपाठी मित्र हैं। बाबू अमीचन्द को एक लड़का है और घनश्यामदास को एक लड़की। दोनों मित्रों ने कालिज में ही तै कर लिया है कि उनके बच्चों का विवाह एक साथ होगा। बड़ी धूम धाम से १२ वर्ष के केदारनाथ १० वर्ष की चन्द्रमुखी के साथ व्याहे गये। बाबू अमीचन्द इसी साल एम० ए०, की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर डिप्टी कलेक्टर के पद पर नियुक्त हुए हैं। केदारनाथ का शुभ विवाह हुए कुल अढ़ाई वर्ष बीते हैं, आज फिर घर में मङ्गलोत्सव हो रहा है। महफ़िल में काशी की नामी नामी रंडियां आई हैं सारे शहर में धूम मच गई है। लोग बाबू अमीचन्द के भाग्य की सराहना कर रहे हैं। स्त्रियां, गुड़िया सी अति सुन्दरी चन्द्रकला को देखकर कहती हैं—"परमेश्वर तू धन्य है। ईश्वर जब प्रसन्न होता है उसे इसी तरह सुख समपत्ति देता है। देखो न कहां चन्द्रमुखी और कहां गोद भर आई। अभी तो अमीचन्द की पतोहू लड़की सी लगती है पर,

वाह रे भाग्य? वाहरे ईश्वर की देन कि उनकी गुड़िया सी बहू को लड़का होने वाला है” बाबू अमीचन्द के माता पिता दोनो जीवित हैं। वे आज फूले नहीं समाते। अभी पतोहू की आयु १३ वर्ष से कम है और दिन पूरे हो गये।

आज दो दिन से दाइयों की भरमार है। सारे शहर की बूढ़ी खुशामदी स्त्रियों से मकान खचाखच भरा है। बाबू अमीचन्द तार पाते ही डाक गाड़ी से रवाना हो गए। दाइयों से काम न चलने पर मिस साहिबा बुलाई गई और उनके कहने पर सिविल सर्जन भी उपस्थित हुए। कई और डाक्टर भी बैठे हुए राय मिला रहे हैं पर चन्द्रमुखी की “आहें” एक मिनट को भी नहीं रुकतीं। केदारनाथ बूढ़ी स्त्रियों से खुल्लमखुल्ला डांटे जाने पर और बेहया कहे जाने पर भी बहू के पास जाने से नहीं मानता। वह अपना कमरा और बहू का कमरा एक किये है। लाख कोशिश करने पर भी उसके आँखों से आसुओं की बड़ी बड़ी बूदें टपक पड़ती हैं। वह घुटने टेक कर अपने कमरे में प्रार्थना करता है—हे ईश्वर! तू मेरी जान भले ही ले ले, पर उसको बचा ले।

डाक्टरों ने निश्चय कर लिया कि, विना ऑपरेशन (नशतर) के काम न चलेगा और यदि अभी वह क्लोरोफ़ार्म से बेहोश न कर दी जावेगी तो सम्भव है कि उसके प्राण न बचेंगे। सिविल सर्जन साहब अपने मकान, नशतर आदि का सामान लेने को गए। बिचारी बालिका का बुरा हाल था। वह थोड़ी ही देर की मेहमान थी। उसे ज़रा होश आया। गद् गद् स्वर से उसने केदार की ओर देख कर कहा था। ‘प्यारे! मैं अब परलोक जा रही हूँ’ बस उस समय से केदार हद से ज़्यादा परेशान है। और बैठा बैठा न जाने क्या सोच रहा है।

बेहोश होने के आधे घण्टे बाद मरा हुआ लड़का पैदा हुआ और थोड़ी ही देर बाद चन्द्रमुखी के प्राण पखेरू उड़ गये !

बाबू अमीचन्द भी आ गये, पर पतोहू को जीवित न देख पाये। उन्होंने यह भी सुना कि केदार बेहद परेशान है। वे दौड़े हुए उसके कमरे में घुस गये। किन्तु केदार को मुस्कुराते हुए शिष्टाचार करते देख कर उनका भय कुछ कम हुआ। वे बोले—"बेटा, लोगों ने तुम्हारी शोचनीय अवस्था के विषय में जो कहा था, उससे तो मैं बहुत ही घबड़ा गया था" उसने उत्तर दिया—"जी हां, पहिले मुझे बड़ा दुख हुआ था, पर अब कुछ मिन्टों से मैं बिलकुल अच्छा हूं" वे बाहर आये और उस समय ज़रूरी कार्य्य की चिन्ता में लगे। सहसा केदार के कमरे से पिस्तौल की एक आवाज़ हुई। लोग दौड़ कर दर्वाज़ा तोड़ कर भीतर घुसे तो केदार को मरा हुआ पाया ? टेबुल पर यह पत्र मिला।

"प्यारी चन्द्रमुखी के मृत्यु के हमी लोग प्रधान कारण हैं. अतएव उसे अकेले ही प्राण दण्ड नहीं मिलना चाहिए, उसमें मेरे पिता, पितामह का भी दोष है। बस मेरी मृत्यु से उनको भी दण्ड मिल जायगा—प्रकृति का दूषित नियम मैं पूरा किये देता हूं।"

× × × ×

देखा आप ने बाल विवाह का परिणाम ? लोगों का अटल विश्वास हो गया है कि "यदि समस्त हिन्दुस्तान नहीं, तो कम से कम बङ्गाल प्रान्त और यू० पी० (संयुक्त प्रान्त) में तो दस वर्ष की अवस्था में लड़कियें माता बनने के योग्य हो ही जाती हैं'। दस वर्ष की अवस्था में, दो एक केस ऐसे भी पेश किये जाते हैं कि जिनको लड़का पैदा हुआ और जीता जागता है, कितनी

थोथी दलील है? और कितना भोला तर्क है ? पहिले इस सम्बन्ध में कुछ न कह कर यहां के 'आबोहवा' वाले सिद्धान्त पर कुछ कहना ज़रूरी होगा ।

जगत प्रसिद्ध डाक्टर हालिक लिखते हैं:—

"जांच करने पर जहां तक मालूम हुआ है संसार की सब जातियों में कन्यायें लगभग एक ही उम्र में रजस्वला होती हैं। यदि अफ़्रीका जैसे गर्म देश की हबशी लड़की और योरप जैसे ठण्डे देश की गोरी लड़की, दोनों एक ही ढंग से परवरिश पावें तो दोनों एक ही साथ ऋतुमती होंगी ।" *

"गोकि इंग्लैण्ड के मुक़ाबले भारत में लड़कियां जल्द स्यानी हो जाती हैं, पर यह सन्देह की बात है कि भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न समय पर लड़कियें स्यानी हों ।" †

मिस्टर राबर्टसन ने ख़ूब जांच कर निश्चय किया है कि भूमण्डल के सब देशों में लड़कियें लगभग एक ही आयु में रजस्वला होती हैं। उनका कहना है कि भारत में प्राकृतिक नियमानुसार बालिकायें रजस्वला नहीं होतीं; वे कुरीति और बुरे व्यवहारों से ज़बर्दस्ती स्यानी बना दी जाती हैं। वे लिखते हैं कि "भारत की राजनैतिक तथा सामाजिक दशा ऐसी बिगड़ी है; यहां का क़ानून, यहां के रीति रिवाज ऐसी बुरी अवस्था में हैं। भारत में स्त्रियां ऐसी मूर्खा बना दी गई हैं; वे ऐसी सख़्त ग़ुलामी में जकड़ी हैं। और यहां की विवाह सम्बन्ध वाली धार्मिक पुस्तकें ऐसा बुरा उपदेश देती हैं कि भारत की कन्यायें प्रकृति नियम के विरुद्ध जल्द सयानी हो जाती हैं। यदि अमरीका या

---

*See Origin of Life, page, 363.

†See Annuals of Medical Science.

इंग्लैण्ड की यही दशा रहती तो वहां की लड़कियां भी इतनी ही जल्द स्यानी हो जातीं। अमरीका में भी बेचारी असहाय, समाज से गिरी हुई ११, १२ वर्ष की लड़कियां (Prostitutes) बाज़ बाज़ बातों में १७, १८ वर्ष की स्त्रियों की सी जान पड़ती हैं। और किसी भी देश की लड़की हो, वह यदि उसी बुरी तरह रक्खी जांयगी तो उन गिरी हुई बाज़ारू लड़कियों की ही तरह बहुत जल्द सयानी हो जांयगी। देहातों के मुक़ाबले शहरों में इन लड़कियों के उभाड़ने का सामान ज़्यादा पाये जाते हैं।" *

लड़कियों को उभाड़ कर ख़राब करने की कई प्रथायें भारत में प्रचलित हैं। उनमें से कुछ यह हैं :—

(१) लड़कियों से प्रेम की बातें करना।
(२) गन्दे गन्दे किस्से कहानियें उन्हें पढ़ने देनी।
(३) उनके सामने उनके शादी विवाह की बातें करना।
(४) उनके सामने ऐसी बातें करना जिनसे उनके दिल में यह ख्याल पैदा हो जावे कि वे सयानी हो गई हैं।
(५) बचपन में विवाह कर देने से। उनका आपस में मेल जोल होने से।
(६) गुड़ियों के खेल से। उन्हें गुड़ियों के साथ सुलाने से, उनका (गुड़ियों का) विवाह करने से। उनके बच्चे होने की नक़ल करने से। इन सब बातों के होने से, या बच्चों के साथ सोने से बच्चे समय के पहिले ही सयाने हो जाते हैं। और उन्हें अनेक प्रकार की शारीरिक हानियें भी पहुंचती हैं।

दुनिया भर के सब देशों में रजस्वला होने का नियम ठीक

*See Origin of Life by Hallich, page 378.

—देश दर्शन।

ऐसा ही है जैसे भारत का। इस में भारत की 'आवोहवा' को दोषी ठहराना भारी मूर्खता का परिचय देना है।

इंग्लैण्ड और देश की अपेक्षा विशेष ठण्डा है। पर वहां की लड़कियां भी इसी आयु, याने १२ से १७ वर्ष में, और कभी कभी नौ वर्ष की आयू में ही लड़कियें रजस्वला हो जाती हैं और ४५ से ५० वर्ष तक हुआ करती हैं*। प्रकृति का नियम संसार भर में एक सा है। उसमें काले गोरे का भेद भाव नहीं।

इगलैंण्ड के 'मैनचिस्टर लाइङ्ग इन' अस्पताल में ३४० लड़कियों की परीक्षा ली गई तो उन में से

१०	लड़कियें	११	वर्ष की आयु में
१६	"	१२	" "
५३	"	१३	" "
८५	"	१४	" "
९७	"	१५	" "

और

७६	"	१६	" "

रजस्वला हुईं।

भारत में २७ गोरी लड़कियों की जांच हुई उन में

४	लड़कियें	१२—१३	वर्ष के बीच में
८	"	१३—१४	" "
९	"	१४—१५	" "
५	"	१५—१६	" "

और

१	"	१६—१७	" "

रजस्वला हुईं†

*See the Origin of Life, page 363.

†See Dr. Frayer's, Calcutta European Female Orphan Asylum.

डाक्टर हटक्लिन्स कहते हैं कि दो गोरी लड़कियें इतनी जल्दी रजस्वला हुईं कि वे ११ वर्ष और ७ महीने की आयु में मातायें बन सकती थीं।

इंग्लैण्ड में एक युवती स्त्री एक दस वर्ष के लड़के के साथ सो रही थी। उसके मन में पाप समाया और उसने यह सोच कर, कि उस लड़के के साथ विषय करने से गर्भ का भय नहीं है, भोग किया। पर उसे गर्भ रह गया और उसे बड़ी ज़िल्लत और शर्म उठानी पड़ी।*

एक दस वर्ष १३ दिन की गोरी लड़की को लड़की पैदा हुई उसका वज़न ७ पाउन्ड था।†

डाक्टर रावर्टसन का कथन है कि भारत और इङ्गलैण्ड दोनों जगह नौ वर्ष की लड़कियां रजस्वला हुआ करती हैं या हो सकती हैं।‡

टेलर साहब का कथन है कि "किसी भी देश में ९ वर्ष की लड़कियां गर्भवती हो सकती हैं। अर्थात् ऐसा हो जाना असम्भव नहीं है।§

इन अङ्कों और प्रमाणों से पाठक समझ ही गये होंगे कि यह बे बुनियाद दलील, कि "भारत की 'आबोहवा' और देशों की अपेक्षा अधिक गर्म है। इसी कारण लड़कियें छोटी अवस्था में ही ऋतुमती हो जाती हैं" कहां तक लचर और थोथी है।

---

*See Medical Jurisprudence, by R. Chevers, pages 672, 692.

†The Origin of Life, page 456.

‡Asper Transyloansis Journal, Vol. VII, page 447.

§See Medical Jurisprudence by R. Chevers p. 673.

असल बात तो यह है कि हम लोग 'कूपमण्डूक' की भांति पुराने कुंए के भीतर से ही अपना वेसुरा राग अलापते हैं, अपना मनमाना गीत गाते हैं और पुरानी लकीरों को पीटते हैं। अब हम इस विषय को यहीं समाप्त कर 'वाल विवाह' के उन दोषों के वारे में कहेंगे जिन पर कि भारत वासियों को यह घमंड है कि ११-१२ वर्ष की लड़कियों को बच्चे पैदा होते हैं और अच्छे रहते हैं।

कम अवस्था का गर्भ माता पिता और स्वयं पेट की सन्तान तक में लिये बड़ा हानिकारक होता है। ऐसी अवस्था में गर्भवती होने से कन्याओं को किन किन कष्टों का सामना करना पड़ता है? बच्चे कितने दुर्वल और चिर रोगी पैदा होते हैं? उनकी आयु कितनी कम होती है। अकाल मृत्यु में वह बच्चे किस औसत से मरते हैं? आदि विषयों के सम्बंध में कुछ कहना उचित ही होगा।

सब से पहिली बात तो यह है कि छोटी उम्र की लड़कियों को, बच्चों के जन्म के समय अत्यन्त कष्ट होता है और बहुधा उनकी मृत्यु हो जाती है। यदि इस कठोर कष्ट से प्राण न निकले तो बच्चा, सुकमार छोटी वालकाओं का अङ्ग चूस चूस कर उन्हें अत्यन्त निर्बल बना देता है और दो तीन वार के बच्चा जनने में वे कोमलाङ्गिनी वालिकायें इतनी कमज़ोर, जर्जर और चिर रोगी हो जाती हैं कि मरते दम तक फिर उनका स्वास्थ संभलने में नहीं आता और मामूली से मामूली बीमारियें उनके जीवन का अन्त कर देती हैं। यही कारण है कि भारत की २५ वर्ष की लड़कियें वूढ़ी गिनी जाती हैं। और बहुत तो इसी अवस्था में 'नानी' या 'दादी' हो जाती हैं।

२५ वाल गर्भवती स्त्रियों कीं जांच की गई जिस से मालूम हुआ कि ५ लड़कियों को गर्भ गिर गया, ३ बच्चा जनने के समय मर गईं । ६ को जनने के समय अत्यन्त कष्ट हुआ और उनके पेट के बच्चे औज़ारों के ज़रिये निकाले गये । ५ को बच्चा जनने के वाद पुराना मूत्र रोग हो गया । २ बच्चा पैदा होने पर प्रसूत रोग में पड़कर और अत्यन्त निर्बल होकर मर गईं । ३ दूसरी वार बच्चा जनने पर मर गईं २ तीसरी समय बच्चा जनने पर मर गईं और १२ अत्यन्त कष्ट उठाकर मरने से बच गईं ।*

अर्थात्—कुल २५ में से १० तो मर गईं और १२ चिर रोगी हो गईं । केवल २ लड़कियें अच्छी रहीं ।

वाल माताओं को जिन जिन कष्टों का सामना करना पड़ता है यह बात वे ही भली प्रकार समझ सकती हैं । हम और आप नहीं । मानसिक कष्ट भी उन्हें कम नहीं होते । गर्भ गिर जाता है इससे उनकी आत्मा को बड़ा दुख पहुंचता है । यदि मरा हुआ बच्चा पैदा होता है तो इस से भी उन्हें अपार कष्ट होता है । अक-सर जीवित लड़का पैदा होकर तुरन्त मर जाता है, बच्चा कमज़ोर पैदा होता है । कभी कभी तो बच्चा ऐसा कमज़ोर उत्पन्न होता है कि वह दूध तक नहीं पी सकता । बच्चा कुछ ही दिनों तक ज़िन्दा

---

* Asper Dr. D. C. Shome Medical Congress, Calcutta.

यहां २५ का जोड़ न मिलेगा क्योंकि एक ही लड़की को ३ वार भिन्न भिन्न रोग हुए हैं तो वह तीन वार गिनी गई है । इसी कारण जोड़ बढ़ गया है ।

उपरोक्त कुल पंक्तियें 'देश दर्शन' की हैं ।

—सम्पादक ।

रहता है। पर उसका शरीर क्षीण होता रहता है और शीघ्र ही वह मर जाता है। बच्चा, यदि खुदा न खास्ता, इन मुसीबतों को पार भी कर गया तो बड़ा होकर निर्बल स्त्री या पुरुष होता है और ज़िन्दगी भर कष्ट भोगता है।

गत मनुष्य गणना से पता चलता है कि वाल्यावस्था का गर्भ अकसर गिर जाता है। पहिले दो तीन बच्चे, जो बाल माताओं से उत्पन्न होते हैं अकसर मर जाते हैं और जो जीते भी हैं वह नाटे, दुर्बल, आयूपर्यन्त रोगी और अल्प आयू होते हैं। एक हज़ार बच्चों में ३३३ बच्चे एक वर्ष की आयू में मरजाते हैं अर्थात् हर तीन बच्चों में एक बच्चा मर जाता है।

भारत गरम देश है और यहां की आबोहवा बच्चों के लिये बहुत माफ़िक है। पर फिर भी वच्चों के अकाल मृत्यु का दृश्य इतना भयानक है! इन बच्चों की मृत्यु संख्या २८ लाख, प्रति वर्ष है। अब ज़रा स्त्रियों की मृत्य पर भी प्रकाश डालना आवश्यक है :—

हम और प्रान्तों को छोड़कर, केवल संयुक्त प्रान्त (यू० पी०) के बारे में ही कहेंगे। और प्रान्तों में, जिसमें बङ्गाल आदि भी शामिल हैं और जहां विवाह बहुत ही छोटी अवस्था में होते हैं, पाठक स्वयं अनुमान करलें अस्तु। सं० १९०१ में यू० पी० में, २, ३४, ६२, ८८४ स्त्रियां थीं और १९११ में २, २९, ४०, ८०९ रह गईं। याने केवल १० वर्षों में, ५, २२, ०७५ स्त्रियें कम हो गईं। सं० १९११ के आल इण्डिया सेंसस रिपोर्ट फ़ार यू० पी० में लिखा है।

" In the last Decade, there has been a very great loss of women. The loss is general and wide-spread

and so severe that the Province is worse off for females than it has been for last 30 years."

अर्थात्—गत दस वर्षों में स्त्रियों की बड़ी मृत्यु हुई हैं। यह बेचारी आम तरह पर मरी हैं और चारों तरफ़ मृत्यु ख़ूब हुई है। इतनी अधिक मृत्यु हुई है कि औरतों की ३० वर्ष की ख़राब हालत और अवतर हो गई है। फिर लिखा है :—

"Fever as a whole is more fatal to females than males."

अर्थात्—ज्वर पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के लिये ज़्यादा प्राण घातक होता है।

रिपोर्ट का फिर कहना है :—

" It appears that mortality is always highest among females."

अर्थात्—" देखा जाता है कि (भारत में) स्त्रियां सब से अधिक मरती हैं "।.................................इत्यादि—

कम उम्र में बच्चा जनते जनते स्त्रियें वास्तव में अधमरी हो जाती हैं। उन्हें अनेकानेक रोग हो जाया करते हैं और कोई मामूली से मामूली रोग भी उनके जीवन दीप को सहज ही में बुझा देता है। भारत में Hysteria (फ़िट) का रोग तो फ़ैशन में दाख़िल है।

रोगी स्त्रियों को छोड़ कर, यदि दूसरी ओर देखिये तो भारत में ६, ६८, ६३२ अपाहिज और कोढ़ी हैं। जिन में २,६२,८५८ स्त्रियां हैं और इनके विवाह के फल स्वरूप १,१६,३६१ अपाहिज लड़के हैं। जिनकी आयू १५ वर्ष से भी कम है। दस से १५ वर्ष की आयू के ५३, ५०६। ५ से १० वर्ष के ४५, ३६३ और ५ वर्ष से कम अर्थात् दूध पीने वाले १६, ४८१ हैं।*

* Asper Dr. Albert's System of Medium.

—देश दर्शन।

पर मज़ा तो यह है कि यह सब विवाहित हैं क्योंकि यदि विवाहित न हों तो सेवा करने को "दासी" कहां से आवे ?

भारत के नवयुयक प्रायः सभी पेशाब, पेचिश या बुख़ार के रोग से दुखी रहते हैं। यहां पेशाब की बीमारियों से अधिक लोग मरते हैं। फ़ी सैंकड़ा १५ नवयुवक इन रोगों के ग्रास बनते हैं।

हमारे कहने का सारांश यह है कि 'बाल विवाह' तो एक ऐसी बला है जिससे समाज ही नहीं, बल्कि हमारा देश भी रसातल की ओर मुँह उठाये चला जा रहा है। निर्बल सन्तानों का पैदा करना, भारत के ग़ुलामी की ज़ंजीर में और कड़ियें जोड़ना है; निर्बल को पृथ्वी पर रहने का कोई आधिकार ही नहीं है।

"Weaklings have no place in the world. It is Sin to be weak. It is a sin to beget weak children."

सुप्रसिद्ध इतिहासाकार टाल वारिस ह्वीलर लिखते हैं कि:—
"जब तक भारतवासी छोटी छोटी बालिकाओं का विवाह छोटे वालकों से करते रहेंगे तब तक उनकी सन्तान छोटे वच्चों से अधिक अच्छी दशा में कभी न रहेगी। स्वाधीनता और स्वराजय के आन्दोलनों में वे निस्तेज और बलहीन हो जायेगें। राजकीय उन्नति का उपभोग करने के लिये वे किसी प्रकार की शिक्षा में समर्थ नहीं हो सकेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि शिक्षा के प्रभाव से उनकी बुद्धि में गम्भीरता आ जायगी और वे किसी गम्भीर तथा प्रौढ़ मनुष्य के समान बातें करने लगेंगे परन्तु सब कुछ होते हुए भी उनका अचारण असहाय बालकों ही के समान बना रहेगा"

उपरोक्त कथन के सत्यता के प्रमाण में हम बिलायत को ही उदाहरण स्वरूप पेश करते हैं:—

जब तक कोई जाति अज्ञान होती है, उसके बुद्धि विवेक का लेश नहीं होता उनहीं देशों अथवा समाजों में यह सामाजिक कुरीतयां अपना अड्डा (Head office) जमाती हैं।

बाल विवाह का रिवाज लग भग सब ही देशों में था। सभ्यता की डींग मारने वाले और आज दिन संसार को पाठ पढ़ाने वाले इंगलैण्ड में भी अट्ठारहवीं शताब्दी के शुरू तक यह कुरीतियें जारी थीं। फ्रांस के राजा फ़िलिप ने इंगलैण्ड की राजकुमारी को १२ वर्ष की छोटी आयू में ब्याहा था। आपकी दूसरी राजकुमारी का विवाह नौ वर्ष की आयू में हुआ। जब इंगलैण्ड के राजा रिचर्ड का विवाह फ्रांस की राजकुमारी से हुआ उस समय राजकुमारी की आयू कुल ८ वर्ष की थी। श्रीमती एलिज़बेथ हार्डविक का विवाह १३ वर्ष की आयू में हुआ। आडेर (सौथ एम्पटन के अर्ल की लड़की) का विवाह हो चुका था जब १४ वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हुई। इङ्गलैण्ड के राजा हेनरी (सातवें) के अत्यन्त निर्बल होने का कारण यही था कि उनकी माता का विवाह कुल नौ वर्ष की अवस्था में हुआ था। और जब हेनरी का जन्म हुआ तो लेडी मारग्रेट की आयू कुल दस वर्ष की थी। इङ्गलैंड के उच्च श्रेणी के लोगों की प्रायः यही हालत थी। वे अत्यन्त न्यून अवस्था में विवाह करते थे।*

---

* See Medical Jurisprudence, for India by R. Chevers, Page 692.

मारिस* का विवाह आठ वर्ष की आयू में हुआ और १४ वर्ष की आयु के पहिले ही उन्हें लड़का हुआ।

वरजिनिया नगर में एक १३ वर्ष की लड़की को बिना किसी अधिक कष्ट के लड़का पैदा हुआ।†

जो जो घटनायें ऊपर लिखी गई हैं यह केवल शाही खान्दान (Royal Family) ही की है। प्रजा उस समय किस हालत में होगी यह पाठक स्वयम समझलें।‡

मुसलमानो में भी यह कुरीति थी और है भी। उनके धार्मिक ग्रन्थों से पता चलता है कि सात वर्ष की आयू के ऊपर की आयू वाली लड़कियों के साथ विषय करना जायज़ है।§

मुसलमानों के नबी मोहम्मद ने आयेशा के साथ विवाह किया था जब उसकी आयू थी केवल सात वर्ष की। जब आठ वर्ष की आयू हुई तो उसके साथ सभोग किया।||

यदि किसी नौ या दस वर्ष की लड़की में युवावस्था के चिन्ह प्रगट हों तो वह बालिग़ समझी जाती है।¶

इङ्गलैण्ड के बारे में जो कुछ भी ऊपर कहा जा चुका है उस से पाठकों ने समझ ही लिया होगा कि पहिले वहां की कैसी

---

* Maurice 23, Lord Berkley, Edward I.

† See Origin of Life, Page 456.

‡ Asper Phildelphia Medial Examiner, April 1855.

§ See Notes on Mohammedan Law by Khan Bahadur M. T. Khan.

|| Asper the Origin of Life, page 458.

¶ Asper Mainaghten's Mohammedan Law, page 228 and 266.

ख़राब स्थिति थी और अब वही इंगलैण्ड अपने प्रताप के सूर्य्य पर आंख भी नहीं ठहरने देता। सामाजिक सुधारों का यह फल होता है!

इंगलैण्ड में एक अर्से से १५ से ४५ वर्ष की विवाहित। स्त्रियों की संख्या फ़ी सैकड़ा ४७ हैं अर्थात १०० में कुल ४७ स्त्रियां विवाहिता हैं। और भारत में १५ वर्ष से नीचे वाली विवाहिता स्त्रियों को छोड़कर, जिनकी संख्या कम नहीं है, और केवल उन्हीं की संख्या लेने पर, जो १५ से ४० वर्ष की हैं, मालूम होता है कि फ़ी सैकड़े ८२·७ अर्थात् ८२ से भी अधिक स्त्रियां विवाहिता हैं।*

जर्मनी की सवा तीन क्रोड़ स्त्रियों में से कुल ६८ लाख विवाहिता है और भारत की १४ करोड़ में के सात करोड़ विवाहिता और लग भग तीन करोड़ विधवा हैं!!†

सब से मज़ेदार बात तो यह है कि भारत में जन संख्या संसार के सब देशों से अधिक है। इससे यह बात आप से आप सिद्ध होती है कि भारत की स्त्रियें और देशों की अपेक्षा ज़्यादा बच्चे जनने वाली होती हैं!

इन सब बातों का निचोड़ यह निकला कि 'बाल विवाह' ही हमारे सामाजिक कुरीतियों का केन्द्र है। पर विवाह होना कब चाहिए? यही बात रह गई है।

विज्ञान द्वारा विचार करने से पुरुषों के लिये २६ से ३२ तक और स्त्रियों के लिये २२ से २८ तक की आयू विवाह के लिये

---

* Asper Government Report Sanitary Measures in India 1905-06 page 80.

† Asper Statesman's year Book 1911.

सब से उत्तम है। पर चूँकि हमारी आदतें इस बुरी तरह बिगड़ी हुई हैं। अन्धकार का परदा हमारे आंखों पर इतने दिनों से पड़ा हुआ है कि पाठक इस नियम को विज्ञान की दृष्टि से, बहुत दर्जे तक न मान सकेगें। इसलिये हमारी समझ में स्त्रियों का विवाह फ़िलहाल, १६ वर्ष के ऊपर और पुरुषों का २५ वर्ष के ऊपर ही होना उचित होगा। क्योंकि इस से पहिले वीर्य्य परिपक्व नहीं होता और ऐसी हालत में सन्तानोत्पति से वही भयंकर परिणाम होते हैं जिनका चित्र ऊपर काफ़ी से ज़्यादा खींचा जा चुका है। लड़कियों का इस अवस्था में याने १६ वें और पुरुष का २५ वर्ष से कम की आयु में तो विवाह कदापि कदापि न होना चाहिए।

डाक्टर हालिक कहते हैं:—योरुप और अमरीका में आम तौर पर विवाह करने का समय पुरुष के लिये २८ से ३१ वर्ष तक और स्त्री के लिये २३ से २८ वर्ष तक होता है। पर उन लोगों की संख्या, जो और भी देर में विवाह करते हैं या वे स्त्री पुरुष जो जीवन पर्यन्त विवाह करते ही नहीं, बढ़ती जा रही है"।

टामस पार १५२ वर्ष तक जीवित रहे। उन्होंने १२० वर्ष की आयु में विवाह किया और १४० वर्ष की आयु में उन्हें लड़का पैदा हुआ।*

फ्रेलिक्स प्लेटर बतलाते हैं कि उनके दादा को १०० वर्ष की आयु तक बराबर लड़के होते रहे।†

* Reference obtainable in three Books (1) Philosophical Transaction (2) the origin of life and (3) the Canjugal Relationship.

† The Canjugal Relationship as to health, by K. Gardner, page 159—167.

सीज़ नगर के बड़े पादड़ी लिखते हैं कि "सीज़ में एक ६४ वर्ष के पुरुष ने एक ८३ वर्ष की स्त्री से विवाह किया। स्त्री गर्भवती हुई और पुत्र उत्पन्न हुआ।*

मारशल डी० एस्ट्री ने अपनी दूसरी शादी ६१ वर्ष में की। मारशल डी रिचल ने, मैडम डीपल के साथ ८४ वर्ष की उम्र में शादी की। सर स्टीफ़ेन आक्स की शादी ७७ वर्ष की आयु में हुई और उन्हें चार लड़के हुए। पहिला ७८ वें वर्ष में, दूसरी बार दो एक साथ (जोड़ा) और चौथा ८१ वें वर्ष में।

Memoires de Armourer ने ८० वर्ष की आयु में विवाह किया और उसे तन्दुरुस्त लड़के पैदा हुए। बेगन साहब का कहना है कि "मेरे एक मित्र ७५ वर्ष की आयु में एक स्त्री की मोहब्बत में फंस गये और उन्होंने उसके साथ विवाह किया।"

जो कुछ भी बाल-विवाह के सम्बन्ध में ऊपर कहा जा चुका है। इस विषय पर अब कुछ विशेष लिखना केवल कागज़ काला करना होगा हम विशेष न कह कर श्रीमती एनी बेसेन्ट के Wake up India से कुछ वाक्य ज्यों के त्यों दोहराकर इस अध्याय को समाप्त करते हैं। अब आप जाने और आपका काम। उनका कहना है:—

"यदि अब भी हम सावधान न हुए तो हमारी सब आशायें धूल में मिल जायगीं और हमारी जाति का सर्वनाश एक निश्चित विषय (Settled Fact) हो जायगा। यद्यति भारत ललनाओं को हमने विद्या और विज्ञान से वञ्चित रक्खा है तो भी परमात्मा की दया से अन्य राष्ट्र की स्त्रियों के

* See History of the Acadamy of Science.

सन्मुख उनका सिर ऊंचा ही है। सुशीलता; सुन्दरता, पवित्रता, नम्रता, पतिब्रत और स्वार्थ त्याग में यह अब भी बाज़ी मारे हैं। शिक्षा से वञ्चित रक्खे जाने पर भी ऐसा पवित्र बिचार! गुलामी में जकड़े हुये पर भी एसी उन्नति, ऐसा उच्च स्वभाव! बाल मातायें बनाये जाने पर भी ऐसा सुन्दर और मनोहर शरीर! बल विवाह की कुप्रथा नवीन भारत के लिये अत्यन्त लज्जास्पद है। इस को निर्मूल करना भारत सन्तान का सब से प्रथम और महान् कर्तव्य है"



पाप का परिणाम।

(१)



मेश! क्या तुम्हें अपने पिता के हृदय को दुःखी करने में ही सुख मिलता है? क्या अब अपने बाल्यावस्था की ओर तनिक दृष्टि भी नहीं फेरते? जिस समय तुम अपनी बड़ी बहन के तनिक अधिक मिठाई खा लेने से रूठ पड़ते थे, प्रति दिन किसी न किसी बात से रूठ कर सारा शरीर धूल धूसरित करते थे, उस समय तुम्हें प्यार से उठा कर कौन चूमता था? तुम्हें मिठाइयां देकर सदा प्रसन्न रखने की चेष्टा कौन करता था? यही पिता तुम्हें सुख पहुंचाने के लिये, तुम्हारा प्रसन्न मुख देखने के लिये निःस्वार्थ प्रेम से तुम्हें छाती से लगाये रहते थे। क्या तुम इन सब बातों को, उस दिन को तथा उस समय को भूल गये? नहीं नहीं तुम इन बातों को आजन्म भूलने की चेष्टा करते रहने पर भी नहीं भूल सकते हो, तब फिर अब उन्हें दुःख देने में तुम्हें क्या सुख है?"

"मा! मुझे क्यों कृतघ्नता कि दोष से दूषित करती हो? मैं

कृतघ्न नहीं हूं। परन्तु यह प्रश्न ऐसा जटिल आ पड़ा है जिसके कारण मैं विवश होकर कृतघ्न बन रहा हूं।"

"क्यों रमेश, ऐसा कौन सा कारण आ पड़ा है, जिस से तुम विवाह करना अस्वीकार करते हो। मैं समझती हूं तुम्हारे पिता को तुम्हारी भलाई का ध्यान अब भी वैसा ही है, जैसा कि पहले था फिर यदि इस विवाह से तुम्हारी कुछ भी बुराई होती तो वे कभी तुम्हे विवाह करने की राय नहीं देते।"

"मां! तुम जान कर भी क्यों अनजान बन रही हो, इस विवाह में यदि मेरी कुछ बुराई नहीं है, तो विषेश भलाई भी नहीं है, और उधर दूसरे पक्ष की अनेक बुराइयां हैं। एक पक्ष का विशेष लाभ नहो, और दूसरे पक्ष की अशेष हानि हो तो उस काम से फ़ायदा क्या? मैं इसीसे इसे अस्वीकार करता हूं।

"तुम ने कारण तो कुछ कहा ही नहीं, किस पक्ष की क्या बुराई है, जरा वह भी तो सुनूं।"

"बार बार एक ही बात को क्यों कहलाती हो, मां! मैंने तो कह ही दिया कि इस विवाह में और कोई बुराई हो वा न हो पर सब से बड़ी बुराई "तिलक" है। इस सर्वनाशकारी तिलक ही के कारण मेरा हृदय विवाह करने से कांप उठता है। पिता तो केवल मेरी ही भलाई देखते हैं। पर ज़रा कन्या पक्ष की ओर दृष्टि तो फेरो। विचारो तो रामा बाबू की क्या हालत हो रही है। माना, वे ऋण ले कर विवाह कार्य्य सम्पादन करेंगे परन्तु ध्यान से सोचो तो ज़रा ऋण का परिशोध कैसे होगा। ऋण भी थोड़ा नहीं २०००) रुपये! इतने बड़े ऋण का परिशोध करना उनके अधिकार के बाहर की बात है। अतएव इस विवाह से मुझे कुछ भी सुख नहीं और जब सुख ही नहीं तो फिर ऐसे विवाह के करने ही से क्या?"

श्यामा फिर भी कुछ उत्तर दिया ही चाहती थी कि इतने में दामोदर बाबू के कचहरी से आ जाने के कारण वह बात करना छोड़, पति-सेवा में प्रवृत्त हो गई ।

(२)

दामोदर बाबू का मकान पटना ज़िले में और अवस्था लग भग ५५ वर्ष की है। आप बी० एल० की परीक्षा पास कर सपरिवार अपने मित्र यतीन्द्रनाथ के साथ मुज़फ़्फ़रपुर आकर प्रेक्टिस करने लगे। परिवार में इनकी स्त्री श्यामा तथा पुत्र रमेश ही है। एक पुत्री भी थी जो ३ वर्ष हुए अपने श्वशुराल चली गई है। दामोदर बाबू की आय अच्छी है। आप की गिनती मुज़फ़्फ़रपुर के अच्छे वकीलों में हैं। मुज़फ़्फ़रपुर में इन्होंने अपना मकान भी बना लिया है और एक प्रकार से वहीं के निवासी हो गये हैं। इतना होने पर भी आप "द्रव्यमेव सर्व्वम्" के परिपोषक हैं। दामोदर बाबू में और वकीलों से भिन्न एक गुण यह है कि आप यथाशक्ति झूठा मुकद्दमा हाथ में नहीं लेते। परन्तु फिर भी वकील हैं, उस व्यवसाय का प्रभाव यदि पूर्ण रूपसे नहीं तो कुछ तो अवश्य इनके ऊपर भी पड़ा है। इनका पुत्र रमेश स्थानीय कालेज के थर्ड ईयर क्लास में पढ़ता है। अवस्था २० के लगभग है। रमेश स्वतन्त्र विचार का मनुष्य है। लकीर का फ़कीर बनना इसे पसन्द नहीं। पढ़ने में भी तेज़ है। कालेज के सभी प्रोफ़ेसर रमेश से सदा संतुष्ट रहते हैं।

दामोदर बाबू तो रमेश का विवाह मैट्रिक पास कर देने ही पर करना चाहते थे, परन्तु रमेश के आनाकानी करने के कारण तथा और भी कई एक परिवारिक घटनाओं। के कारण वह अभी तक क्वांरा ही है। इस वर्ष दामोदर बाबू ने विवाह करना निश्चित कर लिया है।

(३)

रामा बाबू मुज़फ़्फ़रपुर में मुख़्तारी करते हैं। इनका मकान उसी ज़िलेके सरमई ग्राम में है। वहीं कुछ खेती और गृहस्थी भी होती है। परिवार में इनकी स्त्री भामिनी, बड़ी लड़की सुशीला, छोटी लड़की नलिनी और एक सयाना पुत्र रघुनन्दन है। रामा बाबू तो स्वयं मुज़फ़्फ़रपुर में ही रहते हैं, पर रघुनन्दन घर पर रहता है, तथा खेती और गृहस्थी की देख-भाल करता है। दोनों लड़कियां अभी अविवाहिता हैं। छोटी की अवस्था तो अभी ८ वा ६ वर्ष की है, पर बड़ी लड़की की अवस्था १६ वर्ष की हो गई। अभी तक अविवाहिता रहने का कारण धनका अभाव ही दीख पड़ता है। लड़की के सयानी हो जाने से लोग विवाह करने में आना-कानी करने लग गये, अतएव रामा बाबू बड़े उद्विग्न हो उठे थे। किसी प्रकार दामोदर बाबू ने रमेश का विवाह सुशीला से करने का वचन भी दिया तो तिलक के लिए अड़ गये। दामोदर बाबू का कहना था—लड़का बी० एस० सी० में पढ़ता है, कैसा सुशील तथा सुन्दर है, इसको ३०००) से कम क्या तिलक मिलना चाहिये? अन्तमें रामा बाबू से १५००) रुपयों में बात पक्की ठहरी। रामा बाबू को भी किसी प्रकार स्वीकार करना ही पड़ा। वह ऋण लेकर सुशीला से उद्धार पाने की आशा करने लगे।

(४)

इस प्रकार विवाह नियत होना रमेश को उचित नहीं जंचा। उसने अपनी मां से साफ़ साफ़ कह दिया कि मैं विवाह नहीं करूंगा। दामोदर बाबू इस बातसे बहुत क्रोधित हो उठे। भला, रमेश यहां तक बढ़ गया कि अपने विवाह में आप हस्तक्षेप करने

लगा ! यह बात उनके लिये असह्य हो उठी । उन्होंने रमेश को बुलाकर एक दिन खूब ही फटकारा । रमेश चुपचाप सब सुनता रहा । श्यामा भी वहीं थी । उसके दूसरे दिन माता पुत्रमें जो बात हुई उसे पाठकगण प्रारम्भ ही में पढ़ चुके हैं । रमेश को किस कारण विवाह अस्वीकार है यह बात दामोदर बाबू को अभी तक नहीं मालूम थी । उसी दिन पत्नी द्वारा उन्होंने सुना कि रमेश तिलक को सर्वनाशकारी बतलाता है तथा उसी कारण विवाह करना अस्वीकार करता है । दामोदर बाबू सोचने लगे, क्या रमेश का कथन ठीक है ? तिलक सर्वनाशकारी है ? नहीं ऐसा नहीं हो सकता । यदि यही बात होती तो भला पहले के लोग क्या सभी मूर्ख थे जो अब तक इस प्रथा को रक्खे रहते ? हां, ठीक तो—तिलक लेने में हानि क्या है ? कन्या पक्ष के लोग विवाह के लिये आग्रह करते हैं । मुझे तो लड़का है पर उनको लड़की । इसी के दण्ड स्वरूप उन्हें तिलक देना पड़ता है । अस्तु जो हो मैं तो इसे छोड़ नहीं सकता । आज कलके लड़के बड़े कुढंगे निकलते हैं । पिता का वचन नहीं मानना, अपने विवाह में आप ही परामर्श देना उनके लिये सर्वथा अनुचित है । चाहें जो हो, मैं तो इसे नहीं छोड़ सकता । इसी वर्ष रमेश का विवाह करूंगा और तिलक भी पूरा ही लूंगा ।" यही सब सोचकर दामोदर बाबू ने स्त्री से पुत्र को समझाने के लिये कह दिया तथा यह भी कह दिया कि इसी वर्ष रमेश का विवाह होगा तथा तिलक भी लिया ही जायेगा ।

श्यामा ने पुत्र को फिर भी समझाया । रमेश को इन सब कारणों से आन्तरिक वेदना अनुभूत होने लगी । उसने सोचा— "प्रभो क्या भारत के लोग इसी प्रकार एक दूसरे का सत्यानाश करने पर उद्यत हैं ? यह तिलक क्यों लिया जाता है ? मुझे तो

यह केवल एक अन्याय दीख पड़ता है, उसे (कन्यापक्ष को) किसी न किसी प्रकार सहन करना ही पड़ता है। इस कुप्रथा के कारण कितने घर सर्वनाश हो गये। कितनी सुकुमारियों ने शरीर त्याग दिया। भारतवर्ष की अवस्था अत्यन्त हीन है तथापि यहां की कुरीतियों ने इसका पिण्ड अभी तक नहीं छोड़ा है। औरों की तो बातें ही क्या, यहां के सुविज्ञ नागरिक लोग भी इस प्रथा के विरुद्ध बोलना पाप समझते हैं। जिस परिवार में लड़के का जन्म होता है वहां तो मानो आनन्द की सीमा ही नहीं, परन्तु उसी परिवार में यदि एक अभागिनी ने जन्म ग्रहण किया तो सभी का हृदय उपेक्षा से भरा दीख पड़ने लगता है। क्या लड़कियां पाप की गठरी होती हैं, अथवा साक्षात् दरिद्रता की मूर्ति होती हैं, जिसके कारण उनका इतना निरादर होता है? हे भगवन्! भारतवर्ष का इस नाशकारी कुप्रथा से उद्धार करो। आज कल इस देश में, जब सब ओर जागृति के चिन्ह दीख पड़ते हैं, वहीं इस प्रथा को जड़से उखाड़ने की कौन कहे, इसके विरुद्ध बोलना भी मानों पाप है। मेरे पिता को १५००) तिलक मिलेंगे उन्हें रुपये का लोभ है परन्तु इससे हमें क्या लाभ? उन्हें तनिक भी ध्यान नहीं कि रामा बाबू की क्या हालत होगी। सुशीला सयानी होगई अतएव अन्य लोग विवाह करना अस्वीकार करते हैं। इसी कारण उन्होंने ऋण लेकर भी विवाह करना निश्चित कर लिया है। मेरी इच्छा विवाह करने की है परन्तु पिता जब तिलक लेना छोड़ दें तब।"

दूसरे दिन दामोदर बाबू ने रमेश को बुलाकर पूछा क्यों रमेश! क्या तुम्हारी इच्छा विवाह करने की नहीं है? रमेश ने उत्तर दिया—पिता, मेरा इस विषयमें कुछ भी कहना सर्वथा अनुचित ही है परन्तु मैं केवल यही कह देना चाहता हूं कि यदि

तिलक कुछ भी न लिया जाय तो मुझे विवाह में और कोई आपत्ति नहीं है। दामोदर बाबू के हृदय में न मालूम क्या आया उन्होंने कहा अच्छा मैं कुछ भी तिलक नहीं लूंगा। और भी कुछ कहना है? रमेश को तो मुंहमांगा मिला, उसने उत्तर दिया मुझे और कुछ नहीं कहना है।

(५)

विवाह निर्विघ्न रूप से समाप्त हो गया। सुशीला भी अपने पति के गृह चली आई। क्रमशः दिन बीतने लगा। आज विवाह हुए तीन मास व्यतीत हो गये। नवदम्पति का प्रेम बन्धन पूर्ण रूपसे दृढ़ हो गया। सुशीला पढ़ी-लिखी युवती थी, उसे पुस्तकों से प्रेम था, प्रतिदिन घर के कार्य्यों से निवृत्त हो कर वह कुछ समय विद्याध्ययन भी करती थी। कभी कभी समय न मिलने पर रात्रि में भी पढ़ लेती थी। केवल पढ़ना ही नहीं प्रत्येक पुस्तक के उद्देश्य को समझने की चेष्टा भी करती थी। आज रात्रि में भी एक पुस्तक लेकर पढ़ने लगी, पुस्तक का विषय था "हिन्दू-विवाह"। सुशीला तीसरा परिच्छेद पढ़ रही थी तथा साथ ही साथ कुछ सोचती भी जाती थी। इस परिच्छेद में हिन्दू-विवाह की कुरीतियों का दिग्दर्शन कराया गया था। किस प्रकार हिन्दू लोग विवाह में नाच मुजरे करा रोशनी इत्यादि के व्यर्थ आडम्बरों में रुपये का अपव्यय करते हैं। किस प्रकार वरपक्ष के लोग इन्हीं अपत्यों के लिए कन्यापक्ष से तिलक चूसते हैं। और इस प्रकार कितने घरों का सर्वनाश होता है। इन्हीं सब बातों को सुशीला बड़े ध्यान से पढ़ रही थी तथा मनन कर रही थी, उसी समय रमेश ने कमरे में प्रवेश किया। सुशीला अपने ध्यान में इतनी डूबी हुई थी कि उसे रमेश का आना भी ज्ञात नहीं हुआ। जब धीरे धीरे

रमेश अत्यन्त निकट आगये तब उसे ज्ञान हुआ और पतिको सामने हंसते देख आप भी उठकर खड़ी होगई! रमेश ने पुस्तक उठा लिया तथा उसी परिच्छेद को देखने लगे। थोड़ी देर में उन्होंने उस परिच्छेद को समूचा ही पढ़ डाला और बोले-देखो तो कैसा अच्छा लेख है। तिलक की कुप्रथा को किस उत्तम रीति से इसने सप्रमाण नाशकारी दिखलाया है। सुशीला ने पूछा क्या आप भी तिलक लेना उचित नहीं समझते, तथा उसे कुप्रथा बताते हैं?

रमेश हंसकर बोले—हैं! क्या तुम्हें मेरे विवाह की बात मालूम नहीं है।

सु०-ज्ञात तो कुछ नहीं, केवल इतना सुनती थी कि, किसी कारण से आप विवाह करना नहीं चाहते थे।

रमेश फिर हंसे बोले-किसी कारण क्या? इसी तिलक के कारण मैं विवाह करना अस्वीकार करता था।

सुशीला ने हंसते हुए कहा—तब फिर श्रीमान् को विवाह स्वीकार कैसे होगया?

रमेश बोले-क्या तुम्हें इतना भी ज्ञात नहीं। जब पिताने यह स्वीकार किया कि मैं तिलक नहीं लूंगा तथा वास्तव में जब तिलक नहीं लिया गया तभी तो मैंने विवाह किया।

सुशीला अत्यन्त आश्चर्य्यैवित हो उठी तथा कुछ देर बाद बोली—वाह, तिलक नहीं लिया गया तो क्या हुआ? मैं ऐसी बच्ची तो हूं ही नहीं जो इतना भी न जान सकूं।

रमेश कुछ अन्यमनस्क होगए थे, बोले क्या कहती हो फिर तो कहो?

सुशीलाने कहा-अच्छा जाने दीजिये उन बातों से अब फल क्या है ।

रमेश ने क़सम दिलाई, हठ किया । तब सुशीला बोली कि मेरे पिता ने कठिनता से २०००) क़र्ज ले आपके पिताके पास १५००) रु० भेजा था यह मुझे मालूम है पर आप से उसका छिपाया जाना संभव है, क्योंकि आप इसके विरुद्ध थे ।

रमेश के ऊपर मानों बिजली गिरी । जहां खड़े थे वहीं ज़मीन में वह धम्म से बैठ गए । बोले आह ! प्रतारणा ? और नहीं कुछ बोल सके, आन्तरिक दुःख की ज्वाला से उनका हृदय जलता बोध हुआ । वह बैठे ही बैठे ज्ञानशून्य से होगए ।

रमेश की इस बिकृत दशा को देख कर सुशीला घबरा गई । उसे अपने कथन पर बड़ा दुःख हुआ । सुशीला ने रेशम का हाथ पकड़ कर उठाया । मंत्र मुग्ध की तरह रमेश को वह शय्या के पास लेगई । और उस पर उन्हें सुलाकर पंखा झलने लगी ।

रमेश कुछ बोले नहीं, आंख बन्द किए पड़े रहे । क्रोध, घृणा और दुःख से उनका अन्तर आलोड़ित हो रहा था ।

दूसरे दिन रमेश बड़ी देर तक सोए रहे । उनका नित्य प्रातः-काल टहलने जाने का नियम था, उस दिन वह भी बन्द रहा । सुशीला खूब सबेरे ही उठकर गृहस्थी के कामों में लग गई, पर रातकी घटना के स्मरण से उसका जी न लगता था रमेश को उठने में जब बहुत देर हुई तो उसने पलंग के पास जा उन्हें उठाना चाहा, पर हाथ छूते ही सहम गई । रमेश का हाथ इतना गर्म था कि—उसका हाथ जलने लगा । ललाट पर हाथ रख देखने से उसे मालूम हुआ कि बड़े ज़ोर से ज्वर चढ़ा हुआ है । रमेश बेहोश

ए थे। सुशीला ने मां को बुलाया। श्यामा ने आकर देखा। रमेश की हालत देख वह भी घबड़ा उठी और दौड़ कर स्वामी को बुला लाई।

(६)

आज सात दिनसे रमेश को अविराम ज्वर है, उसका शरीर भट्टी की तरह जल रहा है एक क्षण के लिए भी बुख़ार नहीं छूटता और न संज्ञा होती है। डाक्टरने पहिले दिनही आकर कहा था कि "हृदय की आकस्मिक उत्तेजना से यह हुआ है। खब सावधानी से रखिए, वैकारिक ज्वर है, यदि सेवा सुश्रूषा में नियम-भङ्ग होगा तो स्थिति बड़ी भयानक हो जायगी।" श्यामा और सुशीला ने डाक्टर के आदेशानुसार सेवा की है, परन्तु सात दिनों से ज्वर में कुछ कमी नहीं हुई। कभी कभी उन्मत्त की भांति प्रलाप होता है, जिससे उसकी हृदय व्यथा स्पष्ट प्रकट हो जाती थी। सुशीला की दशा भी इन कई दिनों में बड़ी शोचनीय होगई है। आज ७ दिन से उसने एक घण्टे के लिए भी रमेश के पलङ्ग की पाटी नहीं छोड़ी है। श्यामा के बहुत आग्रह करने पर किसी तरह स्नान मात्र कर आती है। इन सात दिनों में उस के पेट में सात छटांक भी अन्न-जल नहीं पहुंचा है। रमेश की माता की भी दशा क़रीब क़रीब ऐसी है। दामोदर बाबू का भी यही हाल है। कई बार दामोदर बाबू ने रमेश को उन्माद की तरह बकते सुना है। और उसका बहुत कुछ अर्थ भी समझ गए हैं, इस लिए उन का हृदय और भी अनुतप्त हो रहा है।

आज रमेशका ज्वर और भी बढ़ गया है। डाक्टर अभी देख कर गए हैं, उनके चेहरे से निराशा के चिह्न साफ़ प्रगट थे, बाहर आकर उन्होंने कहा कि जब थर्मामेटर की गर्मी कम हो तो कोई

आयुर्वेदीय दवा दीजिएगा। यह ज्वर कुछ देर बाद ही उतर जायगा और उस समय स्थिति बड़ी कठिन होगी। मेरे पास उसको रोकने की दी दवा नहीं है।

डाक्टरकी बात सुन दामोदर बाबू सब समझगए। थोड़ी देर तक उन्हें अपने कर्त्तव्य का भी ध्यान न रहा। बैठे अनिश्चित भावना से अस्थिर हो रहे थे कि दौड़ी हुई दाई ने भीतर से आकर उन्हें जल्दी चलने को कहा। तब उन्हें अपनी वर्तमान अवस्था का ज्ञान हुआ। दौड़े हुए भीतर गए, पर न जाने क्यों उन्हें एक प्रकार की लज्जा, ग्लानि और दुःख वहां जाने से रोक रहा था। दामोदर बाबू ने जाकर देखा कि बुख़ार उतर रहा है। अब मानो उन्हें होश हुआ, डाक्टर की बातें याद हुई। एक वैद्य को बुलाने को आदमी दौड़ाया गया। वैद्य ने आकर देखा और कहा "अब क्यों कलंक देने के लिए हमें बुलाया है?" दामोदर बाबूकी बार बार बिनती करने पर उन्होंने दो पुड़िया मकरध्वज दिया। और दुःखी मनसे बिना कुछ लिए अपने घर चलेगए।

मकरध्वज हो या अमृत हो, काल पूरा होने पर कुछ भी काम नहीं करता, रमेश की अवस्था बहुत शीघ्रता से बिगड़ती गई। एक घण्टे के भीतर ही रमेश, इस स्वार्थमय प्रताराणामय संसार से इस जन्म के लिए विदा होगए। क्रन्दन कोलाहल से दामोदर बाबू का सुखी संसार व्याकुल होगया। दामोदर बाबू विक्षिप्तकी भांति चिल्लाने लगे पन्द्रह सौ रुपयों की झङ्कार होने लगी।

सुशीला हाय! अभागिनी सुशीला यद्यपि वहीं बैठी थी, पर न होने के बराबर थी। न वह रोती थी और न कुछ बोलती थी। उसके हृदयकी अवस्था कोई भी कह कर नहीं बता सकता। हमें भी उसका ज्ञान नहीं, जान पड़ता है वह जगी हुई बेहोश थी।

* * * * *

रमेश को संसार छोड़े आज तीसरा दिन है। सुशीला उसी दिन से खाटपर पड़ी है। तीन दिन से उसका कण्ठ नहीं खुला है, आंखें एक तरह से खुली हुई हैं। रामा बाबू और उनकी स्त्री दामोदर बाबू के यहां ही आकर उसकी सेवा-सुश्रूषा में लगे हैं। डाक्टर और वैद्य अवस्था अच्छी नहीं बताते, फिर भी इलाज हो रहा है। सुशीला बेहोश थी। श्यामा और भामिनी का हृदय टुकड़े टुकड़े होचुका था, पुत्र और पुत्र तुल्य जामाता के शोक से तो वह कातर थी ही, उसपर सुशीला की यह संकटावस्था उन्हें जीवन्मृत कर रही थी और आंसू भरी आंखों से एक टक उसकी ओर देख रही थी।

(७)

दामोदर बाबू अपने कमरे में एक कुर्सी पर बैठे थे। सामने के टेबुल पर पुस्तकें और क़लम दावात कागज़ अव्यस्थित भाव से पड़े थे। मोमबत्ती का काला धुंधला प्रकाश हो रहा था। कमरे में उनके श्वांस की आवाज़ के सिवा और कोई शब्द नहीं सुन पड़ता था। उनके मुख पर पश्चात्ताप की आभा प्रतिभासित हो रही थी। कुछ देर बाद वह आप ही आप कहने लगेः—भगवन्, यह किस पापका फल है? हमने कौनसा अपराध किया, नाथ! हाय, क्या सच्मुच रमेश मेरे ही पाप से गया है?

क्या पन्द्रह सौ रुपये के कारण मेरा लाखों का हीरा चला गया!—नहीं. यह सब भावना है, रमेश बिचारे को मालूम कैसे हो सकता है? हमने किसी से कहा नहीं, और रामा बाबू भी किसी से कह नहीं सकते।—तब फिर प्रलाप की हालत में वह क्या कहता था? ज़रूर ज़रूर उसे मालूम हो गया! मेरेही—हाय! मेरे ही पाप का यह परिणाम है—

दामोदर बाबू दुःखसे कातर हो रोने लगे। एक मात्र पुत्र के शोक से उनका हृदय हाय हाय करने लगा। ठीक उसी समय सामने की खिड़की का द्वार बड़े ज़ोर से खुल गया, और उस में से सरसराता हुआ एक हवा का झोंका आया, दामोदर बाबू के कान में वह मानो यह कहता हुआ दूसरी ओर निकल गया कि—"अभी भी पाप का पूर्ण प्रायश्चित्त नहीं हुआ।" जिसे सुन दामोदर बाबू के रोंए खड़े होगये!

हठात् दामोदर बाबू पागल को तरह उठे। उन्होंने लोहे का सन्दूक़ खोल कर एक नोटों का बण्डल निकाला और बोले "धन! धन! आज तुझे फूंक डालूंगा। ठीक उसी तरह जिस तरह प्यारे......"आगे कुछ नहीं कह सके, उन्होंने चाहा कि उसे मोमवत्ती की जलती लौ पर लगा दें। उसी समय एक विकट चीत्कार की ध्वनि हुई। हाहाकार का तुमुल-रव छा गया। जन्म दुःखिनी सुशीला-पिता माता, सास, ससुर सब को दुखाने वाली सुशीला अब संसार में नहीं थी। वह उस लोक में जाकर अपने रमेश के आलिङ्गन में पहुंच चुकी थी, जहां "तिलक" के लिए—दहेज़ के लिए किसी ग़रीब का खून नहीं चूसा जाता!

रोने चिल्लाने का स्वर सुनते ही दामोदर बाबू को जान पड़ा के उनके पैर तले की पृथ्वी नीचे की ओर जा रही है। उनके मुख से बिना प्रयास चीख़ की आवाज़ निकल पड़ी। नोटों का बण्डल उनके हाथ से छूट कर मोमबत्ती पर गिरा और उसे बुझाता हुआ धम्म से ज़मीन पर आरहा। और उसके साथ ही साथ दामोदर बाबू भी हतज्ञान हो वहीं गिर गए। कुछ देर में खोजते हुए रामा बाबू ने आकर देखा कि कमरे की बिछी दरी के ऊपर दामोदर बाबू बेहोश पड़े हैं और पास में केवल उनकी सब से प्यारी चीज़ पड़ी है!

अत्याचार का फल

मोहिनी पत्र को पढ़ते ही अवाक हो गई और आंखों में आंसू भर कर मन ही मन में कहने लगी "पत्थल पड़े ऐसी रिवाज पर और रसातल को जाय ऐसा समाज हा ! एक हज़ार रुपये देने पर भी रामदास राज़ी नहीं होते। सगे होकर ही क्या किया ? ऐसे रिश्तेदार से तो गैर भला।" इतने ही में मोहिनी के पति माधवप्रसाद बचलर कम्पनी से थके मांदे आ पहुंचे। मोहिनी ने माधवप्रसाद से कहा "देखो अपने हितैषी रामदास को। आप कहते थे कि वे हमारी बुआ के देवर हैं और हमने उन्हें पांच वर्ष तक बीमार रहने पर अपने घर में रख सेवा की है, क्या उस पर भी वह नहीं पसीजेंगे ? उसी का पत्र आया है इसे पढ़िये और देखिये कि दुनियां का खून कितना सफ़ेद है ! माधवप्रसाद ने कहा "भई मुझे तो रामदास की ओर से ऐसी आशा नहीं है। मैं समझता हूं कि इस पत्र को उनकी स्त्री मनोरमा ने लिखा होगा।" इह सुनकर मोहिनी ने रामदास का स्वहस्त लिखित पत्र लाकर कहा देखो दोनों पत्रों की लिखावट एक ही तरह की है। उस पत्र को देखकर माधवप्रसाद को विश्वास हो गया

और उन्होंने एक लम्बी सांस लेकर कहा "अच्छा तो उन्हें पैरों पड़कर किसी तरह मनाना ही पड़ेगा।"

माधवप्रसाद और मोहिनी वग़ैरह कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। मोहिनी अपनी कन्या रूपवती के साथ रामदास के पुत्र घनश्याम का विवाह करना चाहती है।

(२)

रामदास एक सजे हुए कमरे में बैठ एक पोटली खोलकर उसमें के पैसों को गिन कर उसमें से सुपाड़ी तथा बतासे अलग कर रहे हैं। रामदास घर के धनी हैं, कुछ थोड़े रुपये उनके इम्पीरियल बैंक में भी जमा हैं। कानपुर के मारवाड़ी लोग उनके यजमान हैं। आज कहीं 'सत्यनारायण की कथा' कह कर रामदास आये हैं और उन्ही पैसों को गिन रहे हैं। उसी समय रामदास की स्त्री मनोरमा ने कमरे में प्रवेश करके कहा, जान पड़ता है कि आज तोंदूमल पोद्दार के यहां शिकार मारो है क्योंकि इतने पैसे और कहीं नाईं मिलत्यो" रामदास ने कहा "आख़िर हौ तो पंडितानी ही न, जान तो खूब गई। कथा तो कल्ह उन्हीं के घर हती पर अब की पैसे भी नेक ज्यादे चढ़े।" मनोरमा ने कहा "अच्छा यह बातें तो जाने दो, पहिले यह बताओ कि माधवप्रसाद की चिट्ठी का जवाब दओ की नाईं"। रामदास ने कहा "चिट्ठी का जेवाब तो कल्हई लिख दओ है और यह बात लिख दौ है कि डेढ़ हज़ार कलदार से एक पैसा कम नाईं लेहैं" रामदास की बात समाप्त भी न होने पाई थी कि मनोरमा बोल उठी "जौ तो सही है, घनश्याम को हमने इतनो पढ़ाओ लिखाओ इसीलिए कि दहेज में दो हज़ार से कम नाईं लेहैं तुम ने तो डेढ़ ही हज़ार लिख दओ है।"

रामदास ने कहा "कछू रियायत भी करनो चाहिये काहे कि वे हमारी माईं (मामी) के भतीजे हैं।"

मनोरमा ने कहा—"अच्छा सुनो माधो की स्त्री मोहिनी बड़ी चतुर है, वो माधो को तुम्हारे पास ज़रूर पठै हैं, मुमकिन है माधो आवैं और घनश्याम को फुसलावैं कि वह कम रुपैयन मां मान जाय इस लिए घनश्याम को पहलेई समझाय दौ चाहिये। रामदास ने कहा "जौ तौ दूर की सोची, बुलाओ वाको"। मनोरमा घनश्याम के कमरे में दौड़ी गई। घनश्याम पढ़ कर उठे थे। मनोरमा ने कहा "लल्ला तुम्हें तुम्हारे दादा बुलाउत हैं उत्थै नेक चलौ तौ।" घनश्याम नहाने के लिये जा रहे थे मां के बुलाने पर तेल सिर में डाल कर ठोंकते हुए रामदास के पास चले गए। रामदास ने कहा सुनौ लल्ला माधवप्रसाद तुम्हारे ब्याह के लिए आवने वाले हैं। हमने दहेज के लिए डेढ़ हज़ार रूपये लिख दओ है, जौ तुमते ऊ कम लेन को फुसलावैं तो तुम राज़ी नाइ होइ हौ,"

घनश्याम मन में क्षुब्ध होकर ऊपर के भाव से अच्छा कह कर वहां से चल दिये मनोरमा भी पास ही खड़ी थी कहा—"बेटा भुलिहौ नहीं"। इतने में रामदास बोल उठे "तुम रहन देव हमने समझाय दौ है। जाओ अब खाने को करो ६ बजन चहत हैं, घनश्याम को पढ़न जाने को देर हो जै है।

(३)

घनश्याम दो बजे ही कालेज से लौट रहे थे क्योंकि उस दिन इतिहास के प्रोफ़ेसर कालेज नहीं आये थे इसलिए आख़िरी घंटे में पढ़ाई नहीं हुई थी। वह एफ० ए० (Second Year) में पढ़ते थे। अनन्तमूर्ति घनश्याम के लँगोटिया यार थे। दोनों एक ही

मोहल्ले में रहते थे और शुरू से लेकर आज तक दोनों एक ही साथ और एक ही दर्जे में पढ़ते थे। घनश्याम ने कालेज से आते हुए रास्ते में सवेरे की बातें अनन्तमूर्ति से कहाः—भाई असल बात तो यह है कि हमारे समाज ही में इस प्रकार की बहुत सी निन्दित बुराइयां घुसी हैं, इसमें किसी का व्यक्तिगत दोष नहीं है। हां एक बात आवश्य है की पढ़े लिखे लोग इस कुप्रथा को दूर कर रहे हैं। देखो कैलाश के ब्याह में उनके पिता ने दहेज में एक पैसा भी क़रार में नहीं लिया था। यद्यपि कैलाश के श्वसुर धनाढ्य थे और ज़बर्दस्ती दहेज में दो हज़ार दे रहे थे किन्तु कैलाश के पिता राधारमण ने केवल इसी लिए दहेज नहीं लिया कि जिस में इस नये रिवाज की चाल चल जाय और उस कुप्राथा का नाश हो।

घनश्याम ने कहा—वही तो हमारी भी हार्दिक इच्छा है किन्तु करें क्या इसमें हस्तक्षेप करने में हमें ज़रा शर्म मालुम होती है। माता पिता कहेंगे देखो अभी से सास श्वसुर का पक्ष ग्रहण करने लगे। अनन्तमूर्ति ने कहा "यह कल्पना तो तुम्हारी ठीक है पर इसमें तो सुधार करना ही होगा। हमारी जाति में जो बेचारे निर्धन हैं, उन्हें इस प्रथा के कारण बड़े बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं। देखो तुम्हारे पड़ोस में ही सुशीला की मां निर्धिन होने के कारण और सुशीला के लिए बर न मिलने की वजह ज़हर खाकर मर गई थी। यदि हमीं लोग समाज उद्धार न करेंगे तो भविष्य में इस प्रकार कितने ही जानों के जाने की सम्भावना है"। घनश्याम ने इन बातों का कुछ भी उत्तर न दिया। बेचारे घनश्यम तो समाज सुधार के बड़े पक्षपाती थे और इन जटिल प्रथाओं को दूर करना चाहते थे, किन्तु साथ ही साथ उनके माता पिता परले सिरे के पुरानी लकीर के फ़कीर थे और

घनश्याम की ज़रा सी भी नई बातों को सुनकर चट उन्हें नास्तिक और आर्य-समाजी की उपाधी दे देते थे। घनश्याम यद्यपि इन उपाधियों की परवाह नहीं करते थे और अपने विचारों में वैसे ही दृढ़ रहते थे पर आख़िर थे तो 'निरे पण्डित' ही के लड़के इसलिए उन विचारों को कार्यरूप में परिणत न कर सकते थे। ज्यों ज्यों इनकी सोहबत नई रोशनी के लोगों में बढ़ती जाती थी, त्यों त्यों मातापिता के भरे हुए पुराने विचार इनके हृदय से निकलते जाते थे और पुरानी जटिल रिवाजों को सुधारने की भावनाएँ ज़ोर पकड़ती जाती थीं।

(४)

माधवप्रसाद निस्तब्ध बैठे हुए चिन्ता में निमग्न हैं। मोहिनी भोजन करने के लिए बार बार बुला रही है, लेकिन माधवप्रसाद लम्बी लम्बी सांसों से मोहिनी की प्रार्थना का उत्तर दे रहे हैं। मोहिनी ने थोड़ी देर ठहर कर माधवप्रसाद से फिर कहा आप चिन्ता न करें, "मेरे पास जितने भी गहने हैं वे सब आप रूपवती के दहेज के लिए बेंच दीजिये। उनसे एक हज़ार आपको बख़ूबी मिल जायँगे।" माधवप्रसाद ने कहा "भाई एक ही हज़ार से काम नहीं चलने का। डेढ़ हज़ार तो केवल क़रार के लिए चाहीयें और खिलाने-पिलाने में कम से कम पांच सौ रुपये लगेंगे। ज़रूरत है दो हज़ार की। पांच सौ तो पहिले का जमा है लेकिन पांच सौ के लिए मकान अवश्य बेंचना होगा। मोहिनी ने कहा "फिर आख़िर तो करना ही होगा, ज्यादा सोच करने से कोई लाभ नहीं, उठिये भोजन कीजिये। माधवप्रसाद भोजन करने के लिए थाली पर बैठे लेकिन दो रोटी और ज़रा सा भात खाकर उठ आये। आज माधव

प्रसाद खाकर लेटे भी नहीं और कड़ी धूप में ही कहीं जाने को तैयार हुए। मोहिनी के पूछने पर उन्होंने कहा कि मकान बेंचने की बात चीत करने के लिए महाजन के यहाँ जा रहे हैं।

× × × ×

रुपवती दो-तीन दिनों से रुपयों के लिए माता-पिता के कष्टों को देख रही थी। कल दिन की बात से रूपवती के कलेजे में गहरी ठेस लगी। आज तीन दिनों से उसने खाना पीना छोड़ दिया था। मोहिनी के खाने के लिए कितनी ही ज़बर्दस्ती करने पर रूपवती सर और पेट में दर्द होने का बहाना कर देती थी। रूपवती अपने हृदय की बातें अपनी सखी कमला से कहना चाहती थी, किन्तु वह मन ही मन में यह गुनगुनाने लगती थी कि "अगर मैं कमला से सब बातें कह देती हूं तो वह मेरी इस कार्यवाही को सहन न कर सकेगी और सब बातें चट माँ से कह देगी और मेरी बनी बनाई बात पर पानी फिर जयगा"। आज रूपवती का हृदय धड़क रहा था। वह अपनी सब चीज़ों को बड़े चाव से देख रही थी। अपनी अँगरेज़ी और हिन्दी की अच्छी अच्छी पुस्तकें उसने कई दिन पहले ही अपनी सङ्गिनी बालिकाओं को देदी थीं। अपने गहने और अच्छे अच्छे वस्त्रों की उसे चिन्ता न थी। उसे अपनी हाल की बनवाई हुई गाढ़े की साड़ी और कुर्ती तथा एक पुस्तक "भारत की वीर बालाएँ" से बड़ा प्रेम था। उसने उस साड़ी और गाढ़े की कुर्ती को पहन लिया था, वह पुस्तक आज दिन भर से उसके हाथ में थी। रूपवती अभी कमला के घर से मिल कर आई है, वह प्रेम भरी और डबडबाई हुई आंखों से मोहिनी और माधवप्रसाद को देखती थी। रूपवती के मस्तिष्क में प्रेम और कर्तव्य में

संग्राम छिड़ा हुआ था। उसका प्रेम उसे माता-पिता और अन्य चीज़ों की ओर ले जा रहा था, परन्तु कर्तव्य उसे अपने निश्चित उद्देश्य की ओर खींचता था। अन्त में उसके कर्तव्य ने प्रेम पर विजय पाई। रूपवती उठी और पेन्सिल काग़ज़ लाकर एक पत्र लिखा। पत्र लिखकर उसने एक बार फिर मोहिनी और माधवप्रसाद को प्रेम भरी निगाहों से देखा और धड़कते हुए हृदय के साथ वह अटारी पर पहुंच गई और दरवाज़ा बन्द कर माधव प्रासाद की लाई हुई नई तलवार को अपने समस्त बल से गले में भोंक लिया और एक बड़ी ज़ोर की चीख़ के साथ उसने अपनी मानव लीला समाप्त कर दी।

× × × ×

रूपवती की चीत्कार को सुनकर मोहिनी और माधवप्रसाद ऊपर दौड़ गए। वहां देखा कि ज़मीन ख़ून से तर है और रूपवती के गले में तलवार घुसी हुई है। रूपवती के पास ही ख़ून लगा हुआ एक पत्र पड़ा था। पत्र के ऊपर लिखा था श्री० घनश्याम। माधोप्रसाद ने पत्र उठा लिया। मोहिनी और माधव प्रसाद दोनों पत्र को पढ़ने लगे। पत्र में लिखा थाः—"प्रत्येक यज्ञ में बलिदन की आवश्यकता हुआ करती है इसलिए समाज-सुधार के यज्ञ में मैंने अपना शरीर बलिदान करना निश्चित किया है। दूसरा कारण मेरे प्राण दे देने का यह भी है कि मेरे कारण मेरे पिता-माता को अनेक कष्ट उठाने पड़े हैं और क़रार के लिए धन एकत्रित करने में उन्हें घर बार बेंचने पड़ते और नाना प्रकार के कष्ट होते। अब घनश्याम! आप मेरे मानसिक पति हो चुके थे इसलिए आप से मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है कि आप हिन्दू समाज की

इस करार की प्रथा का मूलोच्छेद करना ही अपना जीवन-लक्ष्य समझियेगा। जिस दिन हिन्दू समाज से इस प्रथा का नाश होगा उसी दिन मेरी दग्ध आत्मा को शन्ति मिलेगी।"

माधवप्रसाद पत्र पढ़ते और रोते जाते थे लेकिन मोहिनी निस्तब्ध होकर पत्र को देख रही थी। पत्र के समाप्त होते ही मोहिनी पछाड़ खाकर ज़मीन पर गिर पड़ी और गिरते ही बेहोश हो गई। माधवप्रसाद ने मोहिनी को बहुतेरा उठाया पर वह न उठी। माधवप्रसाद वचलर कम्पनी में कम्पाउण्डर थे। उन्होंने मोहिनी की नाड़ी देखा तो मालूम हुआ कि मोहिनी के प्राण पखेरू उड़ गये हैं। माधवप्रसाद रूपवती और मोहिनी की मृत्यु का दुःख सह न सके और उन्होने यह कह कर कि मेरी प्यारी रूपवती और मोहिनी अब संसार में नहीं रहीं अब मैं अकेला जीकर क्या करूंगा। मैं भी समाज-सुधार के यज्ञ में अपना जीवन देकर उसकी पूर्णाहुति करूंगा" उसी तलवार से ज़ोर का एक वार अपनी गर्दन पर किया और उनका सर धड़ से अलग हो गया।

× × × ×

घनश्याम अपने घर के एक मामूली तौर पर सजे हुए कमरे में स्वप्नवस्था में पड़े हैं। यहां पर घनश्याम के कमरे की सजावट का कुछ वर्णन करना भी अत्यावश्यक है क्योंकि उनकी सजावट के वर्णन से पाठकों को उनके चरित्र, जीवनोद्देश्य तथा आन्तरिक भाव का पूर्णतया पता लग जायगा। घनश्याम का कमरा १२ फुट लम्बा और ८ फुट चौड़ा है। कमरे की दीवारें हलके हरे रङ्ग से पोती हुई हैं, जिसमें तरह तरह के मनोहर तथा फड़काने वाले राष्ट्रीय चित्र बने हुए हैं। एक ओर

भारत माता का शक्ति-प्रदान का दृश्य बना हुआ है। दृश्य में भारत-माता एक हाथ में एक पुस्तक तथा दूसरे हाथ में लम्बी तलवार लिए म० गांधी को दे रही हैं और महात्मा जी बड़े प्रेम और नम्रता के साथ उसे स्वीकार कर रहेहैं। दूसरी ओर म०गाँधी अपने हाथ में भारत के बड़े बड़े सर्वपूज्य ६ नेताओं के चित्रों से गुंथी हुई एक माला लिये हैं और वह माला भारत-माता को अर्पण कर रहे हैं। दूसरी ओर की दीवार में म० गांधी पास ही खड़े हुए बहुत से हिन्दुस्तानियों को चर्खे बांट रहे हैं। एक ओर एक दूसरा दृश्य है। उसमें दिखलाया गया है कि एक जरठ बूढ़े का ब्याह एक अल्पव्यसक बालिका के साथ हो रहा है। इस तरह के अनेकों रङ्ग विरङ्गे दृश्य हैं। इन दृश्यों के अतिरिक्त म० गांधी, मा० मालवीय जी, ला० लाजपत राय, पं० मोतीलाल नेहरू, मि० सी० आर० दास आदि सर्वमान्य नेताओं के बड़े बड़े चित्र भी टँगे हुए हैं। पाठक इस सजावट से समझ गये होंगे कि घनश्याम किस भाव, उद्देश्य और किस दल के मनुष्य हैं, वे यह भी जान गये होंगे कि घनश्याम राजनीति से पूरी दिलचस्पी रखनेवाले और पक्के समाज-सुधारक हैं।

पाठकों को कमरे की सैर कराकर अब हम उन्हें घनश्याम की स्वप्नावस्था का दृश्य दिखलाना चाहते हैं। घनश्याम स्वप्न में पड़े पड़े देख रहे हैं कि रूपवती उनके सामने खड़ी हुई हाथ जोड़ कर कुछ कह रही है। फिर थोड़ी देर में वह क्या देखते हैं कि रूपवती पृथ्वी पर मरी पड़ी है और उसके पिता-माता घनश्याम का नाम ले ले चीख़ कर उसे पुकार रहे हैं। घनश्याम स्वप्न देखते हुए कुछ सहमे, पर ज़्यादा देर तक वह उस भयङ्कर दृश्य को न देख सके और पागल की तरह झट पलँग से उठ कर रूपवती के घर की ओर रवाना हुए। रूपवती के

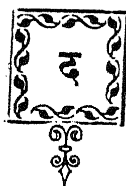
घर जाकर वह देख रहे हैं कि उनके स्वप्न के सब दृश्य अक्षरशः सत्य हैं। घनश्याम सँभल न सके और वहीं ज़मीन पर धड़ाम से गिर पड़े। ५, ७ मिनट के बाद वह उठे। उठते ही उनकी निगाह खून से सने हुए एक पत्र पर पड़ी। उन्होंने झट उसे उठा कर पढ़ा। यह पत्र वही था जिसे अभी पाठक रूपवती के पिता द्वारा सुन चुके हैं। घनश्याम थे ज़रा कड़े हृदय के मनुष्य इसलिए प्रायः एक घंटे तक आंसू बहाने के बाद उनका दुःख कुछ दूर हो गया था। उसी समय उन्होंने वहीं पड़ी हुई रूपवती के खून को हाथ में लेकर यह प्रतिज्ञा की कि "रूपवती की आत्मा को शान्ति दिलाने के लिए [दहेज की प्रथा का नाश करने के लिए] मैं अपना प्राण समर्पण कर दूंगा।" इस प्रतिज्ञा के बाद घनश्याम ने फिर उन लाशों की सूचना पुलीस को देने का निश्चय किया।

× × × ×

घनश्याम के आस पास के शहरों में उनकी खूब चर्चा होने लगी है। शहरों का तो कहना ही क्या गांवों तक में "घनश्याम-समाज सुधारक" सभाएँ बन गई हैं। यह आन्दोलन ज़ोरों पर है कि भारत के समस्त प्रान्त और नगरों में दहेज-प्रथा का दमन किया जाय। आज वह समय है कि महाराष्ट्र और बङ्गाल प्रान्त में "दहेज निवारक" सभाएँ बड़ी तेज़ी के साथ काम कर रही हैं और हर जगह से घनश्याम को बुलावे आ रहे हैं।

कल समाचार-पत्रों में यह बात देखने में आई है कि घनश्याम ने प्रतिज्ञा पूर्ति की एक सूचना निकाली है जिस में उन्होंने लिखा है कि भारत के अधिकांश भागों में दहेज की प्रथा समूल नष्ट कर दी गई।

दहेज की कुप्रथा


हेज की कुप्रथा आपको भारत में छोड़ कहीं न मिल सकेगी। यही कारण है, कि भारत में लड़कियों के पैदा होते ही घर में सन्नाटा छा जाता है। माता, पिता के पैरों तले की ज़मीन निकल जाती है और वे उसी दिन से घोर चिन्ता में निमग्न हो जाते हैं।

यदि किसी धन हीन के यहां कन्या उत्पन्न होती है, तो वह बेचारा मानो उसी समय अधमरा हो जाता है। भारतवासी कन्या के जन्म लेते ही उसके 'दहेज' की तैय्यारियां करने के सोच में घुलने लगते हैं। पर अन्य देशों में ऐसा कहीं नहीं होता। बल्कि पुत्र की अपेक्षा कन्या का आदर विशेष हुआ करता है।

यदि किसी दरिद्र घर की कुमारी, गुण और 'सदाचार' से पूर्ण हो तो बड़े से बड़े लोग उसका पैर चूमने को अपना सौभाग्य सकझते हैं, वे विद्याध्ययन में, वाक्य निपुणता में, और अन्य ऐसे ऐसे खेल तमाशों में, जिनमें जान तक का खटका होता है, नवयुवक प्रायः उनमें जान को तृण के समान समझ कर विजयी और यश के भागी होना चाहते हैं। यह क्यों? केवल

इस लिये कि वे उन कुमारियों के कृपापात्र हो सकें और बिवाह के 'प्रेम गांठ' में सदा के लिये बंध जावें। पर अभागे भारत में तो रुपया ही सर्व श्रेष्ठ समझा जाता है। लड़की चाहे अन्धी, लूली, अथवा लंगड़ी कुछ भी हो, पर यदि कलेजा तर करने के लिये रुपये काफ़ी मिल सहते हों तो ऊंचे से ऊंचे जाति वाले केवल रुपये की तरावट में आकर उससे सम्बन्ध कर लेंगे। पर इस के बिपरीत यदि लड़की गुणवती है, शीलवती है, विद्यावती है, और रूपवान भी है पर यदि 'कलदार' से शून्य हो, तो बिरादरी के उन्माद में रंगे हुये चौधरी उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। उससे सम्बन्ध करने को महापाप समझते हैं, और यदि कोई कलेजा कड़ा करके सम्बन्ध करने को तैयार भी हो तो उसे जातिच्यूत करने की धमकियां भी दी जाती हैं। केवल इतना ही नहीं लड़की के माता, पिता, और उसके सम्बन्धियों की घर घर निन्दा हुआ करती है। बिरादरी के बड़े बड़े लोग उसको तुच्छ और घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। अकसर लोग इतने नीच और कठोर होते हैं कि वे बेचारी भोली कन्या और उसके कुल में कपोल कल्पित दोषारोपण करने लगते हैं। यहां तक कि कहीं कहीं तो निर्धन लोगों को बिना आत्म हत्या किये इन पचड़ो से छुटकारा ही नहीं मिलता!

चाहे घर में खाने का ठिकाना न हो, कपड़े फटे तक पहिनने को न मिलते हों, घर में एक आदमी कमाने वाला (Bread winner) और दस आदमी खाने वाले भी हों (Dependent) सौ की जगह आमदनी दस ही हो गई हो कुछ, भी हो, पर विवाह आदि हमारे यहां उसी ठाट बाट के होगा, जैसा कि हमारे पूर्व्वज करते आये हैं। नहीं तो 'विरादरी में नाक कट जायगी' का महामन्त्र सामने दिखाई देता है।

हम नीचे ब्योरेवार पाठकों को यह दिखलाना चाहते हैं, कि कुछ ही दिन पहिले हमारे खाद्य पदार्थों का भाव क्या था? वह किस प्रकार घटता गया और घट रहा है, पर हमारे रहन सहन अथवा विवाह शादी अबतक भी उसी जोश से होते हैं, जैसा कि हमारे बाप, दादे, करते आये हैं। इसी कारण तो भारत में 'भेढ़ चाल' की प्रथा क़रीब क़रीब सब ही बातों में देखी और पाई जाती है।

अलाउद्दीन ख़िलजी के समय खाने की चीज़ों का भाव इस प्रकार था:—

नाम चीज़				दर फी रुपया
गेहूं	...	...	...	११६ सेर
जौ	...	...	...	२२४ "
चावल	...	...	...	११६ "
उड़द	...	...	...	११६ "
चना	...	...	...	११६ "
मोठ	...	...	...	१७६ "
भूरा खांड़	...	...	...	४४ "
घी	...	...	...	३३ "

अभी हाल की बात है ग़दर के समय सन १८५७-५८ई० में, जिसको कुल ६३ वर्ष ही हुये हैं, हमारे खाने पीने की चीजों का मोल यदि आज कल की चीज़ों से मिला कर देखें तो कलेजा फटता है। ज़मीन और आसमान का फ़र्क़ हो गया है। उस समय जो चीज़ें कौड़ियों के मोल थीं अब रुपये को मुश्किल से मिलती हैं। देखिये:—

नाम चीज़	ग़दर के समय का दर फ़ी रुपया	इस समय का दर फ़ी रु०
गेहूं	१ मन १० सेर	५ सेर
बाजरा	२ "	५ "
जौ	३ "	६ "
मकई	२ " २० सेर	६ "
चना	१ " ५ सेर	५ "
उड़द	१ "	२ "
दाल	" ३० सेर	५ "
घी	चार सेर ८ छटांक	केवल ७ छटांक और ६ माशे
रूई	३ सेर	५ छटांक
दूध	१ मन	३ सेर
भूसा	३ "	१० "
लकड़ी	८ "	१ मन
खली	३० सेर	२॥० सेर

—:o:—

९

तरकारी का भाव यह था:—

नाम	तब था	अब है
साग	३ सेर फ़ी पैसा	–) सेर
शकरकन्द	५ „ दो पैसे के	=)
सिंघाड़ा	३ „ फ़ी पैसा	=) „
आम सब से अच्छे	–) आने का १००	१ रुपए में १००

एक केवल 'नाक कट जाने' के भय से आज दिन भी हमें वही स्वप्न आते हैं । उस समय १०), २०) रुपयों में अपूर्व शोभा हो जाया करती थी पर अब हज़ार में भी पूरा नही पड़ता। पर लकीर को पीटने वाले भारतवासी आज भी शादी विवाह उसी धूम धाम से करते हैं, जैसा कि उनके पूर्व्वज करते आये हैं, और उस पर 'दहेज' की कुप्रथा ' कोढ़ में खाज' का काम करती है ।

शादी विवाह के अवसर पर आज कल बड़े से बड़े को भी रुपया उधार लेना ही पड़ता है । पर वे 'उस ठाठ में कमी न हो' इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं । कहने की ज़रूरत नहीं, कि प्रत्येक भारतवासी की रोज़ाना आमदनी, औसत के लिहाज़ से, दो पैसे मात्र है पर काम जो करेंगे वह उसी शान से जैसा कि उनके बाप दादा अथवा सास और दादी करती आई हैं । 'रहें झोपड़ी में ख़्वाब देखें महलों का' ।

इन सामाजिक कुरीतियों से दुःख अमीर और ग़रीब दोनों को एक सा ही होता है। क्योंकि जो जितना धनी होता है वह सम्बन्ध भी अपने टक्कर वाले से करता है, और उससे उसी हिसाब से दहेज भी मांगा जाता है*। इसका फल यह होता है, कि लड़कियां सदैव अपने पिता के मुक़ाबले निर्धन घरों में व्याही जाती हैं। पर सब से ज़्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है गरीबों को। जिनके पास जायदाद तो दूर रही खाने तक का ठिकाना नहीं होता और जिनकी पुश्तैनी जायदाद केवल "नौकरी" और "गुलामी" ही बसीयत में मिलती है। उन के पास इतना भी ठिकाना नहीं है, कि किसी दरिद्र को भी लड़की सौंप कर गंगा नहावें। यही कारण है, कि लड़की के पैदा होते ही यह चिन्ता उनके हृदय में समा जाती है, और वे अपना पेट काट कर धन एकत्रित करने लगते हैं। उस परिवार में उसी दिन से दरिद्रता घुस जाती है, जिस दिन बिचारी कन्या का जन्म होता है, और लड़की के माता पिता घुल घुल कर मरने लगते हैं। बहुतों को लाचार होकर विष द्वारा अपने इस महान कष्ट और सामाजिक अनादर का अन्त करना पड़ता है! प्रायः लड़कियाँ छिपा कर मारडाली जातीं हैं या यदि लड़की बुद्धिमती हुई तो उसे इन बातों से इतनी ग्लानि और घृणा उत्पन्न होती है कि वे अपने जीवन का अन्त कर डालती हैं। अभी कल की बात है, बङ्गाल की स्वर्गीया देवी स्नेहलता

---

* एक राजपूत सरदार १० लाख रुपये दहेज में देने को मजबूर किया गया था। दूसरा १० लाख और तीसरा इससे भी ज़्यादा "शिव साहब"।

के आत्माहत्या का वृत्तान्त सुनकर आप का कलेजा हिल जायगा समाचार पत्रों में छपा था।

"बाबू हरेन्द्र कुमार बनर्जी कलकत्ते में एक सामान्य सज्जन हैं। आप वहां दलाली करते हैं। आपकी पुत्री स्नेहलता प्रेम की मूर्ति और साक्षात देवी थी। उत्तम शिक्षा और सद्गुणों द्वारा उसके हृदय में ऊंचे भाव उत्पन्न हो गये थे। 'लता' पन्द्रह वर्ष की हो गई। हरेन्द्र बाबू को उसके विवाह की बड़ी चिन्ता थी विवाह के लिये उनसे दो हज़ार रुपये 'दहेज' मांगा जाता था। इतना धन देने की उनमें शक्ति नहीं थी। पर साथ ही किसी अयोग्य पात्र को वे स्नेहलता का दान नहीं दिया चाहते थे, कि कम खर्च से उनका गला छूठ जावे। अतः उन्होंने अपने एक मात्र पैतृक धन मकान को बेच कर स्नेहलता का विवाह करना निश्चय किया।

स्नेहलता बुद्धिमती लड़की थी। उसमें विचार शक्ति आ गई थी और बड़े ऊंचे ख़्याल पैदा हो गये थे। स्वभावतः अपने सुख के लिये पिता तथा अन्य कुटुम्बियों को दुःख में डालना उसे उचित न जान पड़ा उसने अपने आत्मबल से भारत के इस कलङ्कित पाप को किसी अंश में भस्म करना ठान लिया वह घर के काम काज से छुट्टी पा कर दो पहर में शृंगार कर घर के कोठे पर चढ़ गई और उसने धोती तेल से तर करके आग लगाली। सामने राम मन्दिर था। यहां के पुजारी ने एक बालिका को प्रसन्न चित्त जलते देख कर शोर मचाया। लोगों ने दौड़ कर आग बुझाई और वे उसे अस्पताल ले गये! पर उसी दिन सूर्य्यास्त होते होते उसकी पवित्र आत्मा भी अस्त हो गई।

मृत्यु के पहले वह अपने पिता के नाम एक पत्र लिख चुकी थी। उसमें उसके स्नेह मय विचार प्रकाशमान है। यह पत्र भारत के १८,१६ फरवरी सन् १६१४ के कुल समाचार पत्रों में छपा था। उसका अनुवाद यह है :—

पूज्य पिता जी !

मेरे विवाह के लिये आप अपने पूर्व पुरुषों की कमाई को न बेच दीजिये। इस घर में बाहर के लोग आकर रहें, यह मैं न देख सकूंगी। अब आप को घर रेहन रखने की आवश्यकता न पड़ेगी। कल पौ फटने के पहले ही आप की अभागिनी लड़की परलोक चली जायगी।

आप ने और मां ने प्रेमपूर्ण से इस स्नेहलता को बढ़या। अपने हृदय में फैलने का स्थान दिया। राजभवन में रहने वाली राजकुमारियों से भी बढ़कर मैं यहां सुखी थी क्या मैं इस प्रेम का बदला इसी तरह देती कि आप और मेरे भाई बहन घर से निकाल दिये जांय? आप दरिद्रता से जीवन व्यतीत करें?

पिता जी! सबेरे शहर भर घूम घूम कर जब आप दो पहर को घर पर आये और निराश हो कर बोले कि "काम बिगड़ गया" उस समय का चेहरा अब भी मेरी आंखों के सामने है। आप के वे शब्द अब भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं। मेरा विवाह कैसे हो? इस चिन्ता से आप की छाती जल रही है। १५ वें वर्ष तक मेरा विवाह नहीं हुआ! लोग आप की निन्दा करते हैं। इस विषय में आपने सिर ऊंचा करने का का बहुत प्रयत्न किया है।

सचमुच मुझे विवाह करने का हौंसला क्या हो सकता

है । आप की चिन्ता दूर हो इस लिये मैं विवाह करना चाहती परन्तु नहीं, मेरा विवाह होना असम्भव है ।

"उस दिन वर्दवान की बाढ़ में बहुत उदार और लिखे पढ़े लोगों ने अनाथों को सहायता दी । मर्द लोगों ने बिदेशी वस्तुओं का त्याग किया । कितने ही युवकों ने दक्षिण अफ्रिका वासियों के लिये द्वार द्वार भीख मांग कर रुपया इकट्ठा किया, ईश्वर इन दयालु और उदार पुरुषों की रक्षा करें । परन्तु इन युवकों का ध्यान अपने देश की दुर्दशा पर क्यों नहीं जाता ?

"रात को जगन्माता ने मुझे अपनी ओर बुलाया है । आप लोगों ने मेरे विवाह के कारण दुःख भोगना पड़े इस लिए मैंने मां भवानी के पास जाने का निश्चय किया है" ।

"संसार यात्रा समाप्त करने के लिये अग्नि, जल अथवा विष इन में से किस वस्तु की शरण लेनी चाहिये, इस पर मैंने कुछ देर तक विचार किया । अन्त में अग्नि ही कि शरण लेना निश्चय किया । अब मैं अपने शरीर में आग लगा दूंगी, जिस से देश के सब लोगों के अन्तःकरण पिघल जांय और उससे दया का श्रोत वह निकले यही ईश्वर से मेरी प्रार्थना है ।

"मेरे जाने पर आप लोग अश्रुपात करेंगे, परन्तु घर न विकेगा । उसमें आप और मेरे भाई आदि रह सकेंगे।

"पिता जी ! अब अधिक लिख नहीं सकतीं । आत्मयज्ञ का समय निकट आरहा है । अब मैं उस महान निद्रा में निमग्न हूंगी जिससे फिर जागना न पड़ेगा । मां दुर्गा के पास अब मैं आपकी और मां की बाट जोहती हुइ जा बैठती हूं ।

आपकी अभागिनी कन्या—

स्नेहलता ।"

* * * *

यह घटना अपने ढंग की एक ही नहीं है। हमारे सामाजिक जीवन में ऐसी घटनायें अकसर सुनी और देखी जाती हैं। कई जगह तो ऐसे हुआ है, कि इन्ही कारणों से परिवार के परिवार ने विष खाकर प्राण दे दिये हैं।

समझदार कन्याओं के लिये, जो कि इस प्रथा को ख़राब और नाशकारी समझती हैं, पर लज्जावश कह नहीं सकतीं 'आत्म हत्या' ही एक ऐसा मार्ग है जो उन्हे शान्ति प्रदान कर सकता है।

भारत के स्त्री-समाज में आत्म हत्या का रोग बड़ी तेज़ी से फैल रहा है। "बङ्गाल प्रवासी के सुयोग्त सम्पादक ने सन १९१५ की सरकारी रिपोर्ट से संख्यायें देकर प्रकट किया है, कि इस देश में आत्म हत्यायें अन्य देशों की अपेक्षा बहुत अधिक होती हैं। और उनमें भी विशेषतः स्त्रियों में तो यह रोग और भी भयङ्कर रूप से बढ़ रहा है।"

नीचे कुछ प्रदेशों के आत्म-घाती स्त्री पुरुषों की संख्या देखिये :—

प्रान्त	कुल जन संख्याः—	आत्मघाती पुरुष	स्त्री
मध्यप्रदेश और बरार	१, ३९, १६, ३०८	४७१	५२३
बिहार उड़ीसा	३, ४४, ९०, ०३४	६०५	११०५
आगरा अयोध्या	४, ६८, २०, ५५६	६६४	११९९
बङ्गाल	५, ५३, २९, २२१	१४५२	२०१८

सर्वत्र ही पुरुषों की अपेक्षा आत्मघातिनी स्त्रियों की संख्या अधिक है। मध्य प्रदेश बरार में वह लगभग सवाई, बिहार उड़ीसा में लगभग दूनी, यू० पी० (संयुक्त प्रान्त) में ढाई गुनी, से अधिक और बङ्गाल में डेढ़ गुनी से कुछ कम है।

मनुष्य को प्राण सबसे प्यारे हैं। विना अपार कष्ट और यन्त्रणा के कोई सहज ही प्राण नहीं देना चाहता। देश की अधिक आत्म हत्या इस बात का निश्चित प्रमाण है, कि हमारे कष्ट अन्य देशों की अपेक्षा बहुत बढ़े हुये हैं। और उसमें हमारी स्त्रियां बहुत अधिक दुःखिनी हैं। यह निश्चय है, कि हमारा सामाजिक जीवन और व्यवस्था ख़ास तौर से स्त्री जाति के लिये सबसे अधिक कष्ट प्रद है, और इसी कारण वे आत्म-हत्या करतीं हैं। उनके कष्ट असंख्य और बड़े विकट हैं। सबसे बुरी बात जो उनको मार कर भी रोने नहीं देती वह यह है, कि उनके कष्ट प्रायः गूंगे होते हैं। उनके ऐसे कष्ट उन्हें आत्मरक्षा का इससे अच्छा और दूसरा कोई सरल उपाय नहीं बतला सकते। एक तो स्त्रियों की संख्या हमारे यहां योंही कम है फिर उनमें आत्महत्या की वृद्धि हो रही है। समाज और बिरादरी के 'नाक' स्वयं इस प्रश्न पर विचार करने की कृपा करें।

हमारे कहने का सारांश यह नहीं है, कि कुल स्त्रियां दहेज की कुप्रथा ही के कारण आत्महत्या कर रही हैं। और न हमारा कहना यही है, कि बस उनको केवल यही एक कष्ट है। यदि हमारे भाई और बहिनें इन जटिल प्रश्नों की ओर ध्यान दें, तो ऐसी सैकड़ों कुरीतियां हमारे समाज में भरी पड़ी हैं और जिनके शिकार हम रात दिन हो रहे हैं।*

---

* 'देश दर्शन' का कहना है, कि मुन्शी प्यारेलाल के हृदय

इस समय जनता प्रायः राजनैतिक सुधारों की ओर झुक रही है, पर उन सुधारों से पहिले इन सामाजिक सुधारों की भारी आवश्यकता है।

एक बड़े भारी मेशीन अथवा इन्जन के एक छोटे से छोटे पेंच के बिगड़ जाने से जैसे वे बेकाम हो जाया करते हैं ठीक उसी प्रकार जब तक इन समाजिक कुरीतियों की ओर विशेष ध्यान न दिया जावेगा तो बड़े ऊंचे ऊंचे मनसूबों के बांधने को केवल भ्रममात्र ही समझना चाहिये।

हमारी बहिनों से हमारी प्रार्थना है। कि जब तक उनके भाई लोग देश को स्वतन्त्र करने के अभिप्राय से अनेकानेक राजनैतिक आन्दोलनों में फंसे हैं, उनका चुपचाप बैठे रहना बड़ा ही हानिकर होगा। हमारी बहिनों को चाहिये, कि वे हज़ार कष्टों के होते हुये, हर तरह की कठिनाइयों को सहते हुये, नाक कट जाने के भय को त्याग कर घोर सामाजिक आन्दोलन शीघ्र ही उठादें और उस समय तक पीछे पैर न हटावें जब तक इन कुरीतियों का जड़ मूल से नाश न हो जावे।

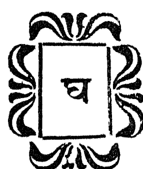
फिर भी प्रार्थना है बहिनें शीघ्र ही ध्यान देने की कृपा करें।



पर इस अमानुषिक अत्याचारी रीति का (जबर्दस्ती दहेज़ वसूल करने का) बड़ा प्रभाव पड़ा। और उन्होंने ३०० स्थानों पर सभायें करके इस प्रथा को उठाने का प्रयत्न किया।

एक अण्डरग्रेजुएट की शादी*

"हथकड़ी तैयार हैं, और बेड़ियां तैयार हैं।
बेड़ियों में कुछ कसर है, रस्सियां तैयार है॥



र का अजब हाल था। जो था सो आपे में नहीं, हर तरफ़ चहल पहल। हर तरफ़ धूम-धाम। किसी के मिज़ाज का ठीक पता नहीं मिलता था। औरतें मारे .खुशी के अलग बावली हो रही थीं। जो जितनी ही बूढ़ी थीं वह उतना ही ज़्यादा .खुशी में चहक रही थीं। रंग बिरंगी साड़ियों में फूली नहीं समाती थीं। गाने वालियों के झुण्ड में घुस घुस कर गाती

---

*इस पुस्तक में जगह जगह एक एक गल्प भी दिये गये हैं। यह केवल इसलिये कि आय दिन होने वाली घटनाओं का वास्तविक रूप भी प्रगट होता रहे। पर हम लोगों के शादी बिवाह में कैसी छीछालेदर होती है इस विषय पर हमें कोई उत्तम लेख प्राप्त न हो सका इसी कारण हम नीचे श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव कृत "लम्बी दाढ़ी" नाम की पुस्तक में से "एक अण्डर ग्रेजुएट की शादी" शीर्षक अध्याय ज्यों का त्यों यहां

थीं। और रह रह कर लड़ती भी जाती थीं। लड़के बिना कुछ समझे बूझे तालियां बजा बजा कर उछल रहे थे और शोर मचा रहे थे।

मेरे पहुंचते ही एक हुल्लड़ सा हो गया। गाने वालियां और ज़ोर से गाने लगीं। कुछ औरतों ने आकर मुझे घेर लिया। और मुझे देख कर हंसना शुरू कर दिया। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। उन लोगों से अपनी जान छुड़ा कर मैं कोठे पर भागा। तबियत तो ग्रैमोफ़ोन वाली चूड़ी में लगी हुई थी। बस झट ग्रामोफ़ोन पर नई चूड़ी चढ़ा कर उसी के साथ साथ हारमोनियम की प्रैक्टिस करने लगा—

"ऐसा लादेंगे रंगीला जो अलबेला छैला नई आन का, नई शान का"

इतने में किसी ने अत्यन्त ही सुरीली आवाज़ में कहा—

"ऐ हज़ूर मुबारक"

गर्दन घुमाई, तो सामने से पर्दा उठाकर शान्ती भाभी बनारसी साड़ी पहने मुसकुराती हुई आती दिखाई दीं। मैं

उद्धृत कर रहे हैं। श्रीवास्तव महाशय का परिचय हिन्दी प्रेमियों से कराना बेकार है। यह केवल सूर्य्य को दीपक दिखाना होगा। लेखक ने कितनी उत्तमता से हमारे सामाजिक कुरीतियों का ख़ाका खींचा है यह बात पाठक स्वयं समझ लेगें। इस पर किसी प्रकार की टिप्पणी करना बेकार है। इस लिये इस विषय को छोड़ कर 'स्त्री शिक्षा' शीर्षक में हम केवल 'राष्ट्रीय दृष्टि' से ही इसकी आवश्यकता सिद्ध करेंगे। रही गृहस्थ विषय की बात सो। उसके लिये यही काफ़ी है।

—सम्पादक

ग्रामोफ़ोन के साथ साथ उनकी तरफ़ देखता हुआ ताने के लहजे में मैं गाने लगा—

"बड़ी बातें बनाने वाली-ई-ई-ई अरी चल चल चल। बड़ी बातें"

शान्ती—"Nonsense ! यह क्या सड़ी हुई चीज़ उठा लाए। अब इस का आज कल फ़ैशन नहीं रहा"। किन्तु मैं अपनी धुन में मस्त बजाता ही चला गया।

शान्ती०—"अहा हा हा ! हारमोनियम कहाँ जा रहा है। अजी बाबू साहब, ई ई ई के लिये ये तीन पर्दे लगेंगे।"

मैंने झेंप कर बाजा छोड़ दिया और कहा—'ऐ है, अभी तक आप खड़ी ही हैं"

शा०—"तुमने मुझे बैठने के लिये कहा भी ?"

मैं०—"आइये, आइये, मेरी अखों में बैठिये।"

शा०—"हज़रत ! महावरा सर पर बैठने का है। क्या लखनऊ के नाम को बदनाम करते हो ?"

मैं०—"अख़ख़ाह ! अब तो आप महावरों में ग़ल्तियाँ पकड़ने लगीं। ईश्वर ही ख़ैर करे मोहन दादा की। बेचारे जापान में रहते हैं। नये महावरों की उन्हें ख़बर कहाँ ? जब आयेंगे तब तुम उनकी हर एक बात को क्या बल्कि मुजस्सिम उन्हीं को Out of Fashion बताओगी।"

शा०—(मुस्कुराकर) दूसरों की क्यों तुम्हें इतनी फ़िक्र है। तुम्हें भी Out of Fashion बताने वाली अब आ रही है।

मैं०—"मैं तो ऐसी चुन के लाऊँगा। ऐसी नोक झोंक की होगी कि तुम भी याद करोगी, और कुमुद भाभी भी जानेंगी"

शा०—"अहा हा ! तभी आप इस ख़ुशी में गा रहे हैं, क्यों न हो। शादी तो तै हो ही गई। मैं भी देखूंगी कैसी आती है।"

मैं—"ऐं, क्या सच ? तुम्हें मेरी क़सम ?"

शा०—"वाह ! वाह ! अनजान बनने से काम न चलेगा हज़रत। मुबारकबादी मैंने किस लिये दी थी। यह धूम धाम किस लिये है।"

"अजी लल्ला जी, अजी ओ लल्ला जी।"

मैं०—(शान्ती से) "ले रहने दीजिए"। (शिमन से) "क्या है शिम्मू ! यहाँ तो आओ"

शि०—"चलो, तुमें अम्माँ बुला लईं ऐं।"

शा०—क्यों ? अले क्यों बुला लईं ऐं।"

शि०—"आप छे कौन बोलती ऐ। चलो लल्ला जी जल्दी चलो, अम्मा तुमें चिज्जी देंगी, चलो बी।"

शा०—(शिम्मन को गोद में उठा कर और चूम कर) अरी मेरी शिम्मिया, काहे को ख़फ़ा है री।

शि०—दो लोज छे न तो आप मुजे अपनी तला छाली पिनाती ऐं। न मेले बालों में नया लिबन लगा देती ऐं। आज इछकूल में मालती केती थी कि तुमाले लिबन छे मेला लिबन अच्छा ऐ। अम्मा छाली पिना देंगी, में आप छे अब नीं बोलूंग। छोल दीजिये। मैं आप के पाछ नीं बेठूंगी। ऊहुँक ऊहुँक।

शा०—मेरी अच्छी अच्छी शिम्मन, मान जा। तुझे रोज़ मैं अंग्रेज़ी साड़ी पहिना दूँगी और बालों में ख़ूब अच्छा से अच्छा रिबन लगा दूँगी।

शि०—"लोज नई । एक लोज छाली औल एक लोज फ्लाक। अजी लल्ला जी मैं हलमोनिया बजाऊँगी।"

मैं०—"ले बजा।"

शि०—"तुम पेल चलाव। हाँ बछ ठीक पे। क्या बजाऊँ लल्ला जी?"

मैं०—"वही "विद्या हमें पढ़ा कर..."

शि०—"मैं बूल गई बाबी (भाभी) जी बता दीजिए—देखो लल्ला जी नीं बतातीं।" शिम्मन शान्ती से हार्मोनियम सीखने लगी। मैं वहां से उठने ही वाला था कि इतने ही में अम्मां ख़ुद ही पहुंच गईं। उनके बाद चची फूफी दादी ममानी सभी पहुंचीं। यह बेतुका हमला देख मैं बहुत चकराया। घबड़ा कर अम्मां से पूछा कि ख़ैर तो है।

दादी—(गाने लगीं)

"मेरा राजा बेटा दूलहा बन कर शादी करने जायेगा।

सुन्दर मुख पर मौर सुहाना, पहने जोड़ा नीमा जामा..."

मैं—"यह क्या वाहियात? मुझे यह सब बातें नहीं अच्छी मालूम होतीं।"

अम्माँ—"यह क्या तुम कहते हो?"

मैं—"कहता क्या हूं। मैं शादी की बातें नहीं सुनना चाहता।"

फूफू—"वाह! लल्ला जी वाह! हम लोग तुम्हारी शादी के लिये ठाकुर जी से दिन रात दोआ करें। और तुम शादी से इस तरह चिढ़ो।"

दादी—"बेटा न जाने हमने कितना पुण्य किया था कि हमको यह दिन नसीब हुआ कि तुम्हारी शादी का हम गाना गायें । और... "

मैं—" माफ़ कीजिये । आपअपना गाना रहने दीजिये । "

दादी—"क्यों बेटा क्यों न गायें । दो दिन की ज़िन्दगी है । न जाने कब प्राण छूटे । सब इच्छायें तो पूरी होगईं । एक यही बाक़ी है कि चलते चलाते आंख भर के तुम्हारी दुल्हिन को तो देख लें । "

मैं—"मैं शादी करूहींगा नहीं । दूल्हिन कहां से आयेगी ? "

अम्मां—"ख़बरदार ! ऐसी बातें न बोला करो । "

ममानी—" लल्लाजी ! तुम्हारे न करने से कहीं तुम्हारी शादी रुकी रहेगी । "

फूफू—"पढ़ लिख के तुम्हें इतनी भी अक़्ल न आई । कि शादी के करने या न करने वाले हम लोग हैं या तुम हो ।"

अम्मां—"हां हां तुम हो क्या चीज़ । बड़े कहने आए हैं कि शादी न करेंगे । देखें कैसे नहीं करते हो ? "

दादी रोने लगीं । अम्मां की आखों में भी देखा देखी आंसू छलक आये । मैं झल्लाया हुआ कोठे से नीचे उतर आया और मर्दाने मकान के बैठक में जाने लगा । जैसे ही मैंने चाहा कि पर्दा हटा कर बैठक में क़दम रखूं वैसे ही मेरे कानों में कुछ आवाज़ आई । मैं वहीं ठिठुक गया और खड़ा खड़ा चुप चाप सुनने लगा ।

मेरे चाचा की आवाज़—"मैं इनसे पहिले ही से कहता चला आता हूं कि लड़कों को बहुत ज़्यादा अङ्गरेज़ी पढ़ा कर

ख़राब न कीजिये न कीजिये। मगर यह मानने वाले किसके थे। इतना ही नहीं, बल्कि लड़कों को पैदा होते ही अङ्गरेज़ी नेसों के हवाले कर दिया। लड़के बिगड़ें न तो हों क्या? उनके ख़्यालात क्यों न बदल जायें, क्यों न हमारी साइन्टफ़िक रस्मों को लातों से कुचलें। जनाब दोनों लड़कों की शादी में वह वह झंझटे उठाई हैं कि हम लोग मुँह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहे। जहां जहां शादी ठीक होती थी, लड़के साहेब ऐंठ जाते थे। न ज़ायचे (टीपन) को मानें न पण्डितों को समझें। करेंगे क्या कि विलायत जायँगे, होटल में पावरोटी बिस्कुट जूते पहन के खायँगे. कोट पतलून पहनेंगे, धर्म नष्ट करेंगे, अपनी मनमानी शादी करेंगे। अरे हम लोग तो घर के मनेजर हैं न। अगर उनके हुकुम के मुताबिक़ काम न करें तो बेवक़ूफ़ ठहराये जायें। हाय! हाय! हिन्दुस्तान भ्रष्ट हो गया।

"बेनी ने एम० ए० तक शादी नहीं की, हम लोग सर पटक के मर गए। मगर उसकी अङ्गरेज़ियत में हम लोगों की सब बातें बे असर थीं। शादी भी की, तो एक बी० ए० पास के साथ। भला वह क्या समझे, कौन सास कौन ससुर। मियाँ के साथ विलायत चलती हुई। और वहां जाकर भी रंग लाई। कैम्ब्रिज से बी० ए० पास किया। हाय! इनके लड़के जो होंगे, वे बिचारे क्या करेंगे। बाप एम० ए० आई० सी० एस० मां बी० ए० कैम्ब्रिज, पैदा होते ही अंग्रेज़ी बोलने लगेंगे। हाय रे! धर्म कर्म सब नष्ट हो गया। अपना धर्म है तो सब कुछ है। भला इन्हें विलायत जाने की कौन ज़रूरत पड़ी थी। घर में ईश्वर ने काफ़ी खाने पीने को दिया था। मँझले साहब मोहन वह उनसे बिगड़े दिल हैं। हर बात में अपने भाई की नक़ल करते हैं। न ग्रह का ख़्याल न किसी का ख़्याल। अगर फ़लानी

के साथ शादी न होगी तो विष खा लेंगे, शूट कर (गोली मार) लेंगे। बी० यस० सी० पास होते ही जापान भागे, अब वहाँ से अमेरिका जायँगे, कुछ दिनों में आस्मान में सीढ़ी लगायेंगे।

"उनकी बीबी का हाल न पूछिये। पूरी मेम साहिब हैं। शाम को गाड़ी पर टहलने को न मिले, तो तपेदिक़ हो जाय। चूल्हे के सामने बैठते हुए आँखें फूटती हैं। मुहल्ले वाली औरतों के साथ बैठा नहीं जाता। बैठेंगी तो कुर्सी पर। पैर हमेशा मोज़े जूते से जकड़े रहते हैं। पोशाकें दिन भर में। सौ सौ दफ़े बदली जायँगी। कभी अँग्रेज़ी, कभी बङ्गाली, कभी पारसी, हर तरह के ड्रेस पहिनने में ज़रा भी न शर्म है न लिहाज़ है। बदन पर कम्बख़्त ने एक गहना तक न रखा, यहाँ तक कि चूड़ियाँ तक अलग कर दीं। और स्त्री के लिये ख़ास ख़ास दिनों में नहाना पहिनना सर खोलना शास्त्र में लिखा है, मगर यह तो न सनीचर देखे न बुद्ध. दिन भर में तीन दफ़े नहाती है और दस फ़ैशन के बाल संवारती है, और इस तरह से कि जिधर से आप निकल जाती है मीलों तक साबुन और लैवैन्डर की खुशबू फैल जाती है। और मना करो तो कहती हैं कि अगर एक रोज़ भी अपना सर न साफ़ करूँ, तो दिमाग़ ख़राब हो जाय, हाय! हाय! शहर भर हमें थूकता है। जिधर निकलता हूँ उधर अँगुलियाँ उठती हैं। ऐसी औरतों को तो गंगा में डुबो दे। ऐसों से कभी गृहस्थी चल सकती है? कोई त्योहार किये जा सकते हैं? चाहे जो कुछ हो, मैं तो बेनी और मोहन के साथ हर्गिज़ नहीं खाऊँगा; लोग मुझे हँसते हैं लेकिन इस छोटे लड़के की शादी में दिखा दूँगा कि मैं पुरानी रस्मों के मानने में कितना पक्का हूँ। मैं मुन्शी लालबख़्श को ज़बान दे चुका हूँ। अगर लड़के ने ज़रा भी टिर पिर की, तो मैं उसकी जान और अपनी

जान एक कर दूँगा । फिर देखियेगा, और इस बात को सोने से लिख लीजिये कि यही तीसरे लड़के की बेपढ़ी स्त्री घर चलायेगी । और ये बी० ए० वालियाँ घर ख़राब करेंगी" मेरे पिताजी चुप थे, कुछ न बोले ।

पुरोहितकी आवाज़—" सरकार खूब कहेन और सही कहेन और यु जोड़ी तो अस उत्तम उतरी है कि काव कही । मानो राम अपने हाथे से रचिन हैं । बाबू जी, हम टिपने से भांप लीन । दूवन के बिरहसपत अस सुन्दर स्थान पर पड़ा हें । और मङ्गल तो अस सहाय हैं । बहुत टीपन बिचारेन, मुला अस बढ़ियाँ कोई नहीं बनत है ।" इतना सुनना मेरे लिये बहुत था, दोनों हाथों के सर पकड़ लिया । लड़खड़ाता हुआ वहाँ से लौटा । चौखट नाँघते ही मैंने एक आह भरी और कहा—

"हथकड़ी तैयार हैं और बेड़ियाँ तैय्यार हैं ।"

इस पर फ़ौरन ही किसी ने मधुर स्वर से कहा-

उहुँक,

"बेड़ियों में कुछ कसर हैं, रस्सियाँ तय्यार हैं ॥"

लौट के देखा तो शान्ती मुस्कराती हुई मिली ।

रात भर जो हालत रही, मैं ही जानता हूं । न जाने क्यों मेरी तबियत इस शादी से हट गई । घन्टों रोता रहा । करवटें बदलता रहा, एड़ियाँ रगड़ता रहा । परेशानी में बाल नोच डाले । तकिये पर सर पटक डाला । हाय ! मेरी ही शादी होती है और मैं ही कोई नहीं । मुझी को उसके साथ ज़िन्दगी काटनी है, और मेरे हौसले मेरे शौक़ मेरी पसन्द मेरी राय हाय, इन सभों से कोई मतलब नहीं ।

अफ़सोस ! मुझे यह भी नहीं मालूम कि मेरी स्त्री लँगड़ी, लूली, कानी, खुतरी कैसी है। कुछ पढ़ी लिखी भी है। यदि पढ़ी हुई न हुई तो मेरा उसका जोड़ कैसे बैठेगा। शैक्सपियर और बाइरन के ख़्यालात की सङ्गत से मामूली और ओछी बातों में मेरा मन नहीं लगता। बारीक ख़्याली में एक नया मज़ा मिलता है। घन्टों मस्त रहता हूँ। हाय ! कैसे एक गवाँर फूहर बेपढ़ी लड़की की नोन तेल लकड़ी और टंड़िया बाजूबन्द के बारे में लगातार बातें सुनूँगा ? मेरे ऊँचे ख़्यालात को यह क्या समझेगी।

हाय !

"अलमदद ऐ बख़्त है सय्याद अपनी ताक में।
और फँसाने को हमारे बाग़वां तय्यार हैं॥"

(३)

"ईदगाहे रस्म देरीना पै कुर्बानी है आज।
और कटाने को गला हम बेज़वां तैय्यार हैं॥"

ज़ुल्म ! ज़ुल्म !! और बड़ा ज़ुल्म !!! वह भी कैसा ? न तो ईश्वर का दिया हुआ। न फूटी क़िस्मत का ढाया हुआ। बल्कि पण्डितों का बनाया हुआ। और बूढ़ों का बिगाड़ा हुआ। जानमारू रस्मरिवाजों का गन्दा और दम घोटनेवाला पाखण्ड। तिलक के रोज़ से चौवक्ता उबटन की लिपई पोताई से, नहाना क्या वल्कि मुंह धोने की मनाही से (ताकि कहीं नक़ली रंग न छूट जाए) –मुर्दे का रंग खूब चढ़ा। मैंने चचा से कहा कि ऐसेही अगर आपको मुझे रंगने का बड़ा शौक़ था तो दो चार आने का 'पाउडर' मँगवा दीजिये, आख़िर क्यों यह बदबूदार क़ै दिलाने वाला मैला कुचैला कपड़ा महीनों से लगातार पहिनाए हुए

मेरी जान ले रहे हैं। ईश्वर समझे उन हैज़ा के सच्चे मददगार पण्डितरूपी मौत के टट्टुओं से जिन्होंने साल भर के तमाम ख़ूबसुरत मौसिमों में भद्रा का अड़ंगा लगाकर ब्याह शादी के लिये ऐसे लूह तपिश और आंधी पानी के दिन तज़बीज करके छीछालेदर कर रखा है। भला यह अकेली अधमरी जान और ख़ब्ती दिमाग़ इन बातों को कैसे बरदाश्त करे। चचा ने बहुत डांटा के चुप रहो।

आख़िर बरात रवाना हुई। शरीफ़ और भलेमानुस कम मगर ठलुए, फ़सादी, और लड़ाके बिरादरी का ज़ोम भरने वाले महापुरुष बहुतेरे। क्यों कि आजकल के ज़माने में किस नौकरी पेशेवाले के पास इतना बेकार वक़्त है कि दूसरों की शादी में अपना चार चार दिन आसानी से ख़राब कर सकें जबकि एक घंटे की छुट्टी के लिये ज़मीन आस्मान एक कर देनी पड़ती है। रिशवत देकर, बड़े बाबू की सिफ़ारिश, फ़ीस देकर डाक्टर साहिब का सार्टिफ़िकेट हासिल कर और यों भले चङ्ग से बीमार बन कर, अफ़सर की डांट फटकार सुनकर जो कभी एकाद घंटे की छुटी नसीब भी हुई तो तन्ख़ाह मिलते वक़्त मालूम हुआ कि एक हफ़्ते की तन्ख़ाह कट गई और Service book में कामचोर लिख दिये गए ताकी आगे की तरक्क़ी बन्द होजाए। पहिले के दिन गये जब इतनी कड़ी पाबन्दियां न थीं। रेल वग़ैरह कुछ न था। इसलिये हरेक पड़ाव पर दो एक दिन बिना ठहरे सुस्ती उतरती ही न थी। तब शादी की रस्मों के प्रोग्राम को ख़ूब फैलाकर यों बारात टिकाने के लिये चार दिनों का सामान जुटाया गया तो कोई बड़ी बात न थी। बल्कि यह बात तो ज़रूरी थी। मगर तब का ज़माना बदल गया लेकिन प्रोग्राम न बदला। सिकुड़ने के बजाए और भी

फैलता जाता है। मैं ने चचा से कहा कि शादी तो एक रोज़ में ख़तम हो जाती है फिर उस के बाद तीन तीन दिन तक बारात को फ़ज़ूल अटका कर लोग क्यों सड़ाते हैं। न कभी किसी को वक़्त पर खाना मिले न सोना नसीब हो बेहतर होता कि आप भी और क़ौमों की तरह कुछ 'रिफ़ार्म' करते और चार दिनों का झमेला एक रोज़ में निवटाते, या ज़्यादे से ज़्यादे दो रोज़ में। एक दिन शादी और दूसरे दिन दावत और जलसा। चलिये अल्ला! अल्ला! ख़ैरसल्लाह! धूमधाम भी अच्छी ख़ासी हो। बारातियों को लुत्फ़ भी ख़ूब आये। ख़र्च में भी बचत हो। यह क्या वाहयात कि एक रोज़ दाल है एक रोज़ भात है। और एक रोज़ एक दम टायं टायं फ़िश। कोई खाये कोई न खाये। कोई नख़रे दिखाये। कोई ख़ुशामद कराये। मतलब यह कि खाना पीना तो दरकिनार। मगर खाना ज़रूर ख़राब हो। योंही हमारी क़ौम को ग़रीबी मारे डाल रही है और ऊपर से आप लोग इन बातों से और भी क़ौम के गले पर छुरी चलाते हैं। बेलुत्फ़ी बढ़ाते हैं। लड़ाई झगड़े का सामान जुटाते हैं। बदहज़मी और हैज़ा बुलाते हैं। और मुफ़्त में बेचारी लड़कियों को बदनाम करते हैं कि इनलोगों ने तबाह करडाला। फिर चचा ने घुड़की बताई कि चुप रहो। वही होगा जो होता आया है। मैं तुमलोगों की तरह भ्रष्टी और बेधर्मी नहीं हूं। समझे मैंने भी अग्रेज़ी पढ़ी है। मैंने दिल में कहा कि ईश्वर ही आपसे समझे।

ईश्वर ने तो न समझा। मगर लोकइया जो जनवासे में चचा की ख़िदमत करने के लिये तैनात किया गया था इनसे बुरी तरह समझने लगा।

चचा साहिब मज़े में गुड़गुड़ी पी रहे थे कि इतने में लोक-

इया को पुकार कर कहा कि जा "हुक्का बदल ला" उनका मतलब यह था कि पानी बदल कर हुक्का ताज़ा करलावे मगर लोकइया को यह बारीकी समझ में न आयी। उसने इस मुहावरे के लफ़्ज़ी मानी के मुताबिक़ काम किया यानि उनकी गुड़गुड़ी उठा लेगया और बाहर से न जाने किसकी गुड़गुड़ी लाकर चचा के सामने रखदी। वह उसे अपनी ही समझ कर बेफ़िक्री के साथ मुंह के पास ले गये। ईश्वर जाने पीया या नहीं। यह मैं नहीं कह सकता मगर इतना मैं जानता हूं कि कुछ देर में बोले " कम्बख़्त को गुड़गुड़ी ताज़ा करने के लिये कहा था मगर इस बेवक़ूफ़ से वह भी न हुआ। जा यहीं पानी ले आ। उल्लू कहीं का।"

लोकइया गया और चिल्लू में पानी लेके आया। यह देखते ही चचा मारे गुस्से के उबल उठे।

"देखो तो बदमाश को चिल्लू में पानी लाया है। गोया चिल्लू भर पानी में डूबना है। बदतमीज़ जानवर कहीं का।"

लोकइया तुरन्त मारे डर के वहां से रफ़ूचक्कर हुआ और दो भरी बाल्टियां पानी की उठा लाया। चचा ने गुड़गुड़ी के पानी की तरफ़ इशारा करके कहा कि पहिले इसे फेंक दे। लोकइया ने समझा कि 'गुड़गुड़ी' फेंकने को कहते हैं। इस लिये गुड़गुड़ी उठा कर कोठे के नीचे सड़क पर झन से फेंक दी। अब चचा को ताब कहां। दांत पीसते हुए उठे और लोकइया पर टूट पड़े।

चचा—"क्यों बे हरामज़ादे यह क्या किया?"

लोकई—"हजूरे तो कहिन की फेंक देयो तो हम करी का?"

यह सुनकर चचा के बदन में और आग लग गई। इतने में आंख लाल लाल किये मियां इहसान अली खां कोठे पर पहुंचे

और गर्ज कर बोले। "किस हरामज़ादे ने मेरी गुड़गुड़ी फेंकी है?"

लोकई—"हजूर हमार कसूर नाहीं है। यू मुनसी जी कहिन कि फेंक देयो तो हम फेंक दीन। हम का करी?"

इहसान—"वाह! जनाब वाह! बारात में लाकर अच्छी ख़ातिरदारी करते हैं आप। इसी लिये मैं आपलोगों की बारातों में कभी क़दम नहीं रखता था।"

चचा—"ख़ां साहिब आप फ़ुज़ूल नीली पीली आंखें करते हैं। आपकी गुड़गुड़ी से मुझ से क्या बहस। यह गुड़गुड़ी मेरी है। अच्छा आप बदनाम करने चले है?"

लोकई (चचा से) "नाहीं हजूर आप रिसिया न होंई। आपकेर गुड़गुड़ी ई न होय यू फूरे खांव साहब के होय। हजूर कहिन कि गुड़गुड़ी बदल लाओ। हम बदल लायन। हम का करी।"

अब चचा सन्नाटे में आगये सर चकरा गया। बौखला के बैठ गये और क़ै करने की कोशिश करने लगे। इधर बरात में हल्ला हो गया कि मुन्शी जी बेधर्म होगये। मुसलमान का हुक़ा पी लिया।

चचा ने फ़ौरन ताड़ा कि इस बात को अभी निबाहना चाहिये। वरना ग़ज़ब हो जायगा। और ख़ासकर ऐसे मौक़े पर। अगर यह बात मशहूर हो गई तो मैं कहीं का न रहूंगा। ज़ात से हमेशा के लिये बाहर कर दिया जाऊंगा। मेरा छूआ कोई पानी तक न पीयेगा। शादी में गड़बड़ी मच जायेगी। पुश्तहा पुश्त यह ऐब दूर न हो सकेगा। यह सोचते ही तुरन्त तन मना के उठे। और कहने लगे।—

"कौन हरामजादा कहता है कि मैंने मुसलमान का हुक्का पीया है। कहनेवालों की क्या आंखें फूट गई हैं। देखते नहीं कि गुड़गुड़ी सामने आते ही मैंने फेंकवादी। हाथ से छूना कैसा?

एक भले मानुस—"हां हां सही है। अगर धोखे में भूले भटके ग़ल्ती हो भी गई हो तो वह क़ाबिल माफ़ी है। चलिये कुल्ला वग़ैरह करके नहा डालिये झगड़ा ख़तम हो। अगर इस तरह से ज़रा ज़रा सी बातों में ज़ात और धर्म जाया करे तो एक रोज़ ईश्वर चाहेगा हम लोगों का नामोनिशान का पता भी न लगेगा।"

दूसरा—"जी हां अच्छे सलाहकार आये हैं। अण्डा मुर्ग़ी खाते जाइये और ऊपर से अपने को हिन्दू भी कहते जाइये। वाह रे भ्रष्टी!"

पहिला—"वाह! वाह! खाना पीना अपनी अपनी तबियत और पसंद पर है या धर्म पर? धर्म का काम ज्ञान और बुद्धि सिखाना है। पाप से बचाना और नेकी सच्चाई दया और पुण्य का रास्ता बताना है, मुक्ति दिलवा कर ईश्वर से मिलना है न कि इन सब कामों को छोड़कर खाने पीने के मामले में अपनी ख़ाहमख़ाह की टांगें अड़ाकर पाखण्ड रचना है अगर पाखण्डी होने को धार्मिक होना कहते हैं तो मैं भई बेधर्म भला।"

चचा–"आख़िर इस बहस की ज़रूरत ही क्या है। मैंने गुड़गुड़ी छुई तक नहीं पीना कैसा? क्यों बे लोकइया कहीं मैंने गुड़गुड़ी पी थी?"

लोकई–"नाही हजूर कहां पीयेन। दुइये एक फूंक तो खिचबे कीन रहा वैसे तो हजूर फेंकवाए दिहेन।"

चचा–"झूठा ! दग़ाबाज़ ! बदमाश ! अन्धा कहीं का ! क्यों रे अन्धे मैंने दो फूंक पी थी ? अब भी सम्हल के बोल ।"

लोकई–"हजूर गिनेन नाहीं । दुई नाहीं तो चार होई । कि नाहीं हजूर ? ऐसे होइबे करी । सैगर न होई ।"

इतना सुनते ही चचा धोती सम्हालते हुए लोकइया पर झट पड़े । मगर लोगों ने बीच बचाव कर दिया वरना उस वक्त गुज़ब ही हो जाता । तौभी चचा का गुस्सा कम न हुआ । हाथापाई की कमी ज़बानी जमाख़र्च के हिसाब में पूरी होने लगी डांटडपट गाली गलौज के साथ साथ चचा का दम फूलने लगा । यहां तक कि खांसी आगई और इस बुरी तरह, कि गालीगलौज का सिलसिला इस खांसी की ऐंचा तानी में आकर खटसे उलझ गया । उधर लोकइया डांट फटकारसे तङ्ग आकर बड़बड़ाता हुआ वहां से खसका कि इतने में चचा ने फिर डांट बताई ।

"अबे उल्लू का पठ्ठा देखता क्या है । कम्बख़्त ओगालदान उठा ला" (फिर खांसने लगे ।) लोकइया की समझ में कुछ भी न आया । बौखला कर इधर उधर देखने लगा ।"

चच— (खांसते हुए) "अबे लाया ?"

खोकई–"कहवां रखा है ?"

चचा–(खांसते हुए) "कमरे में मेरी चारपाई के नीचे । हां हां वही वही कम्बख़्त ।" लोकई ने उसे उठाना चाहा । मगर तुरन्त ही छोड़ के अलग खड़ा हुआ ।

लोकई–"हुंक ! हूं ! हू. ! राम राम ! हत तोरी की ।"

चचा–"क्या हुआ ?"

लोंकई—"का जानी कौन ससुर एमां थुंक दिहिस है । देखतेन तो सारे के अस मरतेन........"

चचा—"चुप हरामज़ादे मुझी को गालियां देता है।"

लोकई—"हे राम! केतिक थूकिस है? सारे के बलगम होयगवा रहा का?"

चचा—(खांसते हुए) "अबे ला हरामज़ादे।"

लोकई—सगर जहान छाड़ के एहीमां ससुर के थूके के रहा।"

चच—हरामज़ादा!, बेहूदा। बदतमीज़। झूठा दग़ाबाज़ बेइमान कहीं का। लाता क्यों नहीं?"

लोकई—"हो लेयो! हम हीं झूठ बोलित है। अरे सरकार नहके कच्ची पक्की कहत हन आपुई देखी अपने आखिन से ई थूक न होये तो का होये?"

यह कह के लोकइया ओगालदान उठा लाया और उनके सामने उन्हीं के क़ालीन पर औंध के रख दिया। फिर तो लोकइया की कम्बख़्ती पूरी हो गई।

मैंने समझा था कि इस गड़बड़ झाले में चचा ज़बरदस्ती मुसलमान क़रार दे दिये जायेंगे। और यों मेरे गले की फंसरी आसानी से टूट जायगी। मगर यह न हुआ। मसल मशहूर है कि ज़हर ज़हर को मारता है। और कांटा कांटे को निकालता है। तो इसी तरह से गन्दगी अगर दूर हो सकती है तो गन्दगी ही से। इसी मसले पर लोगों ने काम किया और चचा को गोबर वग़ैरह अल्लम ग़ल्लम खिला कर उनके मुंह की नापाकी या मुजस्सिम उनकी नापाकी झट दूर कर दी। एक डेढ़ पाव गोबर खाने के बाद हमारे दक़ीयानूसी भाइयों की निगाहों में चचा फिर ज्यों की त्यों पवित्र हो गये। हालां कि मुंह और पेट दोनों इस राय के सख़्त ख़िलाफ़ थे। मगर उनकी कौन सुनता था?

इधर सुनिए मेरी हालत। मांड़ो के नीचे रात भर पीढ़े पर बैठे बैठे मुझे बेहोशी सी आ गई। दो तीन घण्टे तक पण्डित जी न जाने क्या क्या मुझ से कराते रहे। उसके बाद एक बड़ा सा बण्डल कुछ स्त्रियां ढकेलती हुई ले आईं। और मेरी बग़ल में रख दिया। मैं सख़्त चकराया कि यह कौन सी बला मेरे सर फट पड़ी। एक तो योंही मेरे बैठने के लिये जगह कम थी। दूसरे इस ग़रीबी में यह आटा गीला। और उस पर मज़ा यह कि पण्डित जी ने मुझे उस बण्डल के साथ नथ्थी कर दिया ताकि मैं एक दम जकड़ा रहूँ। हिल न सकूं। थोड़ी देर में यकायक मैं खड़ा कर दिया गया। और उस बण्डल के चारों तरफ़ मैं कोल्हू के बैल की तरह घुमाया जाने लगा। मगर मेरे खड़े होतेही बण्डल भी लम्बा हो गया। मैं झिझक पड़ा। दिल में सोचा कि उसमें कौन सा जानवर बन्द है। वैसेही पण्डित जी ने हांक लगाई कि अपनी स्त्री के साथ भांवरे घूमिये। और उसी दम नाई ने आगे बढ़ने के लिये मुझे पीछे से हुरपेटा। मैं घबड़ा उटा। सारी रात बठे बैठे एक तो पैर बेकार हो गये थे। दूसरे जगह कम और फिसलन ज़्यादे। और पीछे से नाई का धक्का बस मैं बौखला कर पण्डित जी की तोन्द पर आ गिरा। झपेट में ससुर जी भी आ गये। और पण्डित जी के साथ ज़मीन पर वह भी क़लाबाज़ियां खेलने लगे। ससुर जी की लम्बीदाढ़ी पर घी भरा चिराग़ उलट पड़ा। एक तो योंही पचास बरस की सूखी दाढ़ी। उस पर घी का पुचारा। ससुर जी हां हां करते ही रहे मगर वह वारूद की तरह भक से उड़ गई। नाई ने घबड़ा कर जल्दी से कलसा उठाया। मगर कलसे का मुंह हाथ ही में रहा और भरा कलसा पण्डित जी की खोपड़ी पर तड़ाक़ से गिरा। खोपड़ी चिटख़ गई। कुछ परवाह

नहीं । झोटइया तो बची वरना सूखी झाड़ी की तरह दाढ़ी की देखादेखी वह भी साफ़ हो जाती । न कोयला निकलता और न राख ही काम आती । ईश्वर ने बड़ी ख़ैर की कि ऐन मौके पर खोपड़ी पर कलसा गिराया । इसके लिये ईश्वर का मैं भी बहुत अनुग्रहीत हूं क्योंकि परिडत की ने तुरन्त मेरी जान छोड़दी नहीं तो मैं तो समझा था जी कई एक दिनों तक परिडत के कवायद का सिलसिला खतम नहीं होगा ।

(४)

"आंखों पे अख़्तियार है अच्छा न रोयेंगे ।
कुछ आप मेरे दिल को भी समझाये जाते हैं ?"

लीजिये पैर बंध गए । दोपाया से चौपाया हो गया ।

लोग समझने को तो यही समझते हैं कि दूल्हे की इस वक्त की खुशी का अन्दाज़ा नहीं हो सकता । उमंगें दिल में कलोलें कर रहीं होंगीं । मनसूबे अपनी मस्ती में छलांगे मार रहे होंगे । दिल एक अजीब मज़ा ले रहा होगा । दिमाग़ खुशी के नशे में चूर चूर होगा । मगर उफ़ ! जो मेरे दिल पर बीत रहा था वह दिल ही जानता है । 'जाके पाय न जाय बिवाई क्या जाने वह पीर पराई ।' दिल वो दिमाग़ की हालत क्या बताऊँ । दुश्मनों की तोपों से ढाये हुये क़िलों की तरह अपनी फूटी क़िस्मत पर फूट फूठ कर रो रहे थे । जहां आज़ादी का ख़ून हो चुका था । बेफ़िक्री कारी ज़ख़म खाए हुए मौत के पञ्जे में तड़प रही थी । उमंग और मनसूबे रह रह कर दम तोड़ रहे थे । मगर दम नही निकलता था । उस दुश्मन की एक झलक देखने के लिये जिसने यह सत्यानाश करके ऐसा हाहाकर मचा रखा था सौजान से बेचैन थे । इसी के लिये इनके प्राण अटके हुए थे ।

अय मेरे टूटे फूटे दिल के ज़ख़मी मनसूबों ! कब तक तुम लोग

अपनी आखिरी उखड़ती हुई सांस को रोकोगे ! अभी तुम्हारे दुश्मन के दर्शन में बहुत देर है। आज 'भात' है कल 'बड़हार' है। नरसों जाकर कहीं बारात बिदा होगी। फिर घर पहुँच कर कई दिन के बाद जब पण्डित जी साइत बिचारेंगे तब तुम जाकर अपने दुश्मन को पावोगे। तब तक अय दिल के घायल बाशिन्दो तुम्हारा हाल क्या होगा। मैं इसी सोच विचार में था कि एकबार्गी हुल्लड़ हुआ। क्योंकि चचा साहब लड़कीवालों से लड़ गये। सिर्फ़ इस बात पर कि इन लोगों ने जलपान के लिये डेढ़ डेढ़ पाव के हिसाब से मिठाइयां क्यों भेजीं। सेर सेर भर फ़ी आदमी के हिसाब से क्यों नहीं भेजीं। हमारी सख़्त बेइज़्ज़ती हुई। इन कम्बख़्तों की अब हम यहीं आबरू उतार लेंगे। आज कोई इनके यहां भात खाने न जायेगा। कुछ परवाह नहीं बिना भात खाये बारात बिदा होजायेगी। इत्यादि...। फिर तो बड़ी बड़ी खुशामदें होने लगीं। पैर पर टोपियां रखी गयीं। हर तरह से इतमिनान दिलाया गया कि डेढ़ डेढ़ पाव की तश्तरियां इसलिये लगाई गई कि फ़ज़ूल मिठाइयां ख़राब न जायें। नहीं जितनी कहिये उतनी भेजवादी जाएं। इस पर चचा और भीं बिगड़ उठे। लेजाओ अपनी मिठाई अपनी ऐसी तैसी में रखो यह कह चचा ने डेढ़ मन मिठाइयां एकदम फेंकवादी। फिर क्या था फ़सादी ठलुए भी देखा देखी ऊधम मचाने लगे। कोई दंगा करने लगा कि हम खुद जाकर बाज़ार में लेमनेड बर्फ़ पीलेंगे। रखो अपने घर में अपना शर्बत। कोई यह कह कर शर्बत का गिलास हाथ में लेकर फेंकने लगा कि घर में ससुरे चान्दी का गिलास किस दिन के लिये रखे हुए हैं जो हम को फूल के गिलास में शर्बत भेजते हैं। इनकी तरह गोया हम भी कमीने हैं। नहीं पीयेंगे। ख़ैरसाहब तीन मन मिठाइयां और आईं।

और सब ख़राब गईं। फिर भी चचा का ग़ुस्सा कम न हुआ। शाम तक इतने ख़फ़ा हो गये कि पालकी पर चढ़ कर घर जाने के लिये स्टेशन चल दिये।

'भात' के दिन चचा का यों चला जाना! ग़ज़ब हो गया। फ़सादियों की बन आई। सभी अब जाने की तइयारियाँ करने लगे। मगर जाता हुआ कोई नज़र न आया। पिता जी बेचारे ख़ुशामदें करते करते थक गये। मगर ऐसे मौक़े पर यह ऐरे ग़ैरे ऐसे तुर्रमशाह बन जाते हैं। बिरादरी की आड़ में वह आफ़त ढाते हैं कि बस ईश्वर ही याद आते हैं। न बड़ा समझें और न छोटा। न मौक़ा देखें न वक़्त। फ़ौरन बिरादरी के जोश में इनसानियत को एक दम भूल जाते हैं और भलमनसाहत को ऐसा धो के पी लेते हैं कि अकसर गालीगलौज थुक्कम फ़ज़ीहता दंगा फ़साद क्या बल्कि मारपीट तक की नौबत पहुंच जाती है। अगर इस वक़्त चचा मौजूद होते तो मैं उनसे ज़रूर पूछता कि क्यों जनाब शादी में लड़ाई झगड़े का होना भी रस्म है। क्या यह बातें भी ऐसी ज़रूरी हैं कि इनमें सुधार की कोई गुञ्जाइश नहीं है। मगर सुधार कर के करना क्या है? क्योंकि हम लोग तो हैं हिन्दुस्तानी। गो यह सही है कि हम हिन्दुस्तानियों से बढ़ कर, 'रिफारमर' दुनियां के पर्दे में कहीं नहीं मिलेगा। हम बैठे बैठे सैकड़ों 'रिफ़ार्म' सोचा करते हैं। मगर हमारी हिन्दुस्तानी ख़ासियत ऐसी है कि एक रिफ़ार्म का भी पालन नहीं करते। और ख़ास कर अपने मौक़े पर सब सुधार के ख़्यालों को एक दम भाड़ में झोंक देते हैं। अपने ही बनाये हुए 'रिफ़ार्मों' पर अपने ही हाथ से उलटी झाड़ फेरने लगते हैं। शादी ब्याह में लड़की वालों को कोल्हू में डाल कर तिल

की तरह पेरते हैं और जहाँ तक उनमें तेल निकल सकता है हम निचोड़ लेते हैं अफ़सोस ! यह ख्याल नहीं रहता कि हमारे घर में भी लड़कियाँ हैं । और हमारी भी कभी बारी आवेगी। इन्हीं बेवकूफ़ियों में न जाने कितने घराने क्या देश का देश तबाह हो गया और दिनोंदिन तबाह होता जाता है । लाखों बच्चियां पैदा होते ही अपनी फूटी क़िस्मत पर दो आँसू बहा कर चल बसीं। कितनी ही कुंवारी लड़कियों अपनी चढ़ती जवानी में जान दे दीं । मगर हमारी बेदर्द अन्धी हिन्दुस्तानी क़ौम ने आह ! अब तक 'ऊफ़' ! तक न की । ईश्वर जाने कब तक हम लोगों की आंखें खुलेंगी ।

इतने ही में वह चारों कहार जो चचा को पालकी पर ले गये थे हांफ़ते कांपते दौड़ते चिल्लाते हुए पहुंचे । उनकी बद-हवासी देख कर सब लोग दौड़ पड़े और एक ज़बान से सभी उनकी परेशानी का हाल पूछने लगे ।

१ कहार—"का कहीं हम से कछू कहे नाहीं जात है ।"

लोग—"अरे भई ! बात तो बता क्या हुआ ।"

२ कहार—गजब होइगवा सरकार । गजब होइगवा ।

लोग—"अरे बोल कुछ मुंह से बोल तो । तू कहता क्यों नहीं ।"

३ कहार—"नाहीं हम से न पूछौ । कहे लायक बात नाहीं है ।"

पिता—"क्या हुआ क्या ? अरे ख़ैर तो है ? मुन्शी जी को कहाँ छोड़ आए ?

१ कहार—"के जाने जीयत हैं कि मार डारे गये ।"

सब—"आयं ! यह क्या ग़ज़ब हुआ ?"

२ कहार—"हम तो पहिलवें कहा रहा कि गजब होइगवा।

पिता—"अरे साफ़ साफ़ बताता क्यों नहीं कम्बख़्त।"

४ कहार—"का बताई सरकार। सड़क छोड़ के हम सभें खेते खेते जात रहेन जो मां हाली से टीसन पहुंच जाई। मुला जइसे भुतहा बाग में पहुंचेन हैं। अब आगे न पूछी! हाय! दादा बड़ा डर लागत है।"

पिता—"हां हां तब तब। बोल भाई आगे क्या हुआ?"

४ कहार—"दोहाई सरकार! अब न पूछो। जीव निकरा जात है। बगिवा मां जौन बड़ा बड़ा ढोला बरसे लाग कि राम-दोहाई पालकी छांड़ के भाग न आइत तो खोपड़ी फाट जात।"

इन ख़ैरख़्वाह और वफ़ादार कहारों की बात सुनते ही सब लोग लालटेन मशाल वग़ैरह ले के चचा को ढूँढ़ने के लिये बाग़ को दौड़े। बाग़ का बाग़ छान डाला गया मगर न कहीं चचा का पता मिला और न कहीं पालकी का। लोग स्टेशन लपके। गाड़ी आई और छूट भी गई। मगर चचा वहां भी नहीं। तमाम बाग़ बग़ीचा नदी नाला सभी देखा भाला गया। मगर चचा न मिले। रात के दस बज गये। मारे भूख के पेट में चूहे उछलने लगे। ससुराल वाले 'भात' खिलाने के लिये बुलाने आये। मगर वाहरे! फ़सादी भाइयो! टालमटूल नख़रे तिल्ले, बक झक डांट फटकार गाली गलौज में सारी रात गुज़ार दी मगर खाने के लिये न उठे। गर्म खाना ठंढा हो गया और ठंढा होकर एकदम बासी हो गया मगर बलिहारी है तुम्हारी कि तुम अब भी न उठे। जब चार बज गये तो यह बहाना निकाला कि मुन्शी जी नहीं हैं। कोई नहीं भात खाने के लिये जायेगा। ससुराल वाले तब यों इतमिनान दिलाने लगे कि चलिये तो सही। मुन्शी जी वहीं मिलेंगे।

ख़ैर साहब बड़ी बड़ी मुशकिलों से बाराती भात खाने के लिये चले फिर भी चार पांच अकड़ के वहीं रह गये। उन पर आठ दस लठधारी ससुराली जवान जुट पड़े और उन्हें उठा ले गये। या ईश्वर उस दिन खाने के लिये एक तरफ़ इस क़दर ज़बरदस्ती और दूसरी तरफ़ इतने बेढब नख़रे क्यों होते हैं। खाने पीने के मामले में ऐसी तकरार और जूती पैज़ार? छि! छि! क्या यह भी रस्म है? क्या इस रस्म में भी सुधार ग़ैर-मुमकिन है? एकाद घन्टे तक की इन्तज़ारी और थोड़ी बहुत खशामद यों ही ज़रूरत से ज़्यादे है। इस पर भी कोई न खाये और नख़रे दिखाये तो अपनी ऐसी तैसी में जाये। इसके लिये फ़िक्र कैसी? यही न कि या तो वक्त पर ये लोग खाना खाना सीख जायेंगे या फिर ख़फ़ा होकर कभी ऐसे लोगों के यहां खाने पीने में शरीक न होंगे। इससे बेहतर क्या? "कम ख़ुरद दोस्त-मन न ख़ुरद जानानमन।" और ख़ास कर आज कल के ग़रीबी के ज़माने में।

लीजिये चचा मिल गये। ससुराल वालों का कहना सही निकला। मगर वाह रे ससुराली भूत! चचा को कहां लाकर बरामद किया है कि वाह! वाह! ठीक ससुर जी के घर में मांड़ो के नीचे। पत्तल के ऊपर! भात खाने के वक्त। अकेले बैठे मज़े मज़े गालियां खा रहे थे। हम लोग भी हिस्सा बटाने पहुंचे। मगर बुरा हो कम्बख़्त औरतों का। क्या रस्मों की मिट्टी ख़राब की है। उफ़! कान फटने लगे। ऐसी बुरी बुरी गालियां। और इतना खुल्लमखुल्ला? और इतना साफ़? अफ़-सोस! ओ गाने वालियों! तुम्हें अगर रिश्ते के बल पर कुछ छेड़ख़ानी ही करनी थी तो कोई दिल्लगी हंसी मज़ाक़ का गाना गातीं। तुम्हारी छेड़ख़ानी भी हो जाती और हम लोगों

का भी जी खुश होता । मगर हाय ! हाय ! यह खुराफ़ात तुम औरतों की ज़बान से सैकड़ों मर्दों के बीच में हम मर्द लोग सुनें । तुम्हारी शर्म कहां गई । तुम्हारी पर्देदारी क्या हुई । हमारे कान का तुम्हें ख़्याल नहीं तो अपनी ज़बान का तो लिहाज़ करो । तुम्हारे नन्हे बच्चे तुम्हारी उस वक्त की बातों से क्या सीख रहे हैं । उनके चित्त पर इनको कैसा असर पड़ रहा है । किस घर के १०, ५ बच्चे नहीं होते ? और ख़ास कर शादी ब्याह के दिनों में । यही दिन है जब हम हिन्दुस्तानी अपने बचपन ही में अपने वक्त के बहुत पहिले अच्छी बातें सीखने के बदले दुनियां भर की तमाम बेहूदा खुराफ़ात गन्दी बातों को पूरे तरह से जानने का लाइसेन्स पाते हैं । उधर की कमी यों इधर पूरी कर लेते हैं । किसकी बदौलत ? ओ रस्म तेरी बदौलत । तेरा बड़ा अनुग्रह है । तू किसी चीज़ का ज्ञान तो देती है । अच्छा हो या बुरा इससे क्या बहस ? क्या यहाँ भी सुधार का बस नहीं चल सकता ? क्यों चचा बोलो तो ।

जब हज़रत मल्कुलमौत अपना बोरिया बन्धना समेट कर अपने मुलज़िमों को कन्धों पर लादे हुए अल्लामियां की कच-हरी की तरफ़ क़दम उठाते हैं । और मुर्ग़ और कउवे शोर मचाते हुए अपनी आवाज़ों से उनका पीछा करते हैं ऐसे शैतानी वक्त पर खाना खिलाने वाले और खाना खाने वाले हैज़ा के सपूतों, और रस्म की आड़ में बिमारियों के बुलाने वालो साक्षात यमदूतों, तुमसे ईश्वर समझे । न वह खिलाते हैं और न हम खाते हैं बल्कि सच तो या है कि ऐसे समय हम दोनों अन्न ख़राब करने जाते हैं । यह ख़बर नहीं कि देश एक एक अन्न के दाने के लिये तरस रहा है । पत्तल पर बैठे तो सही मगर घन्टों से बैठे बैठे कमर टूट गयी किसी ने अब तक हाथ

से भाजन छूआ तक नहीं। क्योंकि अभी लेन देन का बाज़ार गर्म था। बेचारी परसी थालियां अपने सर पर यह बेढब तकरार देखते ही सर्द हो गईं और उधर की गर्मी खाने वाले और खिलाने वालों में आ गयी। यह शार गुल। सुनते ही हवा ख़ाक उड़ाती आंधी पानी को साथ लिये दौड़ी। बादल भी गर्जते हुए उमड़ पड़े। मगर यह अनर्थ उनसे देखा न गया। कलेजा फट गया और वह आते ही बरस पड़े। फिर भी यह गर्मी न हवा से शान्त हुई और न पानी से।

एक न शुद दो शुद। अभी लोग पत्तल पर से उठे ही थे कि बाहर डन्डेबाज़ी शुरू हो गयी। इस बात पर कि लड़की शादी में बिदा न होगी। क्योंकि परिडत जी कहते हैं कि 'सायत' नहीं बनती। यह ख़बर पाते ही मेरे बदन में आग ही लग गई। परिडत जी गये अपनी ऐसी तैसी में और पोथी पत्रा जाये चूल्हे भाड़ में। न जाने मैंने क्या उनके बाप का बिगाड़ा था कि ख़ाहमख़ाह मेरे हक़ में कांटा बोने को तैयार हो गये। जब दिलही हाथ से छूट गया तो उनकी परिडताई लेकर मैं चाटूंगा। ईश्वर की दोआ से न दुल्हिन कमसिन—क्योंकि भांवरों के वक्त जब बन्डल लम्बा हुआ था तो मेरे कान तक पहुंचा था—और न दूल्हा कमसिन—अच्छा ख़ासा अण्डर ग्रेजुएट—क्योंकि सोलह बरस की क़ैद को पूरा करके मैट्रीकुलेशन से साढ़े तीन बरस हुए निकल भागा था। मगर तौ भी बिदाई के मामले में इनकार और फिर हुज्जत वो तकरार! क्योंकि यह भी रस्म है। इसका पालन करना ज़रूरी है। रस्म न बिगड़े चाहे लड़की की जवानी सत्यनाश हो जाए।

मगर चचा भी किसी से कम न थे। झट अकड़ गये कि बिना दूल्हिन के बारात कभी लौट हा नहीं सकती। यह

दूल्हिन न सही । दूसरी सही । अभी अभी इसी दम इसी शहर में लड़के की दूसरी शादी करता हूं । रखें अपने घर में अपनी लड़की । या ईश्वर यह क्या ग़ज़ब हुआ । एक मुर्गा के जगह हलाल होगा ।

मगर नहीं । चचा की ध स चल गयी । क्यों न हो आख़िर पुराने आदमी थे । ऐसे वक़्त काम कर गये । यह ख़बर ससुराल में फैलते ही पण्डित जी की साइत वग़ैरह सब दुरुस्त हो गई । दूसरे दिन दूल्हिन साहबा रोती चिल्लाती अस्मान सर पर उठाती बिदा हुई ।

मेरे ससुर के भी नाना और उनके भी पर बाबा ने एक पुरानी पालकी नीलाम में ली थी । उसमें बैठ के उन्होंने अपनी पौने चौदह शादियाँ की थीं और उनके लड़के साहब ने सवा बारह; वही पालकी मेरे ससुर को वसीयत में मिली थी । उसी पालकी में बीबी साहबा पकड़ धकड़ के ठूंसी गयीं और उसी में मैं भी लदा । बुड्ढी पालकी कराहने लगी । दरवाज़ा न इधर था न उधर । सिर्फ़ एक कपड़े की आड़ थी । बीबी साहबा कीचड़ भरी चुन्धी आँखें लिये कुतिया की तरह मुँह बाये पों पों कर रही थीं । एक बारगी उन्होंने कूदने के लिये टाँग लटकाई । मैं कोने से लपक कर दरवाजे पर खिसक आया और दरवाज़े के रास्ते अपने बदनकी आड़ लगा कर रोका । पर हाय ! हाय ! पालकी का Balance बिगड़ गया । पालकी टेढ़ी होते ही न जाने कहारों की शरारत से या अपने आप जन से घूम गई । रोक तो कुछ थी ही नही मेरे ही मत्थे गई । बण्डल की तरह मैं उसमें से लुड़क पड़ा और धम से कीचड़ में गिरा । लड़के तालियां पीट कर चिल्लाने लगे । "हो देखो, दुलहवा सार धोयँ से गिरा ।"

(५)

किसी की शबे वस्ल सोते कटे हैं,
किसी के शबे हिज्र रोते कटे हैं।
मेरी यह शब कैसी है शब इलाही,
न सोते कटे हैं न रोते कटे है॥

नवसमागम की मैंने बड़ी बडी तैय्यारियाँ कीं। दिन भर तो यही सोचने में लग गया कि मैं अपने स्त्री से कहूँगा क्या? इस लिये मैंने एक व्याख्यान लिख कर खूब रटा। फिर याद दिलाने के लिये एक चिट पर ख़ास ख़ास बातों का इशारा लिख लिया। उपहार (presentation) के लिये अच्छी किताबें, रेशमी साड़ियाँ, फ़िलदार जैकेट ब्लाउज़ैज़ (Blouses) मोज़े, लेडी शूज़, हर तरह के फ़ैशनेबल तेल, हेयरपिन्स, हेयर फ़्लावर्स एण्ड बटर फ़्लाइज़ खुशबूदार साबुन, लैवेन्डर, एक सोने की घड़ी, हाथों के लिये सोने के दो अंग्रेज़ी कड़े, शान्ती की सलाह से एक जापानी बक्स में क़ायदे से रखे।

मैं०—क्यों शान्ती भाभी क्या हाल है?"

शा०—(रञ्जीदा होकर) "हाँ! सँभलते सँभलते सँभल जायेगी।"

मैं०—"क्यों क्यों, ख़ैर तो है?"

शा०—"क्या कहें, बड़ी बुरी सोसायटी में पली है।"

मैं०—"हाय? क्या ज़िन्दगी मेरी ख़राब गई।"

शा०—"घबड़ाओ नहीं। तुम्हारी पसंद के अनुसार होना तो बहुत दूर है। मगर पढ़ाने लिखाने में मैं कुछ उठा न रक्खूंगी।"

मैं०—(साँस भर कर) "नाम मालूम हुआ?"

शा०—"तुम्हीं पूछ लेना।"

मैं०—"नहीं नहीं, तुम्हें मेरी क़सम, बता दो, बता दो।

शा०—"हमें नहीं मालूम।"

मैं०—"शान्ती भाभी, मुझसे ऐसी बातें!"

शा०—"बस बस, अब तुम लड़कपन करने लगे। समझते तो हो नहीं।"

मैं०—"खूब समझता हूँ। तुम बताओ तो सही।"

शा०—"अच्छा तो फिर तुम जानो, उसका नाम है, पुतुदेइया।"

मैं०—"आंय क्या? हाय! नाम में भी कुछ तसल्ली नहीं!

शा०—"मेरा बस तो कुछ चलता ही नहीं। मैं ने बहुतेरा चाहा कि उसके भद्दे गहने उतरवा दूँ, सर के बाल ठीक कर दूँ। कपड़े फ़ैशन के साथ पहिना दूँ। लेकिन उसकी महरी के मारे कुछ नहीं होता। ख़ैर आज तो नहीं, कल मैं सब ठीक कर दूँगी।"

यह सुनते ही रही सही उम्मीद पर भी पाला पड़ गया। बस दोनों हाथों से कलेजा थाम के बैठ गया। दिल को समझाने की लाख लाख कोशिशें की और अंत में घबड़ाकर मैं रोने लगा। तौ भी चैन न आया। रह रह कर यही जी चाहता था कि गोली मारकर जान दे दूं। या किसी जङ्गलको निकल भागूं। उस रोज़ शान्ती ने मेरी बड़ा मदद की। दिन भर मेरे सिर को बर्फ़ के पानी से बराबर धोती रही। मेरे बिस्तरे को और तकिये को लेवेन्डर से तर करती रही। किताबें पढ़ कर

सुनाती रही हँसाती रही। हारमोनियम पर चलती हुई चीज़ें बजा कर मेरे रञ्जीदे ख़्यालात को तितिर बितिर करती रही। रात को ठीक नौ बजे मुझे सोने के कमरे में ले गई। मेरी बीबी साहबा पलँग पर अजब बेढंगे तौर से पड़ी मुँह बाए भैंस की तरह सों सों कर रहीं थीं। देखते ही दिल हट गया क्योंकि जिस चीज़ से नफ़रत हो जाती है तो उसमें अगर कोई अच्छी बात भी हो तो वह भी बुरी ही मालूम होती है। मैं ने ज़रा सा पैर पटका, आहिस्ते से खाँसा, मगर वह तो बेख़बर सो रही थी। बड़ी देर तक कुरसी पर बैठा रहा। परन्तु वह और भद्दी तरह से हाथ फेंकने लगी और दोनों हाथों से सर को खुजलाने लगी। इस खुजलाने उजलाने में उसके बदन का कपड़ा खसक गया। मैं उठ कर धीरे से उसे ठीक कर पट्टी पर बैठा। वैसे ही उसने करवट ली। उसका हाथ मेरे मुँह पर तड़ाक से पड़ा, उसके कङ्गने और बेलहरे की इस ज़ोर से नाक पर चोट लगी कि खून का फुहारा छूटने लगा। सुराही के पानी से अपने आप मुँह धो धुवा कर पलँग पर आ लेटा। मारे बदबू के दिमाग़ फटने लगा। उसने जैसे सालों से नहीं नहाया था या यों कहिये कि उसने रस्मों की पूरी पाबन्दी की थी, कपड़े उबटन हल्दी और पसीने से बेतरह ख़राब हो गये थे। जी पर हज़ारों जब्र करके फिर पलँग के पास गया और आहिस्ते आहिस्ते जगाने लगा। मगर "कुछ ऐसा सोया कि फिर न जागा थके उसे हम जगा जगाकर" इस से भी हारकर मुँह पर पानी की बूँदें टपकाईं।

"ऊँ ऊँ ऊँ (ज़ोर से) के है हो?"

मैं०—"ज़रा आखें तो खोलो, देखो यह कौन खड़ा है।"

वह फिर सो गई। मैं भिन्नाया हुआ तो पहिले ही से

बैठा था। इस दफ़े मैंने हाथ पकड़ के झटका दिया। उफ़! इस क़दर कम्बख्त ने गहने पहिन रक्खे थे कि ज़रा सा उसे हिलाने में मारे झन्झनाहट के घर गूंज उठा। नींद में उस ने दो एक गालियां भी दीं। उसे उठा के बिठाल कर मैं थोड़ी देर जगे रहने के लिये प्रार्थना करने लगा। इस पर उसने किस रूखेपन से कहा कि—"का पर पर लगाए हौ। मैंका नाहीं नीक लागत है। चलो वैसी भागो।" और फिर सो गई।

मैं जल के ख़ाक हो गया। घन्टों के बाद बड़ी मुश्किलों से वह फिर जगी, तो बड़ी खुशामद उशामद कर के मैंने पढ़ने लिखने के बारे में पूछा।

"हमरे घर मेहरउवे नाहीं पढ़त हैं, का उनका नौकरी करे के आय?"

मैं०—"शान्ती ने तुम से कुछ कहा था?"

"कउन शान्ती?"

मैं०—"वही मेरी भाभी, तुम से उन्होंने कुछ पहनने ओढ़ने के बारे में कहा था?"

हम का ओकरे अस पतुरिया होई कि कृष्टानि न जो नेमिन घत जूता ऊता पहिनी। मार नासकाटी के आइके कहत रही, गहनवाँ उतार देव। हाँ काहे न उतार देई। जनो ओकरे बाप के बनवावा होय।"

अरे ज़ालिम, बस! बस! बस! क्यों जले पर निमक छिड़क रही है। मैं दिल ही दिल में रोता रहा। गहने मुझे बेहद तकलीफ़ देने लगे। नाक की चिपटी चिपटी बुलाक़ देखे देखी नहीं जाती थी। बड़ी मिन्नत की कि कम से कम एक आध गहने तो उतार दो।

"जो मइका पहिरे ओढ़े देख के जले, राम करे वैके आँखिन फूट जांय।" यह कह के वह सब गहने उतार उतार कोठे पर से आँगन में फेंकने लगी, और इसके बाद चिग्घार मार के रोना शुरू किया।

* * * *

शादी के सिर्फ़ एक ही महीने बाद पढ़ना छूटा लिखना छूटा। घरबार छूटा माँ बाप छूटे। नया दाना नया पानी न संग न साथी न यार न मददगार। बुरी तक़दीर की तरह बीबी हर दम खोपड़ी पर सवार। लोग कहते हैं कि जोरू की मुहब्बत ऐसी ही अन्धी होती है कि उसमें पड़ कर कुछ सुझाई नहीं देता। लड़के माँ बाप के इहसानों को दम भर में भुला देते हैं। अपने कर्त्तव्य के बन्धन को तोड़ कर जोरू को साथ ले घर से निकल खड़े होते हैं। हाँ निकल खड़े होते हैं। यह मैं भी कहता हूं। मगर मुहब्बत की वजह से नहीं। बीबी के फुसलाने से नहीं। अपनी ख़ुशी से नहीं। बल्कि जब बेचारे घर से ज़बर-दस्ती निकाले जाते हैं तो वे क्या करें। यही घर की औरतें नानी दादी माँ चची वग़ैरह पहिले लड़कों की शादी कर देने के लिये ज़िद पर ज़िद करती हैं। रो रो कर जान देती हैं। आसमान ज़मीन एक कर देती हैं। मगर दुलहिन घर में आते ही लड़कों के कलेजों का ख़ुद ही ख़ून पीने लगती है। वह ज़हर भरी बातें उगलती हैं और हर दम ऐसा कलह मचाती रहती हैं कि घर में फूट करा ही कर दम लेती हैं। ख़ैर मेरा तो हाल ही और था। अगर स्त्री ज़रा तमीज़दार होती तो मुमकिन था कि किसी न किसी तरह से कुछ दिनों तक निभ जाता। मगर यहां तो वह भी नहीं। न तमीज़ और न मुहब्बत न इस करवट चैन और न उस करवट चैन। दिल की

इस तरफ़ भी आग और उस तरफ़ भी आग । और उसपर कलेजे में तानारूपी भालाओं की मार की भरमार दिन रात उफ़ ! न सहा गया । जो ज़हर पहाड़ी बिच्छुओं में नहीं होता, जो ज़हर काले साँप में नहीं होता, उससे सौ गुना ज़्यादा ज़हर अय औरतों तुम्हारी ज़बान में होता है । ज्यों ज्यों ज़हरीला जानवर पुराना पड़ता जाता है त्यों त्यों उसका ज़हर बढ़ता जाता है । वही हाल इधर भी है, बिच्छू बिना दबे डङ्क नहीं मारता । मगर तुम्हारी प्रकृति (ख़ासियत) उल्टी है । ज़रा ज़रा सी बातों में तुम्हारी ज़बान ऐसा डङ्क मारती रहती है कि बस ग़ज़ब है । इसीने मेरी बेफ़िक्री और आराम वो चैन की ज़िन्दगी का अन्त कर डाला, और यों मेरा सर्व्वनाश करके मुझे मुर्दों से भी बत्तर बना दिया । एक घर में कई मर्द रह सकते है मगर अय औरतो जहां तुम एक से दो हुईं तो घर को सही सलामत रखना या उसमें फूट करा कर तबाह करा देना तुम्हारे ही अख़्त्यार है मां बाप मामूं चचा घर के तमाम बुज़ुर्गवार शादी के वक़्त सब कुछ थे । मैं कुछ न था । जब मेरे गले में फांसी डाल दी तब सब दुम झाड़ के अलग होगये ज़िन्दगी भर मुसीबत झेलने के लिये अब मैं ही मैं हूं । अब कोई मुसीबत बटाने के लिये दिखाई नहीं पड़ता । अय ! नवजवानो ! इन बातों पर भी हम लोग अपनी शादी के मामलों में कुछ ज़बान न हिलाने पायें ? ग़ज़ब है अन्धेर है ।

"अब तो जाते हैं बुतक़दे से मीर
फिर मिलेंगे अगर ख़ुदा लाया ।"

स्त्री शिक्षा की अवश्यकता



रतवर्ष में स्त्री शिक्षा का जो अभाव है। जनता से यह बात छिपी नहीं है। इस लेख में, जहां तक हो सकेगा हम गृहस्थ विषयक दृष्टि से स्त्रियों का वर्णन न करके केवल राष्ट्रीय दृष्टि से ही उनके विषय में कुछ कहने का प्रयत्न करेंगे। क्योंकि किसी राष्ट्र को निर्बल बनाने का मुख्य और प्रधान कारण उस राष्ट्र की स्त्री शिक्षा, उनकी आत्मिक और मानसिक उन्नति, पर ही निर्भर है। यह एक मानी हुई बात है। विद्वानों का कथन है :—

"Two things are closely joined together, the education, the training and development of women ; and the greatness of a Nation. When those women were the Indian Mothers, heroes and Rishies were born ; and now out of Child-mothers cowards and social pigmies come forth-Cause and effect ? Still in our power to change".

अर्थात् दो बातों का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है (१) स्त्रियों की शिक्षा। मानसिक, धार्मिक तथा शारीरिक उन्नति और (२) किसी जाति (राष्ट्र) की बड़ाई। जब भारत में योग्य मातायें

थीं तब वे रत्न गर्भा होकर योद्धा और ऋषिरत्न उत्पन्न करती थीं। पर अब मूर्खा बाल-माताओं से प्रायः कायर और कलङ्कित कुपुत्र उत्पन्न होते हैं। कारण और कार्य्य? कारणों को सुधार कर, कार्य्य सिद्ध करना, अब भी हमारे हाथ है।

इस कथन में सत्य की मात्रा कितनी अधिक है इसी को कुछ प्रमाणों सहित सिद्ध करने की हम चेष्टा करेंगे।

यह एक मानी हुई बात है कि जब कभी और जहां कहीं भी राष्ट्र के उन्नति की ओर ध्यान दिया गया है। उस जाति की स्त्री शिक्षा की जड़ पहिले सींची गई है। इङ्गलैण्ड, फ्रांस, रूस और जर्मनी आदि के उद्देश, उनका कर्तव्य पालन और उन्नति हमारे इस कहने की पुष्टि करते हैं।

अन्य राष्ट्रों के इतिहासों के देखने से पता चलता है कि जब तक कोई जाति अथवा राष्ट्र असभ्य रहता है तो इन सामाजिक कुप्रथाओं का होना स्वाभाविक होता है। रवार्टसन महोदय का कहना है कि :—

"In every part of the world one of the general characteristics of the savages is to Despise and Disgrace the female sex."

अर्थात्—भूमण्डल के प्रत्येक भाग में स्त्रियों पर अत्याचार और उनका निरादर करना असभ्यता का मुख्य चिह्न समझा जाता है। वहशी और जङ्गली आदमी ही स्त्री जाति को तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। अस्तु।

पर ज्यों ज्यों समाज और राज व्यवस्था में सुधार होता है वैसे वैसे स्त्रियें भी दासत्व से मुक्त होती जाती हैं और जब वही राष्ट्र उन्नति की ओर तीव्र गति से बढ़ता है तो वे ही स्त्री जाति उनकी सहायक और सच्ची सलाहकार भी होती हैं। सुप्रसिद्ध

विद्वान् अरस्तु (Aristo) का कहना है कि "स्त्रियों की उन्नति या अवनति पर राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है। यूनानी (Greeks) अपनी स्त्रियों को दासी के समान नहीं रखते थे, किन्तु उन्हें राष्ट्र उन्नति का सहायक समझते थे। उनकी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति में दत्तचित रहा करते थे। यही कारण था कि यूनानी बारबेरियन जाति को अपने आधीन कर सके"।

इतिहासाकार ग्रिवन का कहना है कि "रोमन राष्ट्र अपनी स्त्रियों के साथ ग्रीक जाति की अपेक्षा अधिक अच्छा बर्ताव करता था। इसी कारण रोमन राष्ट्र ग्रीस से अधिक बलवान हो गया और ग्रीक को रोम के सामने सिर झुकाना पड़ा"।

पाठकों से यह बात छिपी न होगी कि रोम ने एक छोटे से शहर से बढ़ते बढ़ते सारे संसार पर अपना सिक्का जमा दिया था पर अन्त में हुआ क्या?

सुप्रसिद्ध इतिहासकार टैसिरस का कहना है कि "रोमन जाति के उत्कर्ष के समय रोमन स्त्रियों में पतिव्रत, स्वावलम्बन, स्वार्थ त्याग, धैर्य्य आदि जो अनेक सद्गुण थे वे सब उसकी अवनति के समय नष्ट हो गये थे। इन अच्छे गुणों के स्थान पर, दुराचार, अज्ञान, कलह आदि दुर्गुणों का साम्राज्य स्थापित हो गया था। इसी कारण जर्मन जाति ने रोमन लोगों को दबा डाला। बनों में रहने के समय भी जर्मनों की कुटुम्ब संख्या बहुत अच्छी थी।"

कहने की ज़रूरत नहीं कि महाभारत होने के कुछ ही दिनों पहिले रोम की भांति भारत में भी स्त्रियों के अवनति का, 'श्रीगणेश' आरम्भ हो गया था। कुछ नमूने यह हैं—

(१) कुमारीपन में गङ्गादेवी (वाद को भीष्म की माता का पुत्र विसर्जन (२) अपने सौतेले भाई विचित्रवीर्य्य के विवाह के लिये भीष्म का बलपूर्वक काशी नरेश की पुत्रियों (अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका को हर लाना और उनका अनादर करना (३) धीवर की कुमारी कन्या सत्यवती के साथ महर्षि पाराशर का सम्भोग। वेद व्यास का जन्म और बाद को सत्यवती का राजकुल में व्याह (४) कुन्ती के कुमारीपन में कर्ण का जन्म और नदी में बहाया जाना, इस घटना को छिपाना और फिर राजकुल में विवाह (५) द्रोपदी को पांच पुरुषों की एक साथ ही पत्नी बनना इत्यादि। याद रहे यह कुल बातें तो हैं केवल राज घरानों की। सामान्य प्रजा की क्या दशा रही होगी सो पता नहीं। इन बातों का साक्षी है महाभारत का इतिहास।

हमारे कहने का सारांश केवल इतना ही है कि स्त्रियों ही के उन्नति पर राष्ट्र की उन्नति का दारोमदार है इसका कारण क्या? यह बात हम नीचे लिख रहे हैं। इसके पहिले हम अपने मित्र श्रीयुत गणेश शङ्कर विद्यार्थी। सम्पादक 'प्रताप' के कुछ वाक्य यहां उद्धृत करते हैं जो कि उन्होंने देवी जोन नाम के पुस्तिका के उपक्रमणिका में कहे हैं। उनका कहना है—"...... वे दिन लद गये जब राष्ट्रों के भाग्य का निपटारा केवल रणक्षेत्रों में हुआ। करता था। विविधि क्षेत्रों में राष्ट्रीय असितत्व के दांव लगे हुए हैं। अान्तिम विजय पाने के लिये सभी स्थानों और सभी विभागों में दृढ़ और वीर आत्माओं की संरक्षता की आवश्यकता है। सन्तोष की बात है कि वीर पुरुषों की कमी मिटती जाती है। परन्तु जब तक वीर देवियें आगे नहीं बढ़ेंगी, वीर ललनायें दृढ़ता और धैर्य्य की साक्षात मूर्त्ति बन कर अपने विमल बल से काम करने वालों के मन को संस्कृत और उत्साहित

न करेंगी। जब तक वीर मतायें देश के उमंगों से भरे बच्चों को प्रलोभनों से बचाने और उद्देश सिद्धि के लिये पतिव्रता और त्याग का सन्देश देने का काम करने के लिये आगे नहीं बढ़ेंगी। जब तक वीर भगिनी सत्साहस और सदउद्देश से प्रेरित हो कर भ्राता को जीवन संग्राम—क्षेत्र में जाने के लिए उत्साह प्रदान न करेंगी जब तक वीर माता उस वीर राजपूत माता की भांति जो अपने पुत्र को, कमर में तलवार बांध कर उसे विजय आशीर्वाद देती हुई, रणक्षेत्र भेजती थीं, पुत्र को वर्तमान कठिन मार्ग में पग रखने का आदेश न देगीं और जब तक वीर पत्नी दृढ़ हृदय के साथ उस वीर राजपूतनी की भांति, जिसकी रण में जाते हुए अपने पति की अन्तिम भेंट इन शब्दों के साथ समाप्त होती थी कि "विजय लेकर ढाल लिये हुए या फिर ढाल के पीठ पर लद् कर ही आना" पति को संग्रांम में विजयी बनने के लिये उत्साहित न करेंगी। जब तक वे कठिन समस्यायें जो आज हमारे सामने है, तनिक भी हल न होगीं, देश का कल्याण न होगा और वह उसी समय होगा जब इस भूमि में जोन*सदृश वीर माताओं और वीर देवियों का अवतार हो

---

* स० १४१२ ई० में 'लौरैन' प्रदेश के 'डुमरिम' ग्राम में इस किसान कन्या का जन्म हुआ था। फ्रांस की जनता इसे साक्षात देवी का अवतार समझती है। केवल १६ वर्ष ही की अवस्था में इसने फ्रांस को दासत्व से मुक्त करने का दृढ़ संकल्प धारण कर लिया था तीन बार इसने स्वयं युद्धस्थल में जाकर अपने आधीन सैनिकों को अग्रेज़ों से लड़ाया और विजय प्राप्त की। यह 'जोन आफ़ आर्क' के नाम से विख्यात है। चूंकि देश प्रेम (दासता में जकड़े हुए पराजित राष्ट्र की हैसियत से) के उन्माद में रंगना हमारे गाराङ्ग शासकों के नीति में

जब इस देश के निवासी हम और आप सभी अपनी उन चलती फिरती धरोहरों को जो हमें ललनाओ के रूप में मिली हुई हैं, केवल निर्बल और वेदम बच्चों की जनने की मशीन ही न समझ कर उनको अपने महान उद्देश के समझने और उसके लिये किये जाने वाले त्याग को सराहने, और उसके करने के योग्य बनावें ईश्वर करें वह दिन "भारत में शीघ्र आवें" !

उपरोक्त पंक्तियों से पाठकों ने यह समझ ही लिया होगा कि माता ही पर बच्चों अथवा यों कहिये कि होनहार पुरुषों के जीवन और उनके शिक्षा आदि सद्गुणों का भार अवलम्बित है, जैसी ज़मीन होगी उससे 'उपज' भी वैसा ही तय्यार होगा। माता का गर्भ ही एक ऐसा केन्द्र है जहां से नाना प्रकार के रत्न उत्पन्न होते हैं। लड़के लड़कियों को जैसी शिक्षा बचपने में दी जावेगी। उनका आचरण, उनका रहन सहन भी युवा होने पर ठीक उसी प्रकार का होगा। जैसी सोहबत में वे पलेंगे बड़े होने पर उनके बुद्धि की गति भी उसी लाइन पर चलेगी। उनके स्वास्थ और उनके खान पान का भी भार माताओं ही पर निर्भर है। माता का गर्भ ही वह कीचड़ है जिससे कमल की स्थिति है। माता ही वह वृक्ष है जिससे रङ्ग विरङ्ग के फूल उत्पन्न होते हैं माता ही वह खान है जिससे मणियों की उत्पत्ति

लिखा ही नहीं है। अतएव ३० मई स० १४३१ ई० के सबेरे ६ बजे देवी जोन केवल १६ वर्ष की अवस्था में ज़िन्दा आग में जला दी गई। शहीद का खून रङ्ग लाया। देश प्रेम का पाठ फ्रांस की जनता देवी जोन से पढ़ ही चुकी थी। फिर वही हुआ जो होना था वीर बाला के मृत्यु के ठीक १६ साल बाद स० १४४६ में फ्रांस ने दासता के जूए को उतार कर फेंक दिया। क्या भारत में भी ऐसी देवियों का कभी अवतार होता ?

होती है। माता ही हाथी का वह मस्तक है जहां से गजमुक्ता निकलता है। माता का गर्भ ही वह कीट है जहां से रेशम उपजता है। माता का पेट ही वह नीलाम्बर है जहां से चन्द्रोदय प्राप्त होता है। माता का गर्भ ही परवतों का वह अन्धकारमय गुह्य है जिससे भांति भांति की जड़ी बूटियें निकलती हैं। माता का पेट ही वह बीहड़ जंगल है जहां सहज सलोने मृगछौने पलते हैं। इसी से तो हम कहते हैं कि माता ही पर सन्तान के उन्नति और अवनति का दारोमदार है और राष्ट्र के उद्धार करता हैं वही बच्चे। सोचने की बात है कि यदि वृक्ष की जड़ काट दी जावे तो भला क्या वह कभी पनप सकेगा? नहीं और कदापि नहीं! माता के गर्भ में ही बच्चे शिक्षा पाने लगते हैं इस बात के हम कुछ उदाहरण भी देने को तैयार हैं—

(१) अर्जुन और सुभद्रा से अभिमन्यु का जन्म हुआ था अभिमन्यु जिस समय गर्भ में था एक दिन रात्रि में सभुद्रा का चित्त कुछ उदास था। उस दिन अर्जुन ने उसे प्रसन्न करने की गरज़ से 'चक्रव्यूह' की रचना का और उसके भेदन करने की रीति का वर्णन किया था। महाभारत के युद्ध में कृष्ण, अर्जुन और द्रोणाचार्य को छोड़ कर और किसी को चक्रव्यूह की रचना का भेद मालूम नहीं था। कृष्ण और अर्जुन दोनों ही जयद्रथ को मारने के लिये, हिमालय महादेव के पास 'पशुपति' नाम का बाण लाने को गए हुए थे। ऐसे समय में द्रोणाचार्य ने चतुराई से चक्रव्यूह की रचना करके युधिष्ठिर से कहला भेजा कि या तो व्यूह में प्रवेश करो या कौरव पक्ष को विजय लिख दो। उस सङ्कट के समय अभिमन्यु गर्भवास के समय के संस्कार से सचेत हो उठा और उसने ठीक उसी रीति से चक्रव्यूह में प्रवेश किया जैसा कि उसके पिता अर्जुन ने अपनी

भार्य्या को बतलाया था। इस बात का साक्षी महाभारत का इतिहास है।

(२) सारे योरप में सनसनी फैला देने वाले, और जिसके कोष में 'असम्भव' शब्द ही नहीं था। नैपोलियन बोनापार्ट को कौन नहीं जानता? कहते हैं जिस समय वह गर्भ में था उसकी माता प्लूटार्क के लिखे हुए वीर पुरुषों के जीवन चरित्र तथा ग्रीशियन वीर रस के साहित्य का अध्यन करती थी। वह बड़े तेज़ घोड़े पर सवारी किया करती थी और अपने पति के आधीन सैनिकों पर रानी के समान हुकूमत करती थी। उस उत्तम वीर रसके साहित्य के पठन पाठन का और उससे उत्पन्न हुए उच्च मानसिक विचारों का प्रभाव उसकी गर्भस्थ सन्तान नपोलियन पर पड़ा जिससे कि उसमें अलौकिक शक्तियों का विकास हुआ।

(३) "चार्ल्स किंग्सले" जिस समय गर्भ में था उसकी माता ने अपने हृदय को वैराग्य और धर्म्म की ओर फेरा। वह संसारिक प्रलोभनों से मुक्त होने की चेष्टा करने लगी। उसने नगर का निवास छोड़ कर ग्रामवास स्वीकार किया और वह अपना अधिक समय सृष्टि सौन्दर्य और प्रकृति की मनोहरता को देखने में बिताने लगी। स्मरण रहे कि माता ने जान बूझ कर अपनी गर्भस्थ सन्तान पर प्रभाव डालने के लिये इस तरह चलना आरम्भ किया था। फल यह हुआ कि "किंग्सले" एक महान पुरुष हुआ। सृष्टि सौन्दर्य पर उसने बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा और एक प्रतिष्ठित धर्माध्यक्ष के रूप में बड़ा भारी यश प्राप्त किया।

(४) मेरी विनीशिया नामक एक अमरीकन महिला अपना वृतान्त लिखती हैं :—

"मेरे प्रथम पुत्र के प्रसव के एक मास पहिले, एक घूम घूम कर किताब बेचने वाला आया। उससे मैंने एक पुस्तक ख़रीदी थी। जिससे इच्छानुसार मनःशक्ति द्वारा गुणवान सन्तान उत्पन्न करनेकी रीति लिखी थी। प्रसव का समय निकट होने के कारण मैं अपने पहले पुत्र पर यथेष्ट प्रभाव नहीं डाल सकी। इसीलिये वह साधारण बुद्धि का उत्पन्न हुआ। पर जब दूसरा पुत्र मेरे गर्भ में आया तो मेरी इच्छा हुई कि उसे चित्रकारी में कुशल और प्रवीण बनाऊं। वहां (कमरों के) के चित्रों को प्रेम पूर्वक देखती। सच्चे हृदय से उनकी प्रशंसा करती और उनके बनाने का स्वयं अभ्यास करती इसका फल यह हुआ कि बच्चे में चित्र रचना सम्बन्धी शक्ति ने पूर्णयता विकास पाया। इसके बाद दूसरे पुत्र के जन्म के पीछे तीसरी और चौथी सन्तान भी, गर्भावस्था में मैंने जिस विषय पर अपनी मनः शक्ति लगाया उसी ही उस विषय में मेरी सन्तान योग्य उत्पन्न हुई।

(५) डाक्टर फ़ाऊलर (Dr. Fowler) का कथन है कि वाशिगंटन शहर के एक तरुण दम्पति ने अपनी सन्तान को सुन्दर बनाने की इच्छा से एक सुन्दर बालक का चित्र ख़रीदा। वे दोनों समय समय पर उसे देखा करते थे। यथा समय उन्हें लड़का उत्पन्न हुआ वह ठीक उसी चित्र से मिलता जुलता था।

(६) स्पेन में एक अमीरज़ादी के सोने के कमरे में एक हबशी की तसवीर टंगी थी। उसे वह अकसर देखा करती थी गर्भावस्था में भी उसकी नज़र उस पर पड़ा करती थी। फल यह हुआ कि उसको लड़का भी वैसा ही उत्पन्न हुआ।

Prof. Kalicutt का कहना है कि रोम का एक न्यायाधीश बहुत बदशकल और छोटे क़द का था। इसको पहिला पुत्र भी इसी के समाम बदशकल और छोटे क़द का हुआ। न्यायाधीश

को सुन्दर पुत्र की आकांक्षा थी अतः उसने उस समय के विख्यात डाक्टर नैलन की सम्मति ली। उक्त डाक्टर महोदय ने उसे सलाह दी कि वह अपनी स्त्री के सोने तथा बैठने के कमरों में एक ऐसी शकल की सुन्दर प्रतिमा बना कर रखवा दे कि उसका ध्यान उस प्रतिमा की ओर आकर्षित हुआ करे। उसने ऐसा ही किया। और तब उसको जो सन्तान उत्पन्न हुई वह आशातीत सुन्दर थी।......इत्यादि

ऊपर दिये गये उदाहरणों से यह बात सिद्ध होती है कि माता जिस ढंग का चाहे सन्तान उत्पन्न कर सकती है। अच्छा या बुरा यह उसके आधीन है। तब यहां सवाल यह उठता है कि यदि हमारी बहिनों को उचित शिक्षा (हमरा मतलब अंग्रेज़ी से नहीं है) की ओर विशेष ध्यान न दिया गया ! उनकी विवेक शक्ति ठीक न हुई, उनके मानसिक, शारीरिक और आत्मिक दुःखों की ओर यदि ध्यान न दिया गया तो हमारी सन्तान कैसी उत्पन्न होगी इस बात की कल्पना करना बहुत ही सहल है। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि हमारी भावी सन्तान ही के हाथ में देश के दायमी बहबूदी की बाग डोर होगी ! वे ही हमारे मुल्की जहाज़ के 'नाखुदा' होंगे और उन्हीं पर हमारे देश की उन्नति अथवा अवनति का दारोमदार होगा।

भारत की स्त्रियें प्राचीन काल में कैसी शिक्षा के गोद में पलती थीं। उनके कुछ नमूने हम यहां पाठकों को भेंट कर रहे हैं। जिससे आप से आप यह बात सिद्ध होती है कि किसी राष्ट्र की उन्नति का भार ख़ास तौर से उस राष्ट्र की शिक्षा ही पर निर्भर है।

आज दिन हमारे कुछ भाइयों का ख़याल है कि वैदिक काल में स्त्रियें शिक्षा से वञ्चित रक्खी जाती थीं और वे भी अपढ़

और जाहिल थीं। पर वे भूलते हैं। ऐसा कहना केवल झूठ मात्र है और कहने वालों की जानकारी बहुत ही कम है। जिसकी आखें खुल चुकी हैं, जिसने अपने पूर्वजों के इतिहासों पर दृष्टि डाला है उससे यह बात छिपी नहीं रहती कि, यहां तक कि आज दिन जिन वेद मन्त्रों का हम पाठ करते हैं वे बहुत दर्जे तक ऋषि कन्याओं ही के बनाये हुये हैं। देश तो अब भी वही है पर काल चक्र के प्रभाव से हमारी बहिनों, माताओं और कन्याओं के वे अधिकार छीन लिये गये हैं। वे शूद्रों के नाम से याद की जाती हैं और कहा जाता है कि उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार ही नहीं है।

आपको कान खोल कर समझ लेना चाहिए कि उस महान उन्नति के समय स्त्रियें पुरुषों के बराबर पढ़ी लिखी होती थीं। उनकी योग्यता पुरुषों के समान रहा करती थी और उनकी शिक्षा पुरुषों के समान बड़े ऊँचे दर्जे की हुआ करती थी।

"In that age of splendid achievments and lofty sprituality wo men were equels of men ; trained and cultured and educated to the highest point."*

आज दिन स्त्रियां मानसिक और धार्मिक उन्नति से वञ्चित रक्खी जाती हैं। वे सूत्र नहीं धारण कर सकतीं। उनके लिये सब धार्मिक संस्कार बन्द कर दिये गए हैं। पूर्व काल में बालिकायें उपनयन संस्कार की अधिकारिणी थीं। वे वेद पढ़ सकती थीं और गायत्री जप सकती थीं।

सत्यार्थ विवेक दयानन्द (सनातन धर्म्मी कृत) में एक श्लोक का अर्थ है कि कन्या को भी पुत्र ही की तरह यत्नपूर्वक पालना और पढ़ाना लिखाना चाहिए और प्राचीन मर्यादानुसार

* See Wake up India by Annie Besant.

स्त्रियों का भी उपनयन होता था। उन्हें गायत्री का उपदेश दिया जाता था और वे वेद को भी पढ़ सकती थीं।

गार्गी और अनेक ब्रह्मचारिणी स्त्रियों ने जीवन भर विवाह नहीं किया। विद्या के छान बीन में वे मतवाली थीं। इसी से उनका प्रेम था और यही था उनका उन्माद। उन्हें काफ़ी धर्म शिक्षा भी मिलती थी। केवल पवित्र भावों का संचार हो जाने से देश और मनुष्यमात्र की सेवा के अखाड़े में अपने आपको वे उतार देती थीं। यह उत्तम शिक्षा ही का फल था।

वे स्वतन्त्रता पूर्वक साहित्य तथा विज्ञान पढ़ती थीं। वे वेदों के अध्ययन और मनन में लीन रहा करती थीं। वे विद्या में निपुण होती थीं। इतना ही नहीं आप यह जान कर चौंक पड़ेंगे कि वे राजनीति भी जानती थीं।

महाराणी गान्धारी, राजाओं और श्रेष्ट राजकर्मचारियों की भरी सभा में जहां 'सन्धि' का कठिन प्रस्ताव उपस्थित था कि सन्धि हो या युद्ध? ऐसे गम्भीर राजनैतिक प्रश्न को हल करने के लिये उस विराट सभा में, जिस पर समस्त भारत की 'जय' या 'क्षय' निर्भर थी, इस लिये बुलाई गई थीं कि वे अपने सपुत्र दुर्योधन को इस राजनैतिक विषय पर उपदेश दें और उसे युद्ध करने से रोकें। जिस योग्यता से उन्होंने दुर्योधन को उपदेश दिया था वह आज तक भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अङ्कित है।

"Women, howewer loving self sacrificing and sincere has but little power is the council of men. You can not appeal to her because you do not care to share her feelings in Politics or in the affairs of Country. She is not born ignorant ; you have rather bred her ignorant."

अर्थात्—"स्त्री जाति कितनी भी पतिव्रता, स्वार्थ त्यागनी तथा सत्यवती क्यों न हो परन्तु मनुष्य समाज में उसका सम्मान नहीं है। आप उससे राजनैतिक तथा देश सम्बन्धी कामों में सलाह लेना नहीं चाहते क्योंकि आपको उससे कुछ हार्दिकता नहीं है। वह जन्म से अज्ञान नहीं है। परन्तु आपने उसे शिक्षा न देकर अज्ञान बना रक्खा है।"

हमारे कहने का सारांश यह कि प्राचीन काल में स्त्री शिक्षा का इतना काफ़ी प्रचार था कि जिसकी कल्पना मात्र हम नहीं कर सकते।

बाल ब्रह्मचारिणी गार्गी ने याज्ञवल्कय ऋषि से कैसा अच्छा शास्त्रार्थ किया था। उसने उच्च शिक्षा और गहरी ब्रह्म विद्या के ज्ञान से, अपनी अश्चर्यमय योग्यता से, ऋषिवर याज्ञवल्कय की ज़बान बन्द करके उन्हें परास्त कर दिया था।

मैत्रयी ने गृहस्थाश्रम व्यतीत होने पर मानसिक और धार्मिक योग्यतानुसार विचार कर के अपने पति देवता से ब्रह्मज्ञान के उपदेश के लिये प्रार्थना की और उसे वह ज्ञान दिया गया।

प्राचीन काल में स्त्रियों को युद्ध विद्या की भी उचित शिक्षा दी जाती थी।

इन्द्र की सहायता के लिये अयोध्या के राजा दशरथ जब युद्ध में गये थे तब उनके साथ रानी केकई भी गई थीं और युद्ध भी किया था। एक जगह रथ के पहिये का धुरा टूट गया उस समय कील न मिलने के कारण रानी केकई ने अपनी उङ्गली ही उसमें लगा दी थी।

महाराणी कुन्ती ने युद्ध के समय कहा था 'क्षत्राणियां समर

में लड़ने ही के लिये गर्भ धारण कर पुत्र उत्पन्न करती हैं इस लिये आओ और युद्ध करो।"

शिखण्डी जैसी वीर कन्या का उदाहरण लीजिये जिसने महभारत जैसे भयङ्कर युद्ध में भीष्म, कर्ण और द्रोणाचार्य के सम्मुख संग्राम किया था। इन पुरानी बातों को छोड़ कर अभी सात आठ सौ वर्षों का इतिहास आप उलट कर देखें कि राजपूताने की क्षत्राणियों ने स्वयं सेना की बाग डोर अपने हाथ में लेकर कई बार शत्रुओं के दांत खट्टे किये हैं।

रूस और जापान के युद्ध के समय एक जापानी स्त्री के कुल पुत्र लड़ाई में मारे जाने पर वह रोती हुई पाई गई। लोग उसे दिलासा देने लगे। इस पर उसने लोगों से कहा कि "मैं इस लिये नहीं रोती हूं कि मेरे पुत्र मारे गये बल्कि मुझे रुलाई इस लिये आ रही है कि मेरे और पुत्र नहीं हैं जिन्हें मैं मातृ सेवा के लिये भेंट कर सकूं"। तभी तो जापान एक तुच्छ राष्ट्र, रूस जैसे शक्ति शाली और समय के सिकन्दर राष्ट्र पर विजय प्राप्त कर सका।

भारत में ऐसी ही माताओं की कमी है। पुरुष यदि ऐसे नाज़ुक समय में बुद्धिहीन हो कर स्त्री जाति के शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दे रहे हैं तो हमारी बहिनों और माताओं को चाहिए कि वे स्वयं इन वीर महिलाओं की जीवनियों को आपने सामने रख कर कार्य क्षेत्र में उतर आवें। और अपने अलौकिक बल, तेज और पराक्रम का डंका भारत में बजायें और संसार को दिखा दें कि वे किन माताओं की सन्तान हैं और वे क्या नहीं कर सकतीं? उन्हें इस वीसवीं शतावदी के 'गान्धारी' देवी सरोजनी नायूड की जीवनी और कार्य कुशलता से सबक़ लेना चाहिये। हम इस सम्बन्ध में भारत सपूत आत्म विजयी

सत्याग्रही और समय के नैपोलियन महात्मा गांधी के कुछ विचार यहां दे रहे हैं और हमें आशा है कि हमारी बहिनें महात्मा गांधी के मुख से निकले हुए प्रत्येक शब्दों को हृदय में अङ्कित कर के उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। महात्मा जी का कहना है:—

"स्त्रियों की उन्नति का प्रयत्न स्त्रियों को स्वयं करना चाहिए। दूसरों के तपस्या करने पर जिस प्रकार मोक्ष नहीं मिल सकती। उसी प्रकार पुरुषों के आन्दोलन से स्त्रियों की सच्ची और स्थाई उन्नति नहीं होगी। स्त्रियें की अपनी संस्थायें चलाने के लिये, अपने आन्दोलन करने के लिये पुरुषों की सहायता तो लेनी चाहिए, परन्तु आत्मोन्नति के लिये उनको केवल पुरुषों के प्रयत्नों पर अवलम्बित नहीं रहना चाहिए। इससे हमारा यह तातपर्य्य नहीं है कि पुरुष स्त्रियों की उन्नति कर नहीं सकते अथवा पुरुषों के प्रयत्नों से स्त्रियें की उन्नति बिलकुल नहीं होगी किन्तु यह है कि प्रत्येक व्यक्ति व समाज की सच्ची और स्थाई उन्नतावस्था उस व्यक्ति और सदस्यें के स्वावलम्बनयुक्त और निज समर्थ से होने वाले प्रयत्नें से ही प्राप्त हो सकती है। यह सिद्धान्त कभी दृष्टि की ओट नहीं होना चाहिए। स्त्रियें की उन्नति के लिये इस समय पुरुषों की सहायता से और उन्हीं के निरीक्षण में जो संस्थायें चल रही हैं अथवा जो आन्दोलन हो रहे हैं उनकी कार्य्य-पद्धति की नीति ही यही होनी चाहिये कि अन्त में उन संस्थाओं और आन्दोलनें का कार्य सर्वथा स्त्रियें के ही हाथ में आ जावे। स्त्रियें की कार्य्य-क्षमता बढ़नी चाहिये। अपनी आवश्यकताएं जितनी अच्छे प्रकार स्वयं स्त्रियें को ज्ञात हो सकती हैं उतनी भली

भांति पुरुषों को नहीं। स्त्री समाज में स्वयं स्त्रियां ही जितनी उत्तमता पूर्वक कार्य्य कर सकती हैं, पुरुष नहीं कर सकते।"

'मैं स्त्री और पुरुष दोनों ही वर्ग से हिल मिल कर रहता हूं और अब तक मेरा ऐसा अनुभव है कि स्त्री समुदाय की उन्नति करने के विषय में स्त्रियों की सहायता के बिना कोई कार्य्य नहीं चल सकता।

मेरा मत है जब तक भारतवर्ष में स्त्रियों पर रत्ती पर भी अन्याय बना रहेगा, अथवा उनको, उनके योग्य अधिकार पूर्णतः उपभोग करने को नहीं मिलेंगे, तब तक भारत का सच्चा उद्धार नहीं हो सकता। हमारा कर्त्तव्य है कि हम स्त्रियों को वह अवसर दें कि वे फिर अपने में पहिले की भांति सीता सावित्री और दमयन्ती जैसी सती देवियों को उत्पन्न कर सकें। परन्तु यह बात अवश्य है कि अभी उनके समान बहुत थोड़ी और कभी कभी स्त्रियां उत्पन्न होंगी। इस लिये हमें यह देखना चाहिये कि सर्वसाधारण स्त्रियां क्या करें? जितनी स्त्रियों को उनकी वर्तमान स्थिति का ज्ञान कराया जा सके, उतनी स्त्रियों को वह कराते रहना चाहिये, यह पहिला काम है। यह कार्य्य लिखने पढ़ने की शिक्षा द्वारा ही कराया जा सकता है। यह भ्रम है। इस प्रकार तो न जानें इस कार्य्य सिद्धि में कितना समय लगेगा? उतना समय लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है—यह मुझे अनुभव द्वारा पूर्ण विश्वास के साथ ज्ञात होने लगा है। लिखने पढ़ने की शिक्षा चाहे (प्रथम) न हो, तो भी इस शिक्षा का स्त्रियों में बड़े परिणाम पर प्रचार करने की मार्ग-प्रतीक्षा किये बिना ही स्त्रियों को बहुत शीघ्र, अभी अभी उनकी अवनति का ज्ञान कराया जा सकता है।

एक बार जब मैं विहार प्रान्त में था। मैं वहां बहुत सी

कुलीन स्त्रियों से मिला, वे सब पर्दा करने वाली थीं। परन्तु जैसे बहिन भाइयों में पर्दा नहीं होता, वैसे ही वे मुझसे भी पर्दा न करती थीं फिर भी उनसे मिलने के लिये मुझे एक कोठरी में जाना पड़ा था*। वहां उनसे मैंने विनोद पूर्वक कहा—चलो

---

* इसी बिहार प्रान्त के गेहुंआ, ज़िला आरा का परदे के विषय में एक बड़ी ही मज़ेदार बात 'देश दर्शन' में लिखी है। उसका कहना है:—

"बाबू गुलाब सिंह १८ गांव के ज़िमिदार हैं। आपके घर में परदे का बड़ा कड़ा रिवाज है। जो बहू या बेटी जितने ही कठिन परदे में रहे, उसका उतना ही नाम है। उसकी उतनी ही इज्ज़त है। यहां तक कि इस गांव का बड़प्पन और ठकुराई उसके घर के परदे के मुताबिक़ आंकी जाती है न कि धन या विद्या से ईश्वर की दया से बाबू गुलाब सिंह की इज्ज़त गांव में सब से अधिक है। आपके घर यह रिवाज है कि बहुओं को न कोई फ़रागत शौच जाते देखे, न खाते और नहाते, और कब तक? जब तक कि वे स्वयं घर की मालकिन न हो जायें—उनकी सास का परलोकवास न हो जाये।

बूढ़ी सास आदि के आंगन में धूप लेने आने के पहिले ही बहुओं को नित्य के शौचादि कर्म्म से निपट कर अपनी अपनी कोठरियों में बन्द हो जाना चाहिए। खाने के समय या और दूसरे ज़रूरत के वक़्त मालकिन हट जातीं हैं। तब कहीं बहुयें खा पीकर जल्दी से अपने कमरे में भाग जाती हैं इसके बाद, दिन रात में जो कुछ उन्हें करना हो अपनी कोठरी में करें! हर कोठरी में दो तीन पीकदान चिलमची रक्खी रहती हैं और एक एक बहू की ख़िदमत में दो दो लौंडियां रात दिन

बाहर चलें, जहां सब पुरुष हैं, हम भी वहीं बैठें।" इस पर उन देवियों ने उत्तर दिया।

"हम लोग प्रसन्नता पूर्वक वहां चलने के लिये तैयार हैं, परन्तु व्यवहार के अनुसार हमें वैसा करने की आज्ञा मिलना चाहिये। हमको यह पर्दा बिल्कुल पसन्द नहीं है, आप इस असुविधा को दूर करें।"

इन शब्दों में जितनी हृदय-द्रावकता है, उतना ही उनमें मेरे उपर्युक्त कथन का समर्थन भी। इन स्त्रियों को पढ़ना लिखना नहीं आता था, तो भी अपनी दशा का बोध उनको हो चुका था। उन्होंने मेरी सहायता मांगी सो ठीक ही था, परन्तु मेरी इच्छा यह है कि वे स्वयं ही अपनी परवशता का निवारण करें और

हाज़िर रहती हैं। पर न मालूम क्या, न तो बहुओं का स्वास्थ अच्छा रहता है और न शहर की लड़कियां वहां आकर जीती हैं। बड़े भाई बाबू ब्रज कुमार सिंह के चार व्याह हो चुके, उनमें से तीन बहुओं का अन्त हो गया। अभी आप की आयू कुल ३० वर्ष की होगी। (यह पुस्तक १९२१ में लिखी गई है और हम इसे उद्धृत कर रहे हैं १९२२ में शायद इन ४—५ वर्षों में बाबू साहब के दो एक और व्याह हो चुके हों) बाबू गुलाब सिंह की स्त्री जब तक गेहुआं में रहती हैं बीमार ही रहती हैं और यदि वह साल भर में कम से कम चार महीने अपने चचा इन्जीनियर साहब के साथ कैम्प में न रहने पावे तो उसका अन्त ही हो जाय। इस लगातार बीमारी और मृत्यु का कारण यह बताया जाता है कि समीपवासी हरसू ब्रह्म का शाप है कि इस गांव के ठाकुर की बहू बेटियां सुखी न रहें…… पाठक यह वृतान्त पढ़ कर हसेंगे पर अपने घर की तो कहिए?

"उनमें वह शक्ति विद्यमान है"—यह भी उन्होंने स्वीकार किया! मुझे आशा हो रही है कि इन स्त्रियों का पर्दा शीघ्र ही दूर होगा और उन्हें स्वाधीनता पूर्वक संचार करने को मिलेगा। साधारणतः अशिक्षित समझी जाने वाली नारियां वहां उत्कृष्ट रीति से समाज सेवा के कार्य्य कर रही हैं। उन्हें स्वयं जो अधिकार उपभोग करने को मिलते हैं, उनका प्रेम वे अपनी अन्य बहिनों से उत्पन्न कर रही हैं।

स्त्री, पुरुष की सहचरिणी है, पुरुष के समान उसके भी मन है, पुरुषों के सब व्यवहारों का सूक्ष्मता पूर्वक ज्ञान कर लेने का पूर्ण अधिकार उसे है। जितनी स्वधीनता पुरुषों को है, उतनी ही स्वाधीनता के उपभोग करने का उसे अधिकार है। पुरुष जैसे अपने कार्य्यक्षेत्र में बड़ा है वैसे ही स्त्री भी अपने कार्य्य क्षेत्र में बड़ी है ऐसी स्थिति स्वभावित ही होनी चाहिये। स्त्रियों और पुरुषों की योग्यता में जो अन्तर दिखलाई देता है वह कुछ पढ़ने लिखने के ज्ञान के कारण ही नहीं हुआ। बिल्कुल जड़ मूढ़ पुरुष भी विषय रूढ़ि की प्रबलता के कारण ऐसे अधिकार स्त्रियों पर चलाते हैं, जो उन्हें बिल्कुल शोभा नहीं देते, और न उनकी योग्यता ही वैसी है। स्त्रियों की ऐसी दशा हो रही है और इसी कारण हमारे प्रयत्न सफल नहीं होते हैं।

जिन स्त्रियों को अपनी अवनतिका ज्ञान होकर उन्नति के मार्ग ज्ञात हो चुके हैं, उनसे मेरी यह प्रार्थना है कि यह ज्ञान वे अपनी उन बहिनों में उत्पन्न करें; जिनमें वह अभी नहीं हुआ है। जो कुछ अवकाश का समय उन्हें मिले, उसका उपयोग करके अपनी पिछड़ी बहिनों में जा जा कर उन्हें वे ज्ञान प्रदान करें, जिन्हें वे स्वयं जानती हैं। जो स्त्रियां पुरुषों के धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलन में सम्मलित होती हैं उनका

वृत्तान्त उन्हें बतावें। जिनको बाल संगोपन के विषय में अच्छी जानकारी है, वे उसका प्रचार अज्ञान स्त्रियों के समाज में करें। स्वच्छ हवा, स्वच्छ जल, साधारण और स्वच्छ भोजन और व्यायाम आदि के लाभ जिनको ज्ञात हों, वे अपनी अन्य बहिनों को समझावें। इस प्रकार कार्य्य करने से स्वयं उनकी उन्नति होगी और उनके द्वारा दूसरों की भी उन्नति हो सकेगी।

निस्सन्देह ऐसे कार्य्य बिना पढ़े लिखे हो सकेंगे तो, परन्तु अक्षर ज्ञान बिना भी कार्य्य नहीं चलेगा, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। अक्षर ज्ञान से बुद्धि का संस्कार होता है उसकी तीव्रता बढ़ती है और परमार्थिक सामर्थ्य भी खूब बढ़ती है। लिखने पढ़ने की शिक्षा को सर्वोच्च स्थान मैंने कभी नहीं दिया, तो भी उसके महत्व समझाने के लिये मैं प्रयत्न कर रहा हूं। समाज के व्यक्तिगत कारण से जो अधिकार स्त्रियों को प्राप्त हैं, उन्हें छीन लेने के लिये यह कारण उपस्थित नहीं करना चाहिये कि उनमें शिक्षा का अभाव है। यह बात अवश्य है कि उन अधिकारों को उचित रीति से बजा लाने के लिये, उनका मार्ग प्रशस्त करने के लिये और उनका प्रचार करने के लिये शिक्षा की आवश्यकता है। विद्या के बिना मनुष्यों को आत्मज्ञान भी न मिल सकेगा। सद्ग्रन्थों के पढ़ने से निर्दोष आनन्द प्राप्त होता है और साहित्य में ऐसे आनन्द का विस्तृत भण्डार भरा पड़ा है। उसे लूटने के लिये शिक्षा की आवश्यकता है। यह कहना कि 'विद्या विहीन मनुष्य पशु समान है' अतिशयोक्ति नहीं है, वरन् वास्तविक दशा का यह यथोचित चित्र ही है। अवश्य ही जैसे पुरुषों को, वैसे ही स्त्रियां को, भी शिक्षा मिलनी चाहिये।

परन्तु यह नहीं कि जो शिक्षा पुरुषों को दी जाती है, वही उन्हें भी दी जावे। मैं समझता हूं, इस समय देश में सर्कार

द्वारा लोगों को जो शिक्षा दी जाती है, वह अधिकांश में अन्य मार्गीय और हानिकारक है, अवश्य ही यह शिक्षा इस देश के स्त्री पुरुष दोनों के लिये त्याज्य हैं। चाहे इसके दोष दूर भी कर दिये जांय, तो भी यह शिक्षा स्त्रियों के लिये योग्य नहीं है। स्त्रियों और पुरुषों का अधिकार एक है परन्तु वे दोनों समान नहीं हैं। उनके कार्य्य एक दूसरे के पृथक हैं, वे परस्पर आधारभूत हैं, और इतने परस्परावलम्बी हैं कि एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व ही उत्पन्न नहीं हो सकता। स्त्री और पुरुष दोनों में से किसी के भी स्थानभ्रष्ट हो जाने से दोनों का ही नाश हो जाता है। ऊपर जिस वास्तविक दशा का उल्लेख किया है यह सिद्धान्त उसी से निकलता है। अतः स्त्री शिक्षा का क्रम निश्चत करते हुए उक्त बात सदा और अवश्य ध्यान में रखना चाहिये।

यह विचार शिक्षा के विषय में हुआ, परन्तु इतने ही से यह न समझ लेना चाहिये कि छोटी छोटी बालिकाओं का विवाह होना बन्द हो जायगा, अथवा स्त्रियों को उनके स्वाभाविक और योग्य अधिकार प्राप्त हो जांयगे। लड़की का जहाँ विवाह हुआ कि फिर उसे पाठशाला का दर्शन नहीं होता। अच्छा एक बार लड़की का विवाह बालपन में कर देने का पातक उसके मां बाप ने किया, परन्तु फिर भी वे अपनी लड़की को अथवा उसके मन को अन्य किसी प्रकार से सुसंस्कृत करने में बिल्कुल असमर्थ रहते हैं। जो पुरुष बालिका से विवाह करता है, वह परोपकार भाव से वैसे नहीं करता, किन्तु प्रायः विषयासक्ति ही के कारण वैसे करता है। इन बालिकाओं को बचाने वाला कौन है ? इस प्रश्न का उत्तर अधिकांश में सम्मविष्ट है और वह यही है कि—"इनको बचाने वाला संसार में पुरुष के अतिरिक्त

और कोई नहीं है"। बालिका से जिसने विवाह किया है, उस पुरुष को उसकी स्त्री समझा सकेगी, यह लगभग असम्भव ही है। अवश्य यह विकट सुधार कार्य्य समझदार पुरुषों को ही करना चाहिये। मुझसे हो सकेगा तो मैं विवाहित-बालकाओं की गणना का पत्रक तयार करूँगा, उन वालिकाओं के शुभ-चिन्तकों को ढूंढ़ निकालूंगा और मित्रों के द्वारा अथवा धार्मिक वा अन्य जो उपाय मुझे दिखाई देंगे, उनका उपभोग करके उन बालिकाओं के पतियों से कहूंगा—"तुमने अजान से बाल-विवाह का पाप किया है, तथापि अब भी जब तक तुम्हारी पत्नी प्रौढ़ावस्था को प्राप्त न हो जाय और जब तक उसे ज्ञान प्राप्त न हो जाय, तब तक तुम शुद्ध ब्रह्मचर्य्य का पालन करके स्वयं अथवा दूसरे के द्वारा उसे सुशिक्षिता करो और मातृ-पदवी तथा वालसगोपन करने की योग्यता उसको प्राप्त कराओ। यह काम जब तक तुम नहीं करोगे, तब तक बाल विवाह के पातक से तुम कदापि मुक्त नहीं हो सकोगे।"

अमरीका के भाग्य का सूर्य्य आज दिन संसार की आंखों में चकाचौंध पैदा कर रहा है। अमरीका की स्त्रियों के उदाहरण को ज़रा आप भी अपने आखों के सामने रखिये और देखिये कि वहां कुल तीन क्रोड़ स्त्रिये हैं उनमें ५३,००००० स्त्रियें स्वयं अपनी जीविका कमा लेती हैं। ये स्त्रियें अपनी जीविका के लिये कौन कौन काम करती हैं उसकी संख्या इस प्रकार 'ज्योति' में प्रकाशित हुई है:—

अध्यापिकांये,	...	...	३,२७,०००
डाक्टर	..	...	७,३९९
गान विद्या विशारदा	...	...	११,००३
आलेख्य विशारदा	...	...	५,९८४

सम्पादिका तथा सम्वाद दातायें	२,१६३
सर्कारी कर्मचारियां	६,०००
भवन निर्माता	१,०००
उपदेशिकायें	३,४०५
गृह सेविकायें	१२,४३,०००
रोगी की सेवा करने वालियें	१०,००००
होटलों की स्वामिनियाँ	१४७०००
आशरम प्रचालिकायें	५६४८५
धोबिने	३,२५००
वीमा कम्पनियों की एजन्ट	१०००
गणिकायें (गाने वालियां)	७४,०००
दूकानो की गुमास्ता टाइपिस्ट	१,४६,०००
तार बाबू	२२,०००
दूकानदार	२४,०००
बड़ी सौदागर	२६१
भ्रमण कर के वस्तु बेचने वाली	४६६
साहूकार	४६३
दर्जिन	१४६०००
कपड़े के कारखाने में कार्य करने वाली	१,२००००
रेशम का काम करने वाली	३२,०००
चुरुट बनाने वाली	१,४३०००
कपड़ों को काटने वाली	१३,५४,०००
बज़ाज़	८६,०००
जिल्द साज़	१५,०००
यन्त्रालयों में कार्य करने वाली	१३,०००
सन्दूक बनाने वाली	७७,०००

जूते बनाने वाली, ३६,०००

जहां तक हमारा ख़याल है स्त्री शिक्षा का महत्व और उसके अभाव के कारण जो हानियें देश को हो रही हैं, इसके बारे में हम काफ़ी तौर से कह चुके हैं, पर हमारी बहुत सी बहिनें ऐसी भी हैं जिनकी अवस्था ज़्यादा हो गई है और जो यह प्रश्न कर सकती हैं कि आख़िर हम क्या करें? उन बहिनों के लिये और उन बहिनों के लिये भी जो ऊपर कहे गये और महात्मा गांधी के बतलाये हुए सब ही काम करने से असमर्थ हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे स्वदेशी कपड़े और मोज़े आदि तैयार करने का प्रयत्न करें। चरख़ा कातना कोई ऐसा काम नहीं है कि साधारण बुद्धि वाली बहिनें भी न कर सकती हों। महात्मा गांधी ने अपने 'यङ्ग इण्डिया' नामक पत्र में लिखा है कि:—जब तक भारतीय स्त्रियां प्रत्येक घर में, नगर नगर में चरख़ा कातने के व्योहार को न प्रचलित करेंगी। तब तक भारत का उद्धार नहीं हो सकता। कारण चरख़े का प्रचार हमारी आर्थिक स्थिति का सुधारक तथा आत्मिक उन्नति में सहायक होगा। इससे हम चाहते हैं कि हमारी बहिनें इस सुअवसर को न खोकर चरख़े का प्रचार अधिक प्रमाण में करके जातीय कार्य में हाथ डालेंगी।

माननीय महात्मा जी का कथन है कि हारमोनियम आदि बाजाओं से भी चरख़े का स्वर मधुर है। वे कहते हैं कि स्त्रियों के पास इतना अधिक समय रहता है कि इस कार्य्य में वे सहज ही सफलार्थ हो सकती हैं।

क्या हमारी बहिनें इस ओर ध्यान देंगी?

❀ इति ❀

पं० रामप्रसाद वाजपेयी के प्रबन्ध से कृष्ण प्रेस, प्रयाग में छपा।

"चाँद" कार्यालय
की
प्रकाशित पुस्तकें

१—बेदख़ली और बेगार से बचने का उपाय (अप्राप्त)	-)
२—गो रक्षा का सरल उपाय	-)
३—म० गांधी के उपदेश	-)
४—अदालतों की पोल	-)
५—राष्ट्रीय गान	-)
६—असहयोग रहस्य	॥)
७—हम असहयोग क्यों करें ?	॥)
८—समाज दर्शन	१।)
९—राष्ट्रीय गान (बड़ा)	।)

स्थाई ग्राहकों को यह कुल पुस्तकें पौने मूल्य में दी जाती हैं और अन्य सब प्रकार की हिन्दी पुस्तकों पर एक आना फ़ी रुपया कमीशन दिया जाता है।

आठ आने प्रवेश फ़ी भेज कर शीघ्र ही स्थाई ग्राहक बनिए।

मैनेजर—
"चाँद" कार्यालय,
इलाहाबाद।

पुस्तक	मूल्य
पुष्पवती	=)
पूर्त्ति प्रमोद	-)
प्रवीन पथिक	१)
प्रभात सुन्दरी	।।।)
प्रेम फुलवारी	=)
प्रोफ़ेसर भोंदू	=)
बसन्तलता	।।।)
बद्रिका आश्रय यात्रा	।=)
बलिदान	१)
बनबिहङ्गनी	।)
बाज़ीराव पेशवा	।।।)
वीरेन्द्र वीर	२)
ब्रह्मज्ञान शास्त्र	२)
बारिधनाद बध	≡)
विचित्र खून	।-)
वीर बालिका	।=)
महारानी पद्मावती	।।)
मदालसा	।-)
मोतियों का ख़ज़ाना (१४ भाग)	७।।)
विक्रमादित्य	।)
मीराबाई	≡)
मेम और साहब	≡)
रणवीर	४।=)
रामरखा का खून	=)
रामकृष्ण देव	।-)
रामेश्वर यात्रा	।=)
राधा सुधा शतक	≡)
ललना बुद्धि प्रकशिनी	।=)
लैली मजनू	=)
श्यामा	=)
शौचीय दर्पण	।)
शृंगार तिलक	-)
शृङ्गारदान	≡)
साहसी डाकू	१।)
सुर सुन्दरी	१)
हम्मीर हट्ट	।)
हृदय कण्टक	।)
भारत की सती स्त्रियां	।।।)
आदर्श दम्पति	।।=)
गृहणी कर्तव्य	१।।)
प्रसूति शास्त्र	३)
मानव संतति शास्त्र	१)
शैव्या	।)
गर्भ रक्षा विधान	।।=)
सरल पत्र बोध	।)
सावित्री सत्यवाद (सचित्र और सजिल्द)	२)
नल दमयन्ती	२)
चिन्ता	२)

पता :—सञ्चालिका, "चाँद" कार्यालय, इलाहाबाद ।

सीता	३)
द्रोपदी सचित्र और सजिल्द	२॥)
शकुन्तला सचित्र और सजिल्द	२)
पार्वती	२)
मंझली बहू	।)
इन्दिरा	॥।)
स्त्रियों की पराधीनता	१॥)
अनुताप	।)
अनङ्गपाल	।-)
अर्थ में अनर्थ	१॥=)
अभागे का भाग्य	२॥)
अद्भुत भूत	।)
अनेकार्थ नाम माला	।)
उपन्यास कुसुम	१)
काशी विश्वेश्वर रहस्य	=)
कान्ति माला	-)
क़िले की रानी	॥।)
कुमारी रत्न गर्भा	।=)
कुसुम कुमारी	१।)
खून निश्चित चोरी	॥।)
खूनी कलाई	॥)
खोई हुई दुलहिन	=)
गुप्त गोदना	॥)
पुष्पलता	१)
चौबे का चिट्ठा	॥।=)
पाषाणी	॥।)
ब्याही बहू	।)॥
बूढ़े का ब्याह	।=)
दिया तेल अंधेरा	-)॥
पिता के उपदेश	=)
प्रायश्चित	।)
शान्ति कुटीर	॥।=)
सीता	॥-)
शकुन्तला नाटक (इण्डियन प्रेस	१)
पतिव्रता गांधारी	॥।)
गुलाब में कांटा	१॥।)
शाही लकड़हारा	१।)
धोखे की टट्टी	॥)
पार्वती यशोदा	॥)
समाज	१)
समाज दर्शन	२।)
आदर्श महिला (सचित्र)	२)
षोड़शी	१।)
अन्नपूर्णा का मन्दिर	१)
पतिव्रता	१
माधवी कङ्कण	॥।)
बन कुसुम	।)
तारा	१)

पता :—सञ्चालिका, "चाँद" कार्यालय, इलाहाबाद ।

असहयोग रहस्य	॥)
हम असहयोग क्यों करें ?	॥)
सौभाग्यवती	१)
पाकप्रकाश	१)
लक्ष्मी बहू	॥=)
प्रेमलता	॥=)
कन्या कौमुदी	१॥)
दयावती	॥।)
नारी स्वास्थ रक्षक	१)
सती लक्ष्मी	१)
भारतीय आत्म त्याग	॥।=)
दमयन्ती चरित	≡)॥
महिला मनोरमा	॥=)
भ्रात्र द्वितिया	॥)
अबलोन्नति पद्य माला	।)
सप्त सरोज	॥)
प्रेम पूर्णिमा (सजिल्द)	२)
लोक रहस्य	॥=)
सेवा सदन (सजिल्द)	२॥)
आरोग्य साधन (म० गांधी)	।=)
देशोद्धार	१)
विधवा प्रार्थना	।-)
विधवा कर्तव्य	॥)
देवी जोन	।=)
भारत भारती	१)
जयद्रथ बध	॥)
बच्चों के सुधारने के उपाय	॥)
आंख की किरकिरी	१॥=)
नारी नीति	॥=)
कनक रेखा	॥।)
फूलों का गुच्छा	॥-)
अब्राहम लिङ्कन	॥=)
स्वाधीनता	२)
छत्रसाल	१॥)
राष्ट्रीय गान	-)
स्त्रियों का महल	≡)
हिन्दी महाभारत पृष्ठ संख्या ४५०	१।)
जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करने के उपाय	१)
अनुचरी या सहचरी	॥।)
कविता विनोद	≡)
रामायण रहस्य	≡)
गांधी जी कौन हैं ?	॥-)
महापुरुष गांधी और उनके कार्य्य	।=)
उन्नति का मूल मंत्र	।-)
भारत बीणा	।-)
उपदेश मन्जरी	।)
शब्द रूपावली	≡)

पता :—सञ्चालिका, "चाँद" कार्यालय, इलाहाबाद ।

पौराणिक उपाख्यान माला, प्रथम खण्ड ॥=)
पौराणिक उपाख्यान माला, द्वितीय खण्ड ॥=)
हिन्दू तीर्थ ॥।)
संक्षिप्त मार्कण्डेय पुराण उत्तरार्द्ध ।-)
हिन्दी महाभारत जिल्द दार (सचित्र) अठारहों पर्व सहित १।)
भारतीय उपाख्यान माला (सचित्र) जिल्ददार १।)
पौराणिक उपाख्यान माला सम्पूर्ण जिल्ददार १।)
राबिन्सन क्रूसो (सचित्र) १)
हिन्दी पद्य-संग्रह ॥=)
शब्दार्थ पारिजात (कोष) ३)
श्रीकृष्ण कथा (सचित्र) १)
श्रीराम कथा (सचित्र) १)
आदर्श महिलाएँ, प्रथमभाग ॥=)
आदर्श महिलाएँ, दूसरा भाग ॥=)
सावित्री सत्यवान् ॥)
सीताराम ॥=)
शैव्या हरिश्चन्द्र ॥)
लावण्य और अनङ्ग ।)
हिन्दी शिक्षा ।=)
साहित्य विटप ।)
हिन्दी पत्र शिक्षा =)
साहित्य सरोज ॥=)
प्रबन्ध रचना शैली ॥=)
हिन्दी गुटका कोष १।)
सरल हिन्दी व्याकरण ।-)
हिन्दी बाल-बोध, प्रथम भाग =)
हिन्दी बाल-बोध, दूसरा भाग =)
हिन्दी बाल-बोध, तीसरा भाग =)
हिन्दी बाल-बोध, चौथा भाग ।)
हिन्दी बाल-बोध, पाँचवाँ भाग ।-)
कन्या बोधिनी, पहिला भाग =)॥
कन्या बोधनी, दूसरा भाग =)॥
कन्या बोधिनी, तीसरा भाग ।)
" " चौथा भाग ।=)



पता :—सञ्चालिका, "चाँद" कार्यालय, इलाहाबाद ।

लाला सीताराम, बी० ए०, रचित ग्रन्थ

और शेक्सपियर के नाटकों का स्वतन्त्र भाषानुवाद।

पुस्तक	मूल्य
भूल भुलैंया	।-)
मनमोहन का जाल	।-)
जङ्गल में मङ्गल	।-)
हैमलेट	।=)
राजा लियर	।=)
राजा रिचर्ड	।=)
बगुला भगत	।=)
अपनी अपनी रुचि	॥)
रघुवंश भाषा	॥)
कुमार संभव भाषा	=)॥
मेघदूत भाषा	≡)
ऋतुसंहार भाषा	-)
महावीर-चरित भाषा	।=)
मालती-माधव भाषा	।=)
नागानन्द भाषा	।)
मालविकाग्निमित्र भाषा	।)
मृच्छकटिक भाषा	॥=)
सावित्री	)॥।
नई राजनीति अर्थात् हितोपदेश भाषा, पहिला भाग	।-)
नई राजनीनि अर्थात् हितोपदेश भाषा, दूसरा भाग	।)
उत्तर रामचरित भाषा	।=)
शेक्सपियर का गाथा (जयविजय नारायण सिंह कृत)	१॥)
विद्यार्थी विलोचन (जयविजय नारायण सिंह कृत)	१।)
प्रेमसागर	॥)
हिन्दी आख्योपन्यास सम्पूर्ण जिल्ददार	१।)
पाक विद्या (पं० मणीराम शर्म्मा कृत	॥)
भारत के प्रसिद्ध पुरुष (पं० मन्नन द्विवेदी कृत)	।=)
आर्य ललना (पं० मन्नन द्विवेदी कृत)	।)
आत्मोत्कर्ष (राधामोहन गोकुल जी कृत)	।)
बैताल पच्चीसी	।)
सिंहासन बत्तीसी	।=)
सन्ध्या दर्पण (परिडत देवीदत्त ज्योतिर्विद कृत)	१॥)

पता :—सञ्चालिका, "चाँद" कार्यालय, इलाहाबाद।

अवश्यक सूचनाएं ।

(१) जो पुस्तकें सूचीपत्र में दी गई हैं इनके अलावा और सब प्रकार की पुस्तकें भी हमारे यहां से प्राप्त हो सकती हैं।

(२) दस रुपये के ऊपर मूल्य की पुस्तकें तभी भेजी जावेंगी जब कुल अथवा कुछ मूल्य पेशगी भेजा जावेगा, अन्यथा नहीं।

(३) स्थाई ग्राहकों को कुल पुस्तकों पर आगे से, एक आना फ़ी रुपया कमीशन दिया जावेगा।

(४) एक रुपये से कम की पुस्तकें वी० पी० द्वारा कदापि न भेजी जावेंगी।

(५) स्थाई ग्राहकों को ॥) प्रवेश फ़ी पेशगी मनिआर्डर द्वारा भेजना चाहिए—

(६) स्थाई ग्राहकों को हमारे यहां के प्रकाशित कुल ग्रंथ हमेशा पौने मूल्य में दिए जाते हैं। वे चाहे जितनी प्रतियां और चाहे जितनी बार पौने मूल्य में मंगा सकते हैं।

मैनेजर—"चाँद" कार्यालय,